भालू

विलियम फॉल्कनर

हिंदी: सूर्यकुमार जोशी
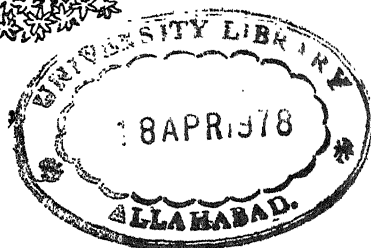
भालू
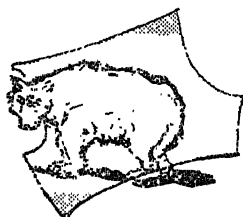
विलियम फॉकनर

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६

अनुवादक : सूर्यकुमार जोशी

मूल्य	:	दो रुपए (२·००)
प्रथम संस्करण	:	जून, १९५९
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	:	युगान्तर प्रेस, दिल्ली

विलियम फॉकनर | परिचय

संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी भाग के एक छोटे-से कस्बे में रहने वाला विलियम फॉकनर, अपनी इच्छा के विरुद्ध, विश्वविख्यात हो गया है। वह बाहर की दुनिया में नहीं आना चाहता था। उसके अपने लिए 'अपना दक्षिण' काफी था जो कि उसे बहुत प्रिय है। प्रथम महायुद्ध में हवाई फौज के साथ रहकर और तदनन्तर कुछ समय के लिए एक समाचारपत्र में काम करने के बाद वह सदा से लिए घर लौट आया। तब से वह अपने देश की नदियों और घाटियों का चित्रांकन तथा साथ ही अपने इतिहास और संस्कृति के कुछ पहलुओं की आलोचना में व्यस्त रहा है। उसे दुःख है कि उत्तर की व्यापारी सभ्यता ने दक्षिण में भ्रष्टाचार को जन्म दिया। फॉकनर के पात्र बार-बार गृहयुद्ध का उल्लेख करते हैं जो कि दक्षिण के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। वस्तुतः फॉकनर दक्षिण का लेखक है। उसने अपने देश की आत्मा जानी है। परन्तु अन्य महान् लेखकों की भांति फॉकनर भी अपने देश के बारे में लिखते हुए समूचे संसार को अपनी परिधि में ले लेता है। उसका देश विश्व का एक सूक्ष्म रूप बन जाता है। उसके पात्र दुःख-दर्द, सुख और साहस की विश्वजनीन भावनाएं व्यक्त करते हैं। मूलतः वह व्यक्तिगत मनुष्य के लिए लिखता है।

१९५० में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करते समय फॉकनर ने एक छोटा-सा भाषण दिया था। उसने कहा था कि मनुष्य अमर है क्योंकि उसमें आत्मा है, उसमें पराए का दुःख-दर्द अनुभव करने की क्षमता है, उसमें त्याग, साहस और सहनशक्ति है। त्याग और सहनशक्ति—मानव-चरित्र के इन दो मूलभूत गुणों पर लेखक ने प्रायः अपनी सभी रचनाओं में बहुत जोर दिया है। साहित्य सृजन का उद्देश्य, उसने अपने उपरिलिखित

भाषण में कहा है, कष्ट सहने और जीवित बने रहने में इंसान को मदद देना है। फॉकनर की प्रायः सभी कृतियों में मुख्य पात्र सारटोरीस और स्नोपस् परिवार के लोग हैं। सारटोरीस परम्परागत मर्यादा का पालन करना जानते हैं, उन्हें अपने नैतिक दायित्व का बोध है जब कि स्नोपस् अनैतिक, अनाचारी हैं और स्वार्थसिद्धि के लिए कैसा भी साधन अपना सकते हैं। अंततः यह मानवतावाद और भौतिकवाद का चिरकालीन संघर्ष है।

फॉकनर के प्रायः सभी प्रशंसक एकमत हैं कि 'भालू' लेखक की सर्वोत्कृष्ट कृति है। यह एक लम्बी कहानी है। इसमें एक छोटी कहानी से अधिक मांस है और साथ ही यह एक उपन्यास से अधिक कसी हुई है। मुख्य पात्र इसाक मैककैस्लिन के दृष्टिकोण से सारी कहानी कही गई है यद्यपि लेखक ने ऐसा कोई यथार्थवादी प्रयास करना ज़रूरी नहीं समझा जिससे किशोर नायक इसाक के विचारों का अक्षरशः चित्रण हो सके। वह तो अपनी निजी प्रवाहमयी, समृद्ध भाषा में, प्रतीकों के सहारे अपने पात्रों की भाव-भावनाएं व्यक्त करता चलता है।

'भालू' प्रकृति और मनुष्य के सनातन संघर्ष की कहानी है।

फॉकनर एक बृहद् सत्य को प्रकाश में लाने की कोशिश कर रहा है जिसे एक सीधी-सादी, सरल कहानी के परिधान में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। 'भालू' दरअसल आज़ादी और गुलामी के संघर्ष की कहानी है, इस दुनिया की कहानी है जहां सम्मानपूर्वक जीवित रहने के लिए इसाक मैककैस्लिन की भांति नम्रता, साहस और स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ना आवश्यक है।

फॉकनर की शैली अनूठी है। उसने स्वयं को सामान्य वाक्य-विन्यास की सीमाबद्धता से मुक्त कर लिया है। वह एक कुशल वाद्य-वादक की भांति अपने आन्तरिक अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा उसकी चेरी है और उसके शरीर में इतना लोच है कि वह अपने स्वामी के लिए अपने सिर पर पहाड़-सा बोझ रखकर हवा की तेज़ी के साथ दौड़ सकती है।

—सूर्यकुमार जोशी

१

एक आदमी था और इस बार एक कुत्ता भी। बूढ़े भालू बेन को मिलाकर दो जानवर थे और बून हागनबेक को मिलाकर दो आदमी। बून की रगों में कुछ रक्त सैम फादर्स वाला भी था, यद्यपि उसके पूर्वज सैम फादर्स की वंशावली में साधारण ही व्यक्ति रहे थे। केवल सैम और बूढ़े भालू और कुत्ते शेरू का रक्त ही निर्मल-निष्कलंक था।

इसाक मैककैस्लिन सोलह साल का था। पिछले छः सालों से वह एक शिकारी की शागिर्दी करता आया था। पिछले छः सालों से वह बढ़िया से बढ़िया बातें भी सुनता आया था। ये बातें उस बहुत बड़े और बहुत पुराने जंगल के बारे में होती थीं जो किसी भी पुस्तक में वर्णित वन से कहीं अधिक बड़ा और पुराना था। मूर्ख गोरे समझ बैठे थे कि उन्होंने इसका कुछ हिस्सा खरीद लिया है और क्रूर आदिवासियों ने मान लिया था कि इसका कुछ भाग उनके काबू में है। यह मेजर द स्पेन और उसकी जायदाद से भी बहुत बड़ा था। यह बात वह जानता था। यह टामस सटपेन से भी पुराना था जिसके बारे में मेजर द स्पेन ज़िक्र किया करते थे और इस बारे में वह दूसरों से कहीं ज्यादा जानते थे। यह प्राचीन इक्केमोटब नामक आदिवासी सरदार से भी पुराना था, जिसका जिक्र सामस सटपेन किया करता था और वह भी इस बारे में दूसरों से कहीं ज्यादा जानता था। वह उन लोगों के बारे में बातें सुनता आया था जो न गोरे थे, न काले थे, न लाल थे, बल्कि सच्चे मर्द थे, शिकारी थे और उनमें कष्ट सहने का संकल्प और दृढ़ता तथा जीवित बने रहने की नम्रता और निपुणता थी। उसने कुत्तों, भालुओं और हिरनों की बातें सुनी थीं, जो

विशाल वन की पृष्ठभूमि में उभरे थे और जिन्हें उस जंगल में ही रहकर परम्परागत नियमों के अनुसार, जिसमें शिकायत की गुंजाइश नहीं होती और कोई हमदर्दी नहीं होती, अनन्त संघर्ष में रत रहना पड़ता है। वे लोग धीमी, भारी और सधी हुई आवाज में, अपनी विजय के मूर्त चिह्नों—दीवारों पर टंगी बन्दूकों और जानवरों के सिरों और खालों के बीच छोटे कस्बों के मकानों के पुस्तकालयों में या सुलगती अंगीठियों के पास बैठकर या बगानों के बीच स्थित कोठियों में या जब मकान और अंगीठियां न होतीं तब एक तिरपाल के सामने अलाव जलाकर बातें करते, अतीत पर दृष्टिपात करते और अतीत की स्मृतियों को ताजा किया करते। एक बोतल हमेशा मौजूद होती और इसाक मैककैस्लिन को लगता कि दिल और दिमाग, साहस, कपट और रफ्तार के सौंदर्यमय भीषण क्षणों को घनीभूत करके उसे बादामी रंग की शराब में स्रावित कर दिया गया हो जिसे औरतें, जवान और बच्चे नहीं, बल्कि सिर्फ शिकारी ही पीते थे, जिसमें मारे हुए जानवरों का खून तो न था पर जैसे उसमें एक स्वाधीन अमर आत्मा घनीभूत होकर समा गई हो और उसे वे उचित मात्रा में नम्रता से पीते थे; अंधविश्वासियों की तरह नहीं जो चालाकी, ताकत और तेजकदमी की खूबियों को पाने की नीच और आधारहीन आशा से पीते हैं, बल्कि इन खूबियों की सराहना में वे पीते थे। इसलिए दिसम्बर मास की उस सुबह इसाक मैककैस्लिन को स्वाभाविक ही नहीं बल्कि पूर्णतः उचित लगा कि शुरुआत ह्विस्की से की गई।

बाद में उसने महसूस किया कि शुरुआत तो बहुत पहले ही हो चुकी थी। वह तो उसी दिन हो चुकी थी जब वह दस बरस का हुआ था और उसके चचेरे भाई मैककैस्लिन पहली बार उसे उस बड़े जंगल के कैम्प में ले गए थे ताकि वह भी अपनी नम्रता और सहनशीलता के बल पर शिकारी का दर्जा प्राप्त कर सके। तभी से उसने बिना जाने-देखे ही विरासत में उस

बूढ़े विशालकाय भालू को पा लिया था जिसका एक पैर फंदे में फंसकर टूट चुका था और जिसने लगभग एक सौ वर्ग मील के इलाके में नाम कमा रखा था; सचमुच एक जीवित व्यक्ति का-सा निश्चित नाम। एक लम्बी कहानी थी उसके पीछे; अनाज की कोठियों को तोड़ने और उनमें सुराख करने की, भेड़-बकरियों और पालतू सूअरों और बछड़ों को उठाकर जंगल में ले जाकर खा डालने की और सब तरह के जाल-फंदों तथा विघ्न-बाधाओं को पार कर कुत्तों को मारने और चीर-फाड़ डालने की और बिल्कुल पास से चलाई गई गोलियों को ऐसे बेकार कर देने की, मानो वे किसी बच्चे द्वारा नली में फूंक मारकर फेंके गए मटर के दाने हों। खून-खराबी और बरबादी का यह भयंकर पथ इसाक के जन्म से पूर्व आरम्भ हुआ था, जिसपर वह बदसूरत विशालकाय भालू निडरता और अडिग दृढ़ता के साथ चलने वाले रेल के इंजन की तरह चलता-फिरता था। उसे देखने से पूर्व ही वह उसके बारे में जान चुका था, उस बीहड़ जंगल में जाने से भी पहले, जहां कि बूढ़ा भालू अपने टूटे पैर का चिह्न छोड़ जाता था। इसाक उसका विराट स्वरूप स्वप्न में देख चुका था। काले-रुखड़े बालों और लाल-लाल आंखों वाला, विशालकाय परन्तु दुष्ट नहीं, महज़ बहुत भारी-भरकम, पीछा करने वाले कुत्तों के लिए तो बहुत बड़ा हमलावर, घोड़ों के लिए भी बड़ा, गोली दागने वाले शिकारियों और उनकी गोलियों के लिए भी बहुत बड़ा, उस इलाके के लिए भी बहुत बड़ा जो उसका अपना सीमित क्षेत्र था। ऐसा लगता था मानो इसाक ने अन्तःप्रेरणा से वह सब जान लिया हो जिसे उसकी इन्द्रियां और मस्तिष्क न जान पाए थे। वह कम्बख्त निर्जन जंगल जिसके किनारों को लोग अपनी कुल्हाड़ियों और हलों से धीरे-धीरे काटते जा रहे थे क्योंकि जंगल होने के कारण वे उससे डरते थे; वहां बहुत से लोग आपस में एक दूसरे का नाम तक न जानते थे, जबकि बूढ़े भालू ने नाम कमा रखा

था। वह कोई एक मरणशील पशु न था बल्कि किसी एक विलुप्त काल की अडिग, अजेय, अद्भुत आकृति थी; उस पुरातन वन्य जीवन की एक छाया, उसका एक सूक्ष्म रूप, उसकी एक दैवी प्रतिमा थी, जिसे लघुकाय मानवजन घृणा और भय के आवेश में उखाड़ते और काटते चले जा रहे थे, उसी प्रकार जैसे एक अलसाए हाथी के टखनों पर बौने प्रहार करते हैं। वह बूढ़ा भालू असहाय, एकाकी, अजेय, विधुर, निस्सन्तान, अमर, वृद्ध, आदम, जिसकी बूढ़ी पत्नी लूट ली गई है और जो अपने देहान्त के उपरान्त भी जीवित है!

इसाक बच्चा था। शिकारियों के साथ जाने में पहले तीन साल की कसर थी, फिर दो की, फिर एक की, और हर नवम्बर मास वह उस गाड़ी को जाते देखा करता था जिसमें कुत्ते और बिस्तरे, खाना और बन्दूकें और उसका चचेरा भाई मैककैस्लिन और टेनी का बेटा जिम और सैम फादर्स बड़े जंगल की ओर रवाना होते थे। बाद में सैम फादर्स जंगल में ही कैम्प में रहने चला गया। उसे लगता कि वे रीछ और हिरन का शिकार करने नहीं, बल्कि उस बूढ़े भालू से सालाना मुलाकात करने जा रहे हैं जिसे मार डालने का उनका दरअसल कोई इरादा न था। दो हफ्ते बाद वे लौटते और साथ में कोई तोहफा, कोई खाल न होती। इसाक को इसकी आशा भी न थी। उसे कभी भी यह आशंका न होती कि गाड़ी में उन खालों और खोपड़ियों के बीच बूढ़ा भालू भी मरा हुआ हो सकता है। उसने यह भी कभी न सोचा था कि कितने साल में: दो साल में या एक साल में वह खुद मौजूद होगा और कौन जाने बूढ़ा भालू उसकी ही बन्दूक का शिकार हो जाए। उसका ख्याल था कि जंगल में शागिर्दी पूरी कर लेने के बाद, जब वह एक शिकारी कहलाने योग्य होगा, उसे बूढ़े भालू के टूटे पैर के चिह्न को पहचानने की आज्ञा मिलेगी और फिर नवम्बर के दो हफ्तों में वृद्ध भालू की भयानक अमरता के वार्षिक

समारोह में अपने चचेरे भाई, मेजर द स्पेन, जनरल काम्पसन, और वाल्टर इवेल और बून और उन कुत्तों के सामने, जो उस बूढ़े भालू को घेरने से डरते थे जिसके सामने बन्दूकें बेकार हो जाती थीं, वह एक मामूली शिकारी ही होगा।

आखिरकार अभीष्ट दिन भी आया। अपने चचेरे भाई और मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन के साथ गाड़ी में बैठे हुए नवम्बर मास की हल्की फुहार में उसने सर्व प्रथम जंगल को देखा ; यही प्रथम दर्शन उसे सदा स्मरण रहा। मरणासन्न वर्ष की ढलती संध्या में जंगल की लम्बी अनन्त रेखा। उनकी गाड़ी खुले प्रदेश की अंतिम सीमा पार कपास और मकई के खेतों के बीच खिलौने-से छोटे लोगों द्वारा उस असीम जंगल को काटने की हिमाकत की आखिरी निशानी के बीच चली जा रही थी और चलते-चलते उस विराट वन की पृष्ठभूमि में वह गाड़ी बेहद छोटी नजर आने लगी थी, जैसे वह चल ही न रही हो, जैसे एक छोटी-सी नौका एक विशाल सागर में अचल खड़ी हो, सागर की अनन्त निस्सारता में मात्र अपनी जगह हिल-डुल रही हो, मानो तट के निकट पहुंचने में प्रत्यक्षतः कोई विशेष प्रगति न हो रही हो। ऐसे में ही सहसा उस भयानक, अभेद्य दीखने वाले वन के द्वार खुल गए; उसने प्रवेश किया। सैम एक गाड़ी की, जिसमें खच्चर जुते थे, सीट पर रजाई ओढ़कर बैठा हुआ पहले से ही प्रतीक्षा कर रहा था। वन्य प्रदेश में दीक्षा पाने का कार्य उसने सैम के साथ रहकर आरम्भ किया, जैसे सैम की सोहबत में ही खरगोश आदि के बीच उसने सर्वप्रथम अपना पौरुष प्रमाणित किया था, जब कि वे दोनों सीली, गरम रजाइयों में लिपटे गाड़ी में बैठे रहते और मानो जंगल ने उन्हें आने देने के लिए मुंह खोल दिया हो और उनके अन्दर दाखिल होते ही बन्द कर लिया हो। कोई निश्चित रास्ता न होता। गाड़ी एक नाले के साथ-साथ चलती जो दस गज की दूरी तक दिखाई देता और दस गज

पीछे छूटकर गायब हो जाता और फिर भी प्रतीत होता मानो वह गाड़ी अपने बल पर नहीं, बल्कि आसपास के अक्षुण्ण तथापि तरल वातावरण के घर्षण में तिरती-सी, उनींदी-सी, चुपचाप, प्रायः प्रकाश रहित चली जा रही हो।

उसने अनुभव किया कि दस वर्ष की आयु में वह स्वयं अपना जन्म देख रहा है। यह बात उसे अजीब न लगी। यह अनुभव मानो वह पहले भी कर चुका था और महज़ ख्वाब में नहीं। वह कैम्प देखता; एक नाले पर ऊंचे स्थान पर रंग-रोगनविहीन छः कमरों का बंगला, और उसे पहले ही पता था कि नज़दीक पहुंचने पर वह कैसा दिखाई देगा। उसने कैम्प में नियमित रूप से अव्यवस्था बढ़ाने में योग दिया, मानो उसे सारा काम पहले से ही मालूम था और दो हफ्तों तक वह मोटा, भद्दा खाना खाता रहा; बेढंगी खट्टी रोटी, अजीब जंगली गोश्त जैसा कि उसने पहले कभी न चखा था, जिसे मर्द खाते थे और मर्द पकाते थे, जो शिकारी पहले और बावर्ची बाद में थे। वह उन्हींके साथ शिकारियों की तरह बिना चादर के, चुभने वाला कम्बल ओढ़कर सोता था। दिन निकलते ही वह और सैम फादर्स जंगल में अपने नियत स्थान पर खड़े दिखाई देते। वह सबसे खराब, सबसे उजाड़ जगह थी। उसे यही उम्मीद भी थी, उसने यह आशा करने का साहस तक न किया था कि पहली बार में ही उसे दौड़ते हुए कुत्तों की आहट सुनाई दे जाएगी। लेकिन वह सुनाई दी, तीसरे दिन की सुबह ही एक अस्पष्ट ध्वनि सुनाई दी जो कहीं से आ रही थी। क्या थी? पता न चलता था, फिर भी वह जान गया था कि वह क्या थी यद्यपि उसने इतने सारे कुत्तों को एक साथ दौड़ते पहले कभी न सुना था। उस अस्पष्ट ध्वनि-पुंज में से क्रमशः पृथक् व्यक्तिगत ध्वनियां मुखरित होने लगीं और वह अपने चचेरे भाई के पांच कुत्तों की आवाज़ पहचान सका।

—अब—सैम ने कहा—अपनी बन्दूक की नली कुछ तिरछी कर लो और

उसका घोड़ा चढ़ा लो और चुपचाप खड़े रहो।

लेकिन अभी उसकी बारी नहीं आई थी। विनम्रता उसमें थी, यह उसने पहले से ही सीख रखी थी। और धैर्य का पाठ भी उसे सीखना था। वह केवल दस वर्ष का था और केवल एक सप्ताह जंगल में रहा था। घड़ी टल चुकी थी। उसे लगा था कि मानो उसने दौड़ते हुए हिरनों और बारहसिंगों को दरअसल देखा था। कुत्तों की आवाज़ शान्त हो जाने के बाद भी उस धूमिल एकान्त में एक गूंज कायम थी और कहीं किसीने बहुत दूर प्रातः के अर्ध तरल प्रकाश में दो गोलियां दागी थीं।—अब घोड़ा उतार दो—सैम ने कहा।

इसाक ने वैसा ही किया।—तो तुम्हें भी यह मालूम था?—उसने कहा।

'हां'—सैम बोला—मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं कि जब गोली नहीं चलानी होती तब क्या करना होता है। भालू और हिरन का मौका निकल जाने के बाद ही आदमी और कुत्ते मारे जाते हैं।

'बहरहाल, वह नहीं आया', लड़के ने कहा—यह भालू नहीं था, सिर्फ एक हिरन था।

'हां', सैम बोला—सिर्फ एक हिरन था।

और एक सुबह, दूसरे हफ्ते की बात है, उसने कुत्तों की आवाज़ फिर सुनी। इस बार सैम के कुछ बताने से पहले ही इसाक ने अपनी बहुत बड़ी और बहुत भारी, आदम-कद बंदूक को सैम द्वारा बताए गए तरीके से संभाल लिया, यद्यपि इस बार कुत्ते और हिरन पहले की अपेक्षा कम नज़दीक आए थे और उनकी आवाज़ें भी साफ सुनाई नहीं दे रही थीं। वह आवाज़ भागते हुए कुत्तों की-सी नहीं मालूम पड़ रही थीं। वैसी आवाज़ उसने पहले कभी न सुनी थी। उसने देखा कि सैम, जिसने उसे हाथ में बंदूक लेकर एक अच्छी जगह, जहां से सब ओर का दृश्य

दिखाई दे सके, जमकर बैठने और फिर वहां से न हटने की सीख दी थी, स्वयं उठकर उसके पास चला आया था ।—वहां—उसने कहा—सुनो ! —और लड़के ने सुनी, किसी सामूहिक संगीत की स्वर लहरी नहीं बल्कि कीचड़ में दबी एक चीख जो बहुत तीखी थी, जिसमें एक अनिश्चय, वल्कि निराशा थी, और जो बहुत देर में विलीन हुई और फिर भी हवा में मानव-पीड़ा की एक चीत्कार-सी बनी रही । इस बार उसे दौड़ती हुई कोई धूमिल आकृति भी न दिखाई दी थी । वह अपने कंधे के पास सैम की उठती-गिरती सांसें सुनता रहा । उसने सैम के फूले हुए नथुनों की गोलाई देखी ।

'यही है बूढ़ा भालू !' उसने जल्दी से फुसफुसाकर कहा ।

जब तक वह आवाज़ बिल्कुल खतम न हो गई, तब तक सैम अपनी जगह से हिला-डुला नहीं । सिर्फ गर्दन उठाकर उसने देखा और सधी हुई सांस लेकर बोला—बहुत खूब । दौड़ा तक नहीं, सिर्फ टहलता चला गया ।

'लेकिन यहां, इस इलाके में ?' लड़के ने विस्मय से कहा ।

'यहां हर साल आता है !' सैम ने कहा—साल में एक बार । ऐश और बून का कहना है कि छोटे भालुओं को भगाने आता है, शायद उनसे कहने आता है कि दूर छिपे रहो जब तक कि शिकारी चले न जाएं ।—लड़का अब कुछ भी नहीं सुन रहा था पर सैम का सिर धीरे-धीरे घूमता गया और अंत में सिर का पृष्ठभाग उसकी ओर हो गया । फिर लड़के ने घूमकर बूढ़े सैम की आंखों में देखा कि गम्भीरता और तीक्ष्णता, उन्माद और आदर की चमक धीरे-धीरे उसकी आंखों से गायब होती जा रही थी ।—उसे छोटे-मोटे भालुओं और कुत्तों और आदमियों, किसीका भी डर नहीं । वह तो यह देखने आता है कि इस साल कैंप में कौन नया आदमी आया ; वह गोली चलाना जानता है या नहीं, वह जंगल में

टिककर रह सकता है या नहीं, अभी तक हमारे पास ऐसा कुत्ता आया या नहीं जो उसका रास्ता रोकने की हिम्मत रखता हो। वह भालुओं का सरदार है न ? वह पूरा आदमी है।—सैम की आंखों की चमक जाती रही और फिर वे आंखें वैसी ही हो गईं जैसी कि इसाक हमेशा से देखता आया था।—वह उन लोगों को अपना पीछा नदी तक करने देगा। फिर वह उन्हें घर वापस भेज देगा। आओ, हम भी चलें और देखें कि कैंप में लौटने पर उनकी सूरतें कैसी लगती हैं।

सबसे पहले शिकारी कुत्ते लौटकर आए। वे गिनती में दस थे और सबके सब बावर्चीखाने के नीचे आपस में सिमटे जा रहे थे। इसाक और सैम ने झुककर उस कोने में देखा जहां वे एक दूसरे को ढकेलते हुए बैठने का यत्न कर रहे थे। उनकी आंखों की गोल-गोल पुतलियां इधर-उधर लुढ़क रही थीं, चमक रही थीं और वे चुप थे। केवल एक गंध थी, जिसे इसाक समझ न पाया, क्योंकि वह कुत्ते की गंध या किसी अन्य पशु की गंध से भिन्न कोई गंध थी। उस निराश-आर्त चीत्कार के सम्मुख केवल वीरान जंगल ही तो था इसलिए जब ग्यारहवीं कुतिया दोपहर में लौटकर आई और इसाक और टेनी के बेटे जिम ने उस हांफती-कांपती कुतिया को थामा और सैम ने उसके फटे हुए कान में तारपीन का तेल और ग्रीज़ लगाया, तब ऐसा लगा कि किसी जीवित प्राणी ने नहीं बल्कि साक्षात् जंगल ने झुककर उस भयभीत कुतिया को थपथपा दिया हो। —बिल्कुल उस आदमी की तरह—सैम ने कहा—जो हिम्मत दिखाने का काम टालता रहता है, यह जानते हुए भी कि उसे कभी न कभी अपनी हिम्मत जरूर आजमानी होगी। यही हाल इस कुतिया का हुआ है। इसे पहले से ही सब मालूम था।

इसाक को पता नहीं सैम कब चला गया। उसे सिर्फ इतना ही मालूम था कि वह जा चुका था। अगले तीन दिन हर सुबह वह उठकर

नाश्ता करता और सैम को अपनी प्रतीक्षा में खड़ा न पाता। वह अपने मचान पर अकेला ही चला आता। अब उसे इस जगह को ढूंढ़ने में मुश्किल न होती थी। वह अपनी जगह पहुंचकर सैम के बताए ढंग से खड़ा हो जाता। तीसरे दिन सुबह उसे फिर कुत्तों की आवाज़ सुनाई दी। वे सूंघ-सूंघकर तेजी के साथ लपकते चले जा रहे थे। उसने अपनी बंदूक संभाली और पास से शिकार को गुजरते सुना। वह अभी तक पूरी तरह तैयार न था। सिर्फ पंद्रह दिनों से क्या होता है, उसने तो अपना समूचा जीवन ही धैर्य और विनम्रता के साथ जंगल को समर्पित कर दिया था। फिर गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी; वाल्टर इवेल की राइफिल से चली थी वह गोली। अब वह न सिर्फ अपने मचान तक बल्कि वापस कैंप भी अकेला ही पहुंच गया था और अपने चचेरे भाई से मिले कम्पास की मदद से वह वाल्टर के पास जा पहुंचा। वाल्टर मरे हुए बारहसिंगे के पास खड़ा था और कुत्ते बारहसिंगे की अंतड़ियां खाने में मशगूल थे। तब तक मेजर द स्पेन और टेनी के बेटे जिम के अलावा और कोई न पहुंचा था। तब तक ऐश चाचा भी अपने उस काने खच्चर पर, जिसके लिए कहा जाता था कि उसे खून की गंध से, यहां तक कि भालू की गंध से भी कोई परहेज़ न था, सवार होकर न पहुंचे थे।

उस खच्चर पर ऐश चाचा न था, सैम था, जो वापस आ गया था। सैम उसके रोटी खाने का इन्तज़ार करता रहा और फिर वे दोनों, इसाक काने खच्चर पर और सैम गाड़ी में जोड़े जाने वाले दूसरे खच्चर पर सवार होकर, निकले। वे अस्ताचलगामी सूर्य के मन्द प्रकाश में तीन घंटे तक चलते रहे, पर किसी खास रास्ते या तरीके से नहीं। वे एक ऐसे इलाके में जा पहुंचे जिसे इसाक ने पहले कभी न देखा था। अब उसकी समझ में आया कि क्यों सैम ने उस काने खच्चर पर बैठने के लिए उससे कहा था जिसे खून की बू से, जंगली जानवरों की बू से कोई परहेज न

था। सैम के उतरते समय दूसरा खच्चर, जो तन्दुरुस्त था, अड़ गया और वापस भागने के लिए मुड़ने तथा बिना बात ही उछल-कूद मचाने लगा। सैम ने लगाम खींचकर उस खच्चर की गर्दन दोहरी कर रखी थी, उसे आगे बढ़ने के लिए मजबूर कर रखा था जब कि इसाक का काना खच्चर चुपचाप खड़ा था। और फिर शिशिर कालीन अपराह्न में उस प्राचीन वन के गहन अन्धकार में उन्होंने देखा, लकड़ी के एक टूटे लट्ठे पर पंजों के गहरे निशान और पास ही गीली धरती पर एक बहुत बड़े टूटे पैर का चिह्न। अब उसे वह चीज समझ में आने लगी जो कि उस दिन सुबह कुत्तों की आवाज़ में सुनाई दी थी, अब उसे उस गंध का अर्थ समझ में आने लगा था जो कि बावर्चीखाने के नीचे झांकते समय उसे आई थी। वही चीज़ खुद उसमें भी थोड़ी भिन्न थी क्योंकि वे जंगली जानवर थे और वह आदमी था, लेकिन थी वही चीज़ थोड़े फर्क के साथ : एक निष्क्रिय उत्सुकता, एक निराशा, चिरन्तन वन के सम्मुख अपनी नश्वरता और पौरुषहीनता का बोध, फिर भी शंका रहित और भय रहित; अचानक मुंह में पितलाया हुआ स्वाद, दिमाग में या पेट में अचानक एक खिचाव या तनाव। वह सिर्फ इतना ही जान पाया था जब कि पहली बार उसने महसूस किया कि वह बूढ़ा भालू, जिसे उसने दौड़ते हुए सुना था और जो उसकी स्मृति से पहले के दिनों से ही उसके स्वप्नों में प्रकट होता रहा था और जिसे उसके चचेरे भाई ने और मेजर द स्पेन ने और -तक कि बूढ़े जनरल काम्पसन ने भी सुना होगा और सपनों में देखा होगा, एक मरणशील पशु था जिसे मारने नहीं बल्कि जिससे मुलाकात करने वे हर नवम्बर के महीने कैम्प में आते थे। यह नहीं कि वह मारा नहीं जा सकता था, पर उन लोगों को दरअसल उम्मीद न थी कि वे उसे मार सकते थे।—अब कल होगा—उसने कहा।

'तुम्हारा मतलब है हम कल कोशिश करेंगे' सैम ने पूछा—लेकिन

अभी तक कुत्ता तो आया ही नहीं।

'कुत्ते तो हमारे पास ग्यारह हैं', इसाक ने कहा—सोमवार को उन्होंने उसे भगाया था।

'और उनकी आवाज़ भी तो तुमने सुनी थी', सैम ने कहा—और उन्हें देखा भी था। अभी तक हमारे पास वह कुत्ता नहीं है। वहीं एक कुत्ता इसे घेर सकता है और वह अभी तक हमारे पास नहीं है। शायद वह कहीं भी नहीं है। अब सिर्फ, एक ही बात हो सकती है और वह यह कि भालू अचानक किसी ऐसे आदमी के सामने आ जाए जिसके हाथ में बन्दूक हो और जो सही तरीके से उस बन्दूक को चलाना जानता हो।

'मैं वह आदमी नहीं हो सकता', लड़के ने कहा—वाल्टर या मेजर या और कोई हो सकता है।

'हो सकता है', सैम ने कहा—कल तुम होशियार रहना, क्योंकि वह बहुत चालाक है। अपनी चालाकी और चुस्ती से ही इतने दिनों तक जिन्दा रह पाया है। अगर वह घिर गया और उसे अपना रास्ता निकालने के लिए किसीको कुचलना पड़ा तो वह तुम होगे।

'कैसे ?' लड़के ने कहा—वह कैसे जानेगा—वह चुप हो गया। —तुम्हारा मतलब है वह मुझे पहले से जानता है, वह जानता है कि मैं पहली बार यहां आया हूं ? और मुझे यह परीक्षा करने का समय नहीं मिला है कि····वह फिर चुप हो गया और सैम की ओर एकटक देखने लगा। फिर उसने आश्चर्य के साथ नहीं, नम्रता के साथ कहा—हां, वह मुझे ही देख रहा था। वरना उसे आने की क्या ज़रूरत थी।

'कल होशियार रहना', सैम ने कहा—आओ, अब चलें। बहुत रात गए हम कैम्प में पहुंचेंगे।

अगले दिन सुबह वे लोग सदा से तीन घंटे पहले ही चल पड़े।

यहां तक कि ऐश चाचा भी साथ था। वह पेशे से बावर्ची था और मेजर द स्पेन की शिकार-पार्टियों के लिए खाना पकाने के अलावा और कुछ न करता था परन्तु फिर भी जंगल का प्रभाव उसपर पड़ा था और उसकी प्रतिक्रिया अन्य लोगों, यहां तक कि इसाक, जिसने दो हफ्ते पहले तक जंगल भी न देखा था, कभी किसी कुत्ते का उखडा हुआ कान और टूटा हुआ कन्धा न देखा था और न गीली धरती पर बूढ़े भालू के पैर का निशान ही पहले क़भी देखा था, जैसी ही हुई। वे सब सवारियों पर चले जा रहे थे। पैदल के लिए रास्ता बहुत लम्बा था। इसाक और सैम और ऐश चाचा कुत्तों के साथ गाड़ी में थे, इसाक का चचेरा भाई और मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन और बून और वाल्टर और टेनी का बेटा जिम, दो-दो के जोड़े, एक-एक घोड़े पर सवार थे। प्रातः के प्रथम प्रकाश के साथ इसाक ने अपने आपको उसी मचान पर पाया जहां दो हफ्ते पहले एक दिन सैम उसे खड़ा करके चला गया था। वह एक पेड़ के सहारे एक छोटे-से नाले के पास खड़ा था जहां बांस के झाड़ों में होता हुआ मटमैला पानी धीरे-धीरे बह रहा था। एक चिड़िया न जाने कहां से कूक उठी। इसाक के पास एक बन्दूक थी जो उसके लिए बहुत भारी थी, जो उसकी अपनी नहीं बल्कि मेजर द स्पेन की थी और जिसे उसने सिर्फ एक बार ही चलाया था, वह भी यह देखने के लिए कि वह पीछे को कैसे धक्का देती है। उसका मचान भी दूसरे मचानों-सा ही था, फर्क सिर्फ इतना था कि दो हफ्ते तक सुबह वहां खड़ा रहकर वह समझता था कि जंगल के उस हिस्से को वह पहचानने लगा था; हालांकि उस हिस्से में भी वही वीरानगी, वही सूनापन था जिसके भीतर से होकर डर का मारा कमजोर इन्सान यों ही बाहर निकल आया था, उसने कुछ बदला न था, अपना कोई चिह्न तक न छोड़ा था। वह जंगल अब भी वैसा ही था जैसा सैम फादर्स के पहले पुरखा के जमाने में रहा होगा,

जब लकड़ी के मुगदर या पत्थर की कुल्हाड़ी या हड्डी के तीर को लेकर सबसे पहले पुरखा ने इस जंगल में प्रवेश किया था और अपने इर्द-गिर्द देखा था। अब फर्क सिर्फ इतना ही हो गया था कि इसाक बावर्चीखाने के नीचे झांककर डरे हुए कुत्तों की विशेष गंध सूंघ चुका था और फटे हुए कान की उस कुतिया को भी देख चुका था जिसे सैम के अनुसार स्वयं को कुत्ता कहलाने के लिए अपने साहस का सबूत पेश करना पड़ा था, और साथ ही वह कल टूटे लट्ठे के पास बूढ़े भालू के पैर का निशान भी देख चुका था। उसे कुत्तों की आवाज़ बिल्कुल न सुनाई दी। सचमुच उसे कोई भी आवाज़ सुनाई न दी। उसने सिर्फ कटफोड़वे की खटखट को सहसा बन्द हो जाते सुना और वह जान गया कि बूढ़ा भालू उसकी ओर देख रहा था। इसाक उसे कभी देख नहीं पाया। उसे यह भी नहीं मालूम कि भालू उसे सामने से देख रहा था या पीछे से। वह अपनी जगह जमकर खड़ा रहा और उसके हाथ में वह बेकार बन्दूक थी जिसके बारे में अब उसे महसूस हुआ कि वह कभी उसे काम में न ला सकेगा और उसके मुंह में वह पितलाए हुए थूक का स्वाद था जिसकी गंध उसे बावर्चीखाने के नीचे छिपे कुत्तों में पहले ही मिल चुकी थी।

तब भालू चला गया। सहसा बन्द हो जाने वाली कठफोड़वे की खटखटाहट फिर शुरू हो गई और कुछ देर बाद उसने महसूस किया कि शिकारी कुत्तों की आवाज़ कुछ-कुछ सुनाई देने लगी थी, एक भनभनाहट जिसे वह शायद पिछले एक-दो मिनट से सुन रहा था और जो बीच-बीच में पास आकर दूर चली जाती और गायब हो जाती थी। वे उसके पास नहीं पहुंचे। वह कुत्तों ही की आवाज़ थी, यह भी वह पूरी तरह न बता सकता था, और अगर वे बूढ़े भालू का पीछा कर रहे थे तो वह जरूर कोई दूसरा भालू होगा। थोड़ी ही देर में सैम सामने के नाले को पार करके आया और उसके साथ यह जख्मी कुतिया भी थी। वह आकर

इसाक की टांगों से चिपकी जा रही थी।—मैंने उसे नहीं देखा—इसाक ने कहा—मैंने उसे नहीं देखा, सैम।

'मैं जानता हूं', सैम ने कहा—वह तुम्हें देख गया है। और तुमने उसकी आवाज़ भी तो नहीं सुनी।

'नहीं', लड़के ने कहा—मैं, मैं...

'वह बहुत चालाक है,' सैम बोला—बहुत चुस्त और चालाक।—सैम की आंखों में इसाक ने वही काली और चिन्तातुर गहराई और चमक देखी जो वह एक बार पहले भी देख चुका था। सैम थरथराती हुई उस कुतिया को देख रहा था जिसके टूटे हुए कंधे पर ताजे खून की बूंदे उभर आई थीं।—बहुत बड़ा है बूढ़ा भालू। अभी तक हमें कुत्ता नहीं मिला। लेकिन किसी न किसी दिन ज़रूर मिलेगा।

हर अगली बारी के बाद अगली बारी आनी ही थी और इसाक सिर्फ दस बरस का था। उसे लगा कि वह बूढ़े भालू को, जो अनश्वर था, और अपने आपको भी, जिसमें कुछ अनश्वरता आ गई थी, समय के अनन्त प्रवाह में निरन्तर बहते देख सकता था क्योंकि अब वह उस चीज को समझने लगा था जो उसने डरे हुए कुत्तों में और अपने मुंह के स्वाद में पाई थी, और उसने एक लड़के की तरह भय को जाना था, ठीक उसी तरह जिस तरह कि कोई नवयुवक उस प्रेम और कामवासना को, जो उसके रक्त में है, पर चेतन में नहीं, महज़ ऐसी औरत की मौजूदगी पर या शायद सिर्फ उसके सोने के कमरे में जाकर पहचानने लगता है, जिसने अनेक पुरुषों को प्यार किया हो और उनका प्यार पाया हो। 'तो मुझे उसे देखना होगा'—लड़के ने सोचा। उसके विचार में न भय था और न आशा ही थी।—उसकी आंख में आंख डालकर देखना होगा।—फिर अगली गर्मी में जून का महीना आया। कैम्प में लोग इकट्ठे होने लगे। मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन की सालगिरह मनाई जाने लगी।

हालांकि एक सितम्बर में पैदा हुआ था और दूसरा लगभग तीस साल पहले सर्दियों में। फिर भी वे दोनों और मैककैस्लिन और बून और वाल्टर इवेल (और अब इसाक भी) हर साल जून के महीने में दो हफ्ते कैम्प में रहते और मछली पकड़ते और तरह-तरह के जानवरों का शिकार करते थे। मछली पकड़ने और गिलहरी मारने का काम बून और नीग्रो लोगों का (और अब इसाक का भी) था, क्योंकि पक्के शिकारी, न सिर्फ मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन (जो दो हफ्ते हिलती हुई कुर्सी में लेटा रहकर एक बहुत बड़े लोहे के पतीले में पकते हुए शोरवे को चखकर ऐश चाचा से झिक-झिक करता हुआ गुजारता था और टेनी का पुत्र जिम टीन के प्याले में ह्विस्की डाल-डालकर जाता और वह पीता रहता था), बल्कि मैककैस्लिन और वाल्टर इवेल तक, जो कि अभी काफी मोटे थे, इस तरह के शिकार को हेय समझते थे और कभी शर्त लगा लेने पर या निशानेबाजी दिखाने के लिए ही पिस्तौल से जंगली मुर्गे मारते थे।

मतलब यह कि उसका चचेरा भाई मैककैस्लिन और दूसरे लोग समझते थे कि वह गिलहरियों का शिकार करता था। तीसरे दिन की शाम तक उसका ख्याल था कि सैम फादर्स भी यही सोचता था। वह सुबह ही नाश्ते के बाद कैम्प से बाहर निकल जाता। अब उसके पास अपनी निजी बन्दूक थी, बिलकुल नई, जो उसे क्रिसमस की सौगात में मिली थी और जिसे अब वह अगले सत्तर वर्ष तक अपने पास रखेगा और काम में लाएगा। वह उसमें दो नई नलियां डलवा लेगा, लौक बदलवा लेगा और स्टाक नया लगवा लेगा और अन्त में बन्दूक का सिर्फ चांदी से मढ़ा हुआ घोड़ा, उसके और मैककैस्लिन के खुदे हुए नाम और १८७८ की तारीख रह जाएगी। वह उस पेड़ के पास चला आया जहां एक सुबह वह खड़ा हुआ था। कम्पास की मदद से वह उस जंगल को पहचानने लगा था। वह अपने को एक अच्छा शिकारी बना रहा था, यद्यपि अनजान

में ही। तीसरे दिन ही वह उस टूटे हुए लट्ठे के पास पहुंच गया जहां उसने बूढ़े भालू का पद-चिह्न देखा था। अब वह निशान लगभग पूरा बिगड़ चुका था और धरती में खो गया था। इसाक ग्रीष्मकालीन वन में घने हरे पेड़ों के बीच घूमने लगा जहां दिन के वक्त भी सूरज की रोशनी पूरी तरह न आ पाती थी और जहां तरह-तरह के सांप चलते-फिरते दिखाई देते थे। वह प्रतिदिन अधिकाधिक देरी से कैम्प लौटने लगा और तीसरे दिन संध्या के धुंधलके में कैम्प के पास पहुंचकर उसने सैम को देखा जो रात के लिए जरूरी सामान की उठा-धरी कर रहा था।—तुम अभी तक अच्छी तरह नहीं देख पाए।—सैम ने कहा।

इसाक ठिठककर रुक गया। कुछ देर वह चुप रहा फिर शान्ति के साथ, जैसे किसी बच्चे द्वारा बनाया बांध टूट गया हो और पानी फिर शांति से बहने लगा हो, वह बोला—ठीक है। हां, मैंने यही देखा। लेकिन कैसे देखूं ? मैं उस टूटे लट्ठे के पास भी हो आया। मैं···

'मैं समझता हूं वह तुम्हें छिपकर देखता रहा है। वह ज़रूर तुम्हारा निरीक्षण करता रहा है। तुमने उसके पैर का निशान तो नहीं देखा न ?'

'मैं' लड़के ने कहा—मैंने····मैंने कभी सोचा भी न था कि···

'असल मुश्किल तुम्हारी बन्दूक से है,' सैम ने कहा। वह बाड़े के पास शान्त खड़ा था, एक हब्शी गुलाम और आदिवासी मुखिया का बेटा, बदरंग फटे कपड़ों और चटाई के टूटे टोप में, जो नीग्रो लोगों की गुलामी का प्रतीक था और अब उसकी स्वतन्त्रता का प्रतीक बन गया था। कैम्प और उसके सामने खुला मैदान जिसे मेजर द स्पेन ने साफ करने की कोशिश में थोड़ा-सा खुरचा भर था, संध्या के मंद प्रकाश में, वन के अति प्राचीन अंधकार में लुप्त हो गया। 'बन्दूक,' लड़के ने सोचा—बन्दूक—यह तुम्हें खुद ही तय करना होगा—सैम ने कहा।

अगली सुबह दिन निकलने से पहले नाश्ता किए बिना ही, ऐश चाचा के जागने और रजाई में से निकलकर चूल्हा जलाने से बहुत पहले ही, वह बाहर निकल गया। उसके पास सिर्फ एक कम्पास और सांपों से बचने के लिए छड़ी थी। वह एक मील तक कम्पास देखे बिना जा सकता था। वह हाथ में कम्पास लिए एक लट्ठे पर बैठ गया। रात्रि की गुप्त ध्वनियां, जो उसके आगमन से एक क्षण के लिए रुक गई थीं, पुनः मुखरित हो उठीं और फिर शान्त हो गईं और उल्लुओं ने चिल्लाना बन्द कर दिया और दिन के जागरण के साथ चिड़ियां चहचहाने लगीं और ओस से भीगे जंगल पर रोशनी पड़ने लगी। इसाक ने अपना कम्पास देखा। अब वह जल्दी-जल्दी लेकिन चुपके-चुपके आगे बढ़ने लगा और धीरे-धीरे एक अच्छा अरण्यवासी बनने लगा। यद्यपि यह बात वह स्वयं अभी न जान सका था। वह एक हिरनी और उसके बच्चे को फलांग गया। उसने उन्हें सोते से जगा दिया और ज़मीन पर पड़े पत्तों की खड़खड़ाहट से हिरनी चौकड़ी भरती भाग खड़ी हुई और छौना भी लपककर अपनी मां के साथ हो लिया। इसाक ने सोचा तक न था कि हिरनी का ज़रा-सा बच्चा भी इतना तेज़ भाग सकता है। इसाक ठीक दिशा में शिकार के लिए आगे बढ़ रहा था, जैसा सैम ने उसे सिखाया था। हवा उसके सामने से चल रही थी। लेकिन अब यह बात कोई मतलब नहीं रखती थी। बन्दूक वह छोड़ आया था। उसने स्वेच्छा से; और बंदूक छोड़कर एक ऐसी शर्त स्वीकार कर ली थी। यह बाद में लाभ पाने की आशा करना बड़े विचार-विमर्श का परिणाम नहीं था, जिसमें भालू का अब तक अज्ञात नाम-रूप ही नहीं, बल्कि शिकारी और शिकार के बीच के सभी प्राचीन कायदे-कानून और लेन-देन रद्द कर दिए गए थे। अब वह कभी न डरेगा, जब उसका समूचा शरीर रक्त, मांस, अंतड़ियां, हड्डियां और याददाश्त सब कुछ भय के शिकंजे में होगा तब भी वह नहीं

डरेगा। फिर भी वह जानता था कि एक स्वच्छ, अतृप्त मानसिक स्पष्टता बनी रहेगी और यह स्पष्टता ही उसे उस बूढ़े भालू से और अन्य भालूओं तथा बारह-सिंगों से भिन्न बनाती थी, जिनका शिकार उसे अगले सत्तर वर्षों तक करते रहना था। इसीके लिए सैम ने कहा था—चौकन्ने ज़रूर रहो। यह तो अनिवार्य है, लेकिन डरो मत। जब तक तुम किसीका रास्ता न रोकोगे या घबराए हुए न नज़र आओगे, तब तक तुम्हारा कोई कुछ न बिगाड़ेगा। भालू या हिरन को साहसी पुरुष के समान कायर से भी चौकन्ना ही रहना पड़ता है।

दोपहर होते-होते वह छोटे नाले के सामने के खुले मैदान को पार कर एक नूतन अपरिचित प्रदेश में पहुंच गया, जहां वह पहले कभी नहीं गया था। उसके पास कम्पास के अलावा एक पुरानी, भारी बिसकुट जैसी मोटी चांदी की घड़ी भी थी जो उसे उसके पिता ने दी थी। कैम्प को छोड़े उसे नौ घंटे हो चुके थे और अब से नौ घंटे बाद अंधेरा हुए एक घंटा हो चुकेगा। वह लट्ठे पर से उठने के बाद पहली बार रुका और अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोंछते हुए उसने चारों ओर देखा। उसने स्वयं अपनी इच्छा से, अपनी आन्तरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए नम्रता और शान्ति के साथ त्याग किया था, लेकिन फिर भी स्पष्ट था कि बन्दूक त्याग देने का निर्णय ही काफी न था। उस असीम वन की हरियाली और अधिकाधिक बढ़ते हुए अन्धकार में वह एक बालक-सा, एक अजनबी-सा चुपचाप खड़ा रहा। और फिर उसने सब कुछ त्याग दिया; अपनी घड़ी और अपना कम्पास भी। अभी तक ये चीज़ें उसकी त्रुटियां थीं। उसने अपनी जेब से घड़ी और कम्पास निकालकर एक झाड़ी पर टांग दी और वहीं अपनी छड़ी छोड़कर जंगल में घुस गया।

जब उसे महसूस हुआ कि वह रास्ता भूल गया है तो उसने वैसे ही किया जैसे सैम ने उसे सिखाया था। पिछला रास्ता पार करने के लिए

उसने एक चक्कर लगाया। वह पिछले दो या तीन घंटों से बहुत तेज़ न चल रहा था और झाड़ी पर अपनी घड़ी और कम्पास छोड़ने के बाद से तो उसकी रफ्तार और भी धीमी हो गई थी। अब वह और धीरे-धीरे चलने लगा क्योंकि उसके ख्याल से वह पेड़ पास ही था। दरअसल, कुछ ही देर में वह उस पेड़ के सामने आ खड़ा हुआ। लेकिन उस पेड़ के नीचे न कोई झाड़ी थी, न कम्पास था, न घड़ी, और इसलिए उसने फिर वैसा ही किया जैसा कि सैम ने सिखाया था, उसने विपरीत दिशा में दूसरा ज़्यादा बड़ा चक्कर लगाया ताकि दोनों चक्कर उसके रास्ते को कहीं न कहीं काटें, लेकिन उसे अपने पैर का कहीं कोई निशान नहीं मिला। अब वह फिर तेज़ी से चलने लगा परन्तु वह घबराया हुआ न था। उसका दिल ज़्यादा तेज़ी से धड़क रहा था पर उसमें किसी तरह की कमज़ोरी न थी। इस बार उसे वह पेड़ भी न मिला बल्कि वह एक ऐसी जगह जा पहुंचा जहां एक लकड़ी का लट्ठा पड़ा था जिसे उसने पहले न देखा था और जहां लट्ठे से परली ओर छोटा-सा दलदल था और कहीं से कुछ पानी रिस रहा था। तब उसने आखिरी बार फिर वही किया जो सैम ने उसे सिखाया था। वह लट्ठे पर बैठ गया, और वहीं गीली धरती पर उसने बूढ़े भालू के टूटे पैर का निशान देखा जिसके दबाव से एक गड्ढा-सा बन गया था और उसमें पानी भर-भरकर फैलता जा रहा था और निशान मिटता जा रहा था। जैसे ही उसने आंख उठाकर देखा, उसे दूसरा, फिर तीसरा पदचिह्न दिखाई दिया और वह उनके साथ चलते हुए, जल्दी-जल्दी चलते या दौड़ते हुए नहीं, बल्कि कदम ब कदम चलते हुए उन्हें देखता रहा मानो वे उसके सामने हवा में ही बनते जा रहे थे और आगे जाकर खो जाने वाले थे और तब उसे स्वयं खो जाना था। वह थका न था, न उसका कुतूहल ही कम हुआ था और न उसमें किसी प्रकार का संशय या भय था, यद्यपि वह हाफ रहा था और

सांस जल्दी-जल्दी ले रहा था। अचानक उसने अपने आपको जंगल के मध्य एक खुले पथ पर पाया। वहीं वह पेड़, वह झाड़ी, कम्पास और घड़ी थी जिस पर सूर्य की एक किरण पड़ी थी। और फिर उसने बूढ़े भालू को देखा। वह कहीं से निकला नहीं दिखाई दिया; बस वह वहां था; दोपहर की हरित, वातरहित, चित्र-विचित्रता में अचल, जड़वत्। वह उतना बड़ा न था जितना स्वप्न में दिखाई दिया था, फिर भी आशा के अनुकूल ही बड़ा था, और चित्र-विचित्र अन्धकार की पृष्ठभूमि में खड़ा बहुत ज़्यादा बड़ा और बेडौल लग रहा था और उसे ही देख रहा था। फिर वह चल पड़ा। धीरे-धीरे खुले मैदान को पार करते हुए एक क्षण के लिए धूप की चमक में और फिर छाया में पहुंचा और फिर रुककर और गर्दन मोड़कर उसने इसाक को देखा। फिर वह चला गया। वह कदम रखकर जंगल में नहीं गया, बिना हिले विलीन हो गया, वैसे ही जैसे उसने एकबार एक बड़ी मछली को अपनी देह को हिलाए बिना ही तालाब की गहराइयों में गायब हो जाते देखा था।

२

तो उसे शेरू से घृणा और भय होना चाहिए था। तब वह तेरह वर्ष का था। वह एक बारहसिंगा मार चुका था और सैम फादर्स ने गरम खून का टीका उसके माथे पर लगाया था। अगले नवम्बर में उसने एक रीछ का शिकार भी किया। लेकिन इन सब कामों के लिए प्रशंसा पाने से पूर्व ही वह अनुभवी शिकारियों के बराबर ही कुशल और कितने ही परिपक्व अरण्यवासियों से अधिक सक्षम अरण्यवासी बन गया था।

कैम्प के इर्द-गिर्द पच्चीस मील के इलाके में वह हर नाले, हर टीले, हर रास्ते और पथ-सूचक हर वृक्ष को जानता था। वह किसीको भी किसी विशेष स्थान पर ले जाकर वापस ला सकता था। वह जानवरों का पीछा करने के ऐसे रास्ते जान गया था जिन्हें सैम फादर्स भी न जानता था। तीसरे पतझड़ में उसने खुद ही बारहसिंगों का एक शयन-स्थान ढूंढ़ निकाला और अपने चचेरे भाई को बताए बिना ही, यह वाल्टर इवेल से बन्दूक लेकर भोर में वहां आ बैठा था और सैम द्वारा बताए हुए आदिवासियों के तरीके से, उसने बारहसिंगे के घर लौटने पर उसे मार डाला।

अब वह अपने पदचिह्नों से भी अधिक बूढ़े भालू के पदचिह्न पहचानने लगा था। केवल उसके टूटे हुए पैर का चिह्न ही नहीं, वह तीन पैरों में से किसीका भी निशान देखकर यह बता सकता था कि यह किस पैर का निशान है और यह पहचान उसके पांव के आकार के कारण ही नहीं होती थी। पचास मील के इलाके में और भी कई भालू थे, जिनके पैर के निशान करीब-करीब उतने ही बड़े थे, और उन निशानों को एक दूसरे के निकट रखकर ही बड़े निशान का पता चल सकता था। पर बात यहीं तक न थी। यदि सैम फादर्स उसका गुरु था और खरगोशों और गिलहरियों के बीच उसका पिछला जीवन उसकी पाठशाला थी, तो वह जंगल, जिसमें बूढ़े भालू का साम्राज्य था, उसका कालेज था और बूढ़ा भालू स्वयं जो अभी तक पत्नीहीन और सन्तानहीन बना रहकर मानो अपना ही लिंगरहित जन्मदाता बन गया था, उसका विश्वविद्यालय था।

वह जब चाहता कैम्प से दस मील या पांच मील या इससे भी कम दूरी पर बूढ़े भालू के टूटे पैर के निशान पा सकता था। अगले तीन वर्षों में दो दफा अपने मचान पर खड़े रहकर उसने बूढ़े भालू का पीछा करते हुए कुत्तों की भूंक और चीख सुनी थी, जिसमें घोर निराशा थी, बहुत

कुछ मानव वेदना की-सी चीत्कार थी। एक बार वाल्टर इवेल की बन्दूक लेकर शिकार करते समय वह उसे फिर दिखाई दिया; तूफान में गिरे पेड़ों को पार करता हुआ। टूटे पेड़ों के तनों और डालों के बीच से होता हुआ, रेल के इंजन की तरह तेज़ी से, बहुत तेज़ी से, एक हिरन से भी ज़्यादा तेज़ी से चला जा रहा था क्योंकि उतना ही समय एक हिरन हवा में छलांग लगाने में लगाता था, और तब इसाक की समझ में आया कि क्यों बूढ़े भालू का रास्ता रोक सकने वाले कुत्ते में न केवल असाधारण साहस ही होना चाहिए था बल्कि उसका आकार बहुत बड़ा और तेज गति भी होनी चाहिए थी। इसाक के अपने घर में एक कुत्ता था, बहुत छोटा-सा, एक बड़े चूहे जितना बड़ा और उसमें उस तरह की हिम्मत थी जो बेवकूफी समझी जाने लगी थी। एक बार गर्मियों में वह अपने साथ उस छोटे से कुत्ते को इस तरह लेकर आया कि मानो किसी आदमी से मुलाकात कराने ले जा रहा हो। उसके अपने हाथों में वह बचकाना कुत्ता था जिसके सिर पर उसने एक बोरा डाल रखा था। साथ में सैम फादर्स था। वे दोनों बूढ़े भालू की तलाश में निकल पड़े और दरअसल उन्होंने उसे घेर लिया। वे उसके इतने पास आ गए कि वह सहसा एक बड़े साइप्रस के तने के पीछे मुड़ गया। इसाक को लगा कि भालू उठता जा रहा था, अधिकाधिक ऊंचा उठता जा रहा था, हालांकि उसने बाद में महसूस किया कि छोटे कुत्ते की चीख-चिल्लाहट सुनकर आश्चर्य और विस्मय के साथ ही भालू ने ऐसा किया था। छुटके कुत्ते की चीख सुनकर सैम के साथ आए दोनों कुत्तों में भी एक प्रकार की निर्भयता और साहस आ गया था। तभी इसाक की समझ में आया कि छोटे कुत्ते का भौंकना रुकने वाला न था और वह अपनी बन्दूक ज़मीन पर पटक आगे बढ़ गया। जब उसने रोते-चिल्लाते, उन्मत्त कुत्ते को जा पकड़ा तो उसे लगा कि उस समय वह खुद ठीक भालू के नीचे था। उसे भालू की गंध आ रही थी,

तीक्ष्ण, उष्ण, उग्र। उसने तिरछे होकर ऊपर की ओर देखा जहां वह वज्रसम विशालकाय भालू खड़ा था। वह स्वरूप उसने पहले भी देखा था, उसे ख्याल आया ठीक वैसा ही स्वरूप उसने स्वप्न में देखा था।

तब भालू गायब हो गया। इसाक ने उसे जाते नहीं देखा। वह चीखते-चिल्लाते कुत्ते को पकड़कर झुका बैठा था और दोनों बड़े कुत्तों का विलाप सुन रहा था कि इतने में ही हाथ में बन्दूक लिए सैम आ पहुंचा। सैम बन्दूक को धीरे से लड़के के पास रखकर चुपचाप खड़ा रहा।—अब तो तुम हाथ में बन्दूक लेकर भी उसे दो बार देख चुके—उसने कहा।—इस बार तो चूकने का कोई सवाल ही न था।

लड़का उठ खड़ा हुआ। उसके हाथों में छोटा कुत्ता अब भी था। और वह अभी तक बड़े कुत्तों की दूर होती हुई आवाज़ की ओर मुंह बाए पागल कुत्ते की तरह लगातार भौंकता जा रहा था। लड़का कुछ-कुछ हांफ रहा था।—तुम भी तो नहीं मार सके।—उसने कहा—तुम्हारे पास भी तो बन्दूक थी। फिर तुमने उसे क्यों नहीं मारा ?

सैम ने मानो सुना ही न हो। उसने हाथ बढ़ाकर छोटे कुत्ते को छुआ, जो उस समय लड़के की बाहों में भी घिघिया रहा था, हालांकि दोनों शिकारी कुत्तों की आवाज़ अब बिलकुल न सुनाई दे रही थी।—भालू जा चुका है—सैम ने कहा—अब चुप हो जा, अगली बार शोर मचाना।—वह कुत्ते को थपथपाने लगा, और धीरे-धीरे शान्त होने लगा।—तुझे ही तो हम चाहते हैं। बस, तू काफी बड़ा नहीं है। अभी तक हमारा बड़ा कुत्ता नहीं आया। भालू को रोकने के लिए थोड़ा और बड़ा तथा थोड़ा और बहादुर कुत्ता चाहिए।—सैम ने कुत्ते को थपथपाना बन्द कर दिया और वह उस ओर देखने लगा जिधर भालू और उसका पीछा करते हुए दोनों शिकारी कुत्ते चले गए थे।—कोई न कोई किसी न किसी दिन यह काम करेगा ही।

'मैं जानता हूं', लड़के ने कहा ।—हम लोगों में से ही किसीको करना होगा । इसीलिए यह अपनी जिन्दगी की नियत मियाद पूरी किए बिना न मरेगा । वह तभी मरेगा जब खुद जिन्दा रहना न चाहेगा ।

इसीलिए उसे शेरू से घृणा और भय होना चाहिए था । यह चौथे साल की गर्मियों की बात है, जब वह चौथी बार मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन की सालगिरह मना रहा था । कुछ महीने पहले ही मेजर द स्पेन की घोड़ी ने एक नर-बच्चा पैदा किया था । एक दिन शाम को जब सैम घोड़ों और खच्चरों को अस्तबल में लाया तो वह बच्चा नदारद था । सैम बड़ी मुश्किल से उसकी उन्मत्त मां को अस्तबल में रात के लिए ला पाया । सैम से शुरू में सोचा कि वह घोड़ी को उस जगह तक ले जाकर देखेगा जहां कि उसका बच्चा उससे बिछुड़ा था । लेकिन घोड़ी ने जाने से इंकार कर दिया । वह जंगल के किसी हिस्से या किसी भी दिशा में जाने को तैयार न थी । वह केवल दौड़ती रही, डर के मारे अंधाधुंध दौड़ती रही । एक बार सैम की ओर भी दौड़ी आई, भयानक उद्दण्डता के साथ, मानो अन्ततः निराश होकर उसपर हमला करना चाहती हो, मानो उस समय वह यह भूल चुकी हो कि सैम एक आदमी था, एक पुराना, परिचित आदमी । आखिर जैसे-तैसे सैम ने उसे अस्तबल में बंद किया । उसे जंगल में रास्ता दिखाने को, अपना अनिश्चित पथ खोज निकालने को ले जाने का समय न था, काफी अंधेरा हो चुका था ।

घर आकर सैम ने मेजर द स्पेन को बताया । ज़रूर ही घोड़ी का बच्चा मारा जा चुका था, चाहे कहीं भी हो और उसे मारा भी किसी बड़े जानवर ने था । वे सब यह जानते थे ।—चीता होगा—जनरल काम्पसन ने फौरन कहा—वही जो पिछले मार्च एक हिरनी और उसके बच्चे को मार गया था—इस बात की खबर सैम ने बून हागनबेक द्वारा

मेजर द स्पेन के पास भिजवाई थी—हिरनी का गला फाड़ डाला गया था और जानवर ने बच्चे को कुचलकर मार डाला था।

'लेकिन सैम ने यह कभी नहीं कहा कि वह चीता था', मेजर द स्पेन ने कहा। सैम उस समय भी कुछ नहीं बोला। वह उन लोगों के पीछे, जहां वे खाना खा रहे थे, खड़ा रहा मानो बातें बंद होते ही अपने घर जाने के इन्तज़ार में हो।—चीता हिरनी को मार सकता है और बाद में उसके बच्चे को भी खा सकता है। लेकिन वह घोड़े के बच्चे पर हमला नहीं कर सकता, जबकि घोड़ी वहां मौजूद हो। वह जरूर ही बूढ़ा भालू होगा, सैम !—मेजर द स्पेन कहते गए—मुझे उसके बारे में बड़ी निराशा है : उसने सारे कायदे-कानून तोड़ डाले हैं। मैं सोच नहीं सकता था कि वह ऐसा करेगा। उसने मेरे और मैककैस्लिन के कुत्तों को मार डाला था, पर वह कोई आपत्ति की बात नहीं। हमने कुत्तों से उसके साथ जूआ खेला था। हम एक दूसरे के विषय में सचेत थे। लेकिन अब उसने मेरे घर में घुसकर मेरी सम्पत्ति नष्ट की है। और फिर बेमौसम। उसने कायदे-कानून तोड़ डाले हैं। सैम, यह बूढ़े भालू का ही काम है।—सैम फिर भी कुछ न बोला, चुपचाप खड़ा मेजर द स्पेन की बातें रुकने का इन्तज़ार करता रहा।—कल हम घोड़ी को जंगल में फिर उसके रास्ते पर ले चलेंगे और देखेंगे—मेजर द स्पेन ने कहा।

सैम चला गया। वह कैम्प में लोगों के साथ नहीं रहता था। उसने दो फर्लांग दूर अपने लिए एक झोपड़ी बना रखी थी जिसमें एक छोटा-सा कठघरा था और उसमें वह कुछ अनाज जमा कर रखता था। अगले दिन सुबह वह दूसरे लोगों के जागने का इंतजार कर रहा था। उसने मरे हुए घोड़ी के बच्चे को ढूंढ़ निकाला था। बाकी लोगों ने यह खबर सुनकर नाश्ते का भी इंतजार न किया। अस्तबल से पांच सौ गज़ की दूरी

पर ही तीन महीने का वह बच्चा मरा पड़ा था, उसका गला फाड़ डाला गया था और उसकी अंतड़ियां और एक जांघ अधूरी खाई जा चुकी थी। वह इस तरह न पड़ा था कि जैसे गिर गया हो बल्कि जैसे पकड़कर फेंका गया हो और उसपर कहीं किसी पंजे का निशान न था, जो चीते द्वारा पकड़े जाने पर जरूर होता। उन्होंने उस जगह को गौर से देखा जहां उन्मत्त घोड़ी ने चक्कर लगाए थे। और फिर जहां से वह निराशा में भागी थी। वहां डरकर भागे हुए घोड़ी के बच्चे के और उस बूढ़े भालू के पैरों के निशान थे जो अपने शिकार को पकड़ने के लिए दौड़ा न था बल्कि जिसके तीन-चार पग बढ़ाते ही घोड़ी का बच्चा स्वयं समर्पण कर बैठा था। और जनरल काम्पसन बोले—हे भगवान्! कैसा भेड़िया था।

फिर भी सैम कुछ न बोला। लड़का उसे देखता रहा और दूसरे लोग पैरों के निशानों की परस्पर दूरी नापने में लगे रहे। अब सैम के चेहरे में एक नई-सी चीज़ दिखाई देने लगी थी; वह उल्लास न था, न हर्ष और न आशा। बाद में बड़ा हो जाने पर इसाक ने जाना कि सैम के मुंह पर झलकने वाली चीज़ क्या थी और यह भी जाना कि सैम शुरू से ही जानता था कि हिरनी और उसके बच्चे को किसने मारा था और उस दिन सुबह यही पूर्व ज्ञान उसके मुख पर झलक रहा था। और वह खुश था, इसाक ने महसूस किया। वह बूढ़ा था। उसका कोई बाल-बच्चा, सगा-सम्बन्धी न था, धरती पर उसे अपने खून का कोई आदमी शायद ही कभी मिल सकता था। और अगर मिल भी जाता तो वह उसे छू न सकता था, उससे बात न कर सकता था क्योंकि पिछले सत्तर साल से वह नीग्रो की हैसियत से रहता आया था। अब किस्सा खत्म हो चुका था और वह खुश था।

कैम्प लौटकर उन लोगों ने नाश्ता किया और फिर बंदूकों और

शिकारी कुत्तों को साथ ले वे निकल पड़े। बाद में इसाक ने महसूस किया कि वे सब भी सैम फादर्स की तरह जानते थे कि घोड़ी के छोटे बच्चे को किसने मारा था। लेकिन लोगों को अपनी भ्रामक धारणाओं को बुद्धिसंगत सिद्ध करते और यहां तक कि क्रियान्वित करते देखने का इसाक के लिए यह पहला और आखरी मौका न था। बून ने मरे हुए घोड़े के पास खड़े होकर चाबुक की फटकार से शिकारी कुत्तों को दूर हटाया तो वे जानवर की राह सूंघने लगे। एक नया, नौजवान कुत्ता समझे-बूझे बिना ही भौंक उठा और दो-चार कदम तक सारे कुत्ते उसके इशारे पर आगे बढ़े। फिर वे रुक गए और लोगों की तरफ देखने लगे, उत्सुकता या आश्चर्य से नहीं, मात्र यह पूछते-से कि अब क्या करें? फिर वे मरे घोड़े के बच्चे की तरफ दौड़े और उसकी बगल में खड़े बून ने अपना चाबुक फटकारा।

'राह की बू इतनी जल्दी गायब हो जाते मैंने पहले कभी नहीं देखा', जनरल काम्पसन ने कहा।

'हो सकता है कोई बहुत बड़ा भेड़िया रहा हो, जिसने घोड़ी के बगल में ही उसे मारा हो और बू न छोड़ी हो।' मेजर द स्पेन ने कहा।

'हो सकता है कोई दूसरा जानवर रहा हो', वाल्टर इवेल ने कहा। वह टेनी के बेटे जिम की ओर देख रहा था—क्यों जिम?—उसने पूछा।

शिकारी कुत्ते आगे का रास्ता नहीं खोज पा रहे थे, मेजर द स्पेन ने सैम को आगे एक सौ गज तक का रास्ता देखने भेजा और पीछे-पीछे कुत्तों को लगा दिया। फिर वही नया शिकारी कुत्ता भौंकने लगा, मगर किसीने महसूस नहीं किया कि उसकी भौंक एक हमलावर की-सी नहीं बल्कि अपने घर पर हमला होने पर भौंकने वाले देहाती कुत्ते की-सी थी। जनरल काम्पसन ने इसाक और बून और टेनी के बेटे जिम से, जो गिलहरी का शिकार करने वाले समझे जाते थे, कहा—तुम लोग आज

सुबह कुत्तों को अपने साथ रखो। शायद वह यहीं कहीं छिपा मरे घोड़े का नाश्ता करने के इंतजार में बैठा हो। हो सकता है, तुम्हीं उसे मार डालो।

लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसाक को याद आया कि शिकारी कुत्तों के साथ आगे बढ़ते हुए लोगों को सैम एक अजीब तरीके से देखता रहा था। वैसे उसके चेहरे पर मुस्कराहट आने से पहले कभी कुछ न-दिखाई देता था या कभी-कभी नथने फूलने लगते थे जैसे उस दिन हुआ जब कुत्तों ने बूढ़े भालू को घेर लिया था। फिर वह अगले दिन शिकारी कुत्तों को लेकर निकले और जब मौके पर नया सुराग पाने की आशा से पहुंचे तो उन्होंने देखा कि मरे घोड़े का बचा-खुचा भाग गायब हो चुका है। फिर तीसरे दिन सुबह जब वे नाश्ता कर रहे थे, सैम आ खड़ा हुआ और उसने कहा—आओ चलो।—वह उन्हें अपनी छोटी झोंपड़ी में ले आया जहां उसने एक पक्का फंदा बना रखा था और ललचाने के लिए मरे घोड़े का ढांचा लटका रहा था। उन लोगों को लकड़ी के लट्ठों के बीच से एक जानवर दिखाई दिया जिसका रंग बंदूक या पिस्तौल की नली-सा काला था। वह खड़ा या बैठा न था, हवा में कूद रहा था, उन्हीं लोगों की तरफ आ रहा था। एक भारी शरीर दरवाजे से टकराया और दरवाजे का अंजर-पंजर हिल उठा। उस अज्ञात जानवर ने फिर टक्कर मारी। और दरवाजा बुरी तरह चरमरा उठा।—चले आओ—सैम ने कहा—तोड़ने दो उसे अपनी गर्दन।—वे लोग आए और टकराहट काफी देर तक सुनाई देती रही, लेकिन जानवर की आवाज़, उसकी चिल्लाहट या गुर्राहट कुछ भी न सुनाई दी।

'आखिर यह बला क्या है?' मेजर द स्पेन ने पूछा।

'कुत्ता है', सैम ने कहा। उसके नथने थोड़े-थोड़े फूलने लगे और उसकी आंखों में वही चमक दिखाई देने लगी जो इसाक ने उस दिन सुबह

देखी थी जब कुत्तों ने बूढ़े भालू को घेर लिया था ।

'एक कुत्ता है ।' उसने फिर कहा ।

'कोई खास कुत्ता है ?' मेजर द स्पेन ने पूछा ।

'बूढ़े भालू पर हमला करने वाला कुत्ता है ।'

'कुत्ता क्या शैतान है ?' मेजर द स्पेन ने कहा—मैं अपने कुत्तों के गिरोह में इसे रखने के बजाय बूढ़े भालू को रखना बेहतर समझूंगा। फौरन गोली से उड़ा दो इसे ।

'नहीं,' सैम ने कहा ।

'तुम उसे कभी भी पाल न सकोगे । तुम ऐसे जानवर को डराकर पालतू कैसे बना सकते हो ?'

'मैं इसे पालतू बनाना भी नहीं चाहता,' सैम ने कहा । इसाक ने फिर सैम के नथनों को फूलते और उसकी आंखों में चमक आते देखा ।—मैं नहीं चाहता कि यह पालतू बने और मुझसे या किसी और आदमी से या किसी और चीज़ से डरे। लेकिन जानता हूं कि न वह पालतू बनेगा और न किसीसे डरेगा ।

'तब तुम इसका क्या करोगे ?'

'देखते जाओ ।' सैम ने कहा ।

अगले हफ्ते हर दिन सुबह सैम की कोठरी के आगे सब जाते । उसने छत से कुछ कड़ियां सरका दी थीं, घोड़े के बच्चे की गर्दन में एक रस्सी का फंदा डाल दिया था । हर सुबह सैम एक खुले बर्तन में पानी भरकर सरका देता और वह कुत्ता लगातार दरवाजे से टक्कर लेता रहता, गिरता, उठता, टक्कर लेता और गिरकर उठता । कुत्ते के मुंह से कभी कोई आवाज़ न निकलती, उसमें प्रचण्डता होते हुए भी क्रोध न था। केवल एक दृढ़, अडिग संकल्प था । सप्ताह के अंत तक कुत्ते ने दरवाजे से टकराना बंद कर दिया। फिर भी उसमें कोई खास कमजोरी न आई

थी, और न उसने यही मान लिया था कि दरवाजा टूटना असम्भव था। ऐसा लगता था मानो उसे टक्कर लेने का काम ही अब तुच्छ लग रहा हो। वह थककर धरती पर बैठ नहीं गया था, उसे बैठा हुआ कभी किसीने देखा ही नहीं। वह खड़ा रहता था, और उन्होंने उसे देखा, सब तरह की नस्लों से बना एक कुत्ता जिसके कंधों की चौड़ाई तीस इंच से ऊपर थी और वज़न अन्दाजन नब्बे पौंड था। उसकी आंखें पीली थीं और छाती बेहद चौड़ी थी और शरीर का आश्चर्यजनक रंग बंदूक की नली-सा नीला था।

और फिर दो हफ्ते का नियत समय पूरा हो गया। कैम्प उठाने की तैयारियां होने लगीं। लड़के ने वहीं रहने की इजाजत मांगी और उसका चचेरा भाई मान गया। वह सैम फादर्स की झोपड़ी में चला आया। हर सुबह वह उस कुत्ते के लिए सैम को पानी भरा बर्तन सरकाते हुए देखता। उस हफ्ते के अन्त तक कुत्ता बैठ गया। वह उठता और लड़खड़ाता हुआ पानी के बर्तन तक जाता और पानी पीकर फिर गिर पड़ता। आखिर एक सुबह उसमें पानी के बर्तन तक उठकर जाने की भी ताकत न रही। सैम एक छोटी-सी छड़ी लेकर कुत्ते के कठघरे में घुसने लगा।—ठहरो, मैं बन्दूक ले आऊं—लड़के ने कहा।

'नहीं,' सैम बोला।—अब यह हिल तक नहीं सकता।—दरअसल, कुत्ते की यही हालत थी। सैम उसके सिर और कन्धे को छू रहा था और वह अपनी पीली निश्चल आंखों को खोले जड़वत् पड़ा था। उसकी आंखों में भीषणता न थी और न उनमें दुर्भाव था, केवल किसी नैसर्गिक बल की भांति भावहीन अवैयक्तिक विद्वेष था। वह सैम की ओर या लट्ठों में से झांकने वाले लड़के की ओर तक नहीं देख रहा था।

सैम उसे फिर खाना खिलाने लगा। पहली बार सैम ने खुद उसकी गर्दन उठाकर शोरबा पिलाया। उस रात सैम एक बर्तन में शोरबे के

साथ गोश्त के कुछ टुकड़े कुत्ते की पहुंच के भीतर छोड़ गया। दूसरे दिन बर्तन खाली था और कुत्ता सिर उठाए पेट के बल बैठा था। उसने सैम को अन्दर दाखिल होते देखा लेकिन उसकी पीली आंखों में कोई परिवर्तन न आया और यहां तक कि जब वह सैम की ओर उछला तो उसके मुंह से कोई आवाज न निकली। सैम झट से कूदकर बाहर आ गया। और कुत्ता फिर दरवाजे से टक्कर लेने लगा मानो दो सप्ताह का उपवास हुआ ही न हो।

उस दिन दोपहर में कैम्प की दिशा से खांसता हुआ बून चला आया। उसने लट्ठों में से झांककर उस भीमकाय कुत्ते को देखा जो अपने पेट के बल लेटा सिर उठाए था और उसकी पीली आंखें, कुछ न देखती हुई उनींदी-सी थीं, और उसकी आत्मा अब भी अडिग अजेय थी। बून ने कहा—इस कुतिया के बच्चे को फौरन बूढ़े भालू से भिड़ा देना चाहिए। —उसने धूप और ठंडी हवाओं के थपेड़े खाए हुए अपने लाल चेहरे को इसाक की ओर फेरते हुए कहा—अपना सामान बांध लो। कैस ने तुम्हें घर बुलाया है। यहां बेकार काफी दिनों से अपना वक्त खराब कर रहे हो।

बून कैम्प से एक खच्चर लेकर जंगल में आया था। जंगल के बाहर सड़क पर बग्घी उसका इन्तजार कर रही थी। वह उसी रात घर लौट गया। इसाक ने मैककैस्लिन को बताया—सैम उसे तब तक भूखा रखेगा जब तक कि उसे बेधड़क छूने न लगेगा। फिर उसे खाना देगा, और अगर ज़रूरी होगा तो फिर उसे भूखा रखेगा।

'लेकिन क्यों?' मैककैस्लिन ने पूछा—आखिर किस लिए? सैम भी उस जंगली जानवर को कभी पालतू न बना पाएगा।

'हम उसे पालतू नहीं बनाना चाहते। वह जैसा है वैसा ही हम चाहते हैं। हम सिर्फ चाहते हैं कि वह इतना समझ ले कि इस कैद से छुटकारा

पाने और आजाद रहने के लिए उसे सैम का या और किसी का कहना मानना होगा। यही है वह कुत्ता जो बूढ़े भालू को रोकेगा और उसपर हमला करेगा। हमने उसका नामकरण भी कर लिया है। उसका नाम शेरू है।'

आखिर, नवम्बर का महीना आया। सब लोग कैम्प में आ पहुंचे। जनरल काम्पसन और मेजर द स्पेन और अपने चचेरे भाई वाल्टर के साथ इसाक खड़ा था और उसके इर्द-गिर्द बन्दूकें, बिस्तरे और खाने-पीने की चीजों के बक्स रखे थे। उसने सामने की गली में से सैम फादर्स और शेरू को आते देखा। सैम अपने फटे कपड़ों, रबर के जूते और इसाक के पिता का एक पुराना टोप पहने हुए था और साथ में था गम्भीरतापूर्वक आगे बढ़ता हुआ विराट कुत्ता। शिकारी कुत्ते उन्हें देख आगे बढ़े और फिर रुक गए। पर वह नया कुत्ता, जिसमें समझ की कमी थी, आगे ही बढ़ता रहा। वह खेलता हुआ शेरू के पास चला आया। शेरू ने उसे भगाने के लिए मुंह तक न खोला और न वह ठिठका ही। चलते-चलते ही उसने ठीक रीछ की तरह एक ऐसा पंजा मारा कि छोटा कुत्ता चीखता-चिल्लाता पांच-छः फुट की दूरी पर जा गिरा। फिर वह चहारदीवारी के भीतर खड़ा हो गया। उनींदा-सा किसीकी ओर भी न देखता हुआ आंखें झपकाता खड़ा हो गया।—हे भगवान !—बून ने कहा—क्या मैं इसे छू भी सकूंगा ?

'छू सकते हो,' सैम ने कहा—उसे परवाह नहीं। वह किसी आदमी या किसी भी चीज की परवाह नहीं करता।

लड़के ने यह दृश्य भी देखा। जिस दिन पहली बार बून ने झुककर शेरू का सिर छुआ था और फिर उसकी हड्डियों और मांसपेशियों को छू-छूकर उसकी ताकत को महसूस किया था, उस दिन से अगले दो वर्ष तक यही दृश्य रहा। ऐसा लगता था मानो शेरू एक औरत

हो या शायद बून ही औरत हो। यही ज्यादा ठीक था, विशाल, गम्भीर, उनींदा प्रतीत होने वाला कुत्ता जो सैम फादर्स के अनुसार, किसी आदमी या किसी चीज की परवाह न करता था और उग्र संवेदनहीन बून जिसके पत्थर से सख्त चेहरे में आदिवासियों का पुराना खून झलकता था और जिसका मन एक बच्चे का-सा था। इसाक ने बून को सैम फादर्स तथा ऐश चाचा, दोनों से कुत्ते को खिलाने-पिलाने का काम भी खुद लेते देखा। वह बून को रसोई के पास ठंडी वर्षा में जमीन पर बैठे और शेरू को खाते देखता। चूंकि शेरू दूसरे कुत्तों के साथ खाता और सोता न था, इसलिए अगले नवम्बर तक किसी को पता न चला कि वह कहां सोता है, मगर इसाक के चचेरे भाई मैककैस्लिन ने इस बारे में यों ही सैम से जिक्र किया तो सैम ने उसे बताया। और उस रात इसाक और मेजर द स्पेन और मैककैस्लिन एक लैम्प लेकर उस पिछले कमरे में घुसे जहां बून सोता था। वह एक छोटा, तंग कमरा था, जिसमें बून के गन्दे शरीर और उसकी गीली पोशाक की बू आ रही थी। वह खुर्राटे भर रहा था और जैसे ही वह जागा कि उसके पास बैठे हुए शेरू ने अपना सिर ऊंचा उठाया और अपने भावहीन, पीतवर्ण, निद्रालु नेत्रों से आगन्तुकों की ओर देखा।

'हद कर दी बून', मैककैस्लिन ने कहा—इस कुत्ते को यहां से बाहर निकालो। कल सुबह इसे बूढ़े भालू से लड़ना है। कैसे उम्मीद करते हो कि सारी रात तुम्हारी बदबू सूंघते रहने के बाद यह और कुछ सूंघ पाने की हालत में होगा ?

'मुझे तो अपनी गन्ध कभी बुरी नहीं लगी' बून ने कहा।

'बुरी लगे भी तो कोई फर्क नहीं पड़ता', मेजर द स्पेन ने कहा। —भालू का पीछा करने के लिए हम तुम पर निर्भर नहीं कर रहे हैं। कुत्ते को यहां से बाहर निकालो और दूसरे कुत्तों के साथ बन्द करो।

बून उठ खड़ा हुआ—जो भी कुत्ता इसके सामने मुंह फाड़ेगा या इसे छूएगा, यह उसे वहीं मार डालेगा।

'मैं नहीं समझता', मेजर द स्पेन ने कहा—कि कोई भी कुत्ता इसके सामने मुंह फाड़ने की हिम्मत करेगा। वे खुद ही इससे दूर रहेंगे। बाहर निकालें इस कुत्ते को। कल सुबह इसकी नाक ताज़ी होनी चाहिए। बूढ़े भालू ने पिछले साल इसे छकाया था। मैं समझता हूं इस बार ऐसा न हो पाएगा।

बून ने फीते बांधे बिना ही जूते पहने और अपने गन्दे जांघिए पहने तथा अपने अस्तव्यस्त बाल लिए शेरू को अपने साथ लेकर बाहर निकल आया। दूसरे लोग सामने के कमरे में चले आए जहां उस समय ताश की बाजी मैककैस्लिन और मेजर द स्पेन का इन्तजार कर रही थी। कुछ देर बाद मैककैस्लिन ने पूछा—क्या मैं फिर जाकर देखूं कि उसने कुत्ता बाहर निकाला है या नहीं ?

'नहीं', मेजर द स्पेन ने कहा—मैं आवाज़ देता हूं—उन्होंने वाल्टर इवैल से कहा। और फिर मैककैस्लिन से बोले—अगर जाकर देखना है तो मुझे मत बताओ, अब मुझे अपने बुढ़ापे के प्रथम चिह्न दिखाई देने लगे हैं। मैं यह नहीं सुनना चाहता कि मेरा हुक्म नहीं माना गया हालांकि हुक्म देते वक्त ही मुझे मालूम था कि वह न माना जाएगा।—तब वाल्टर इवैल ने कहा—एक छोटा जोड़ा।

'कितना छोटा ?' वाल्टर ने पूछा।

'बहुत छोटा', मेजर द स्पेन ने कहा।

और इसाक भी जो सोने की तैयारी में अपनी रजाई और कम्बल में दुबका हुआ था, मेजर द स्पेन की तरह ही सोच रहा था कि शेरू फिर बून के बिस्तरे में चला गया होगा और रात भर वहीं सोएगा, सिर्फ उसी रात नहीं बल्कि सारे महीने और अगले साल के नवम्बर की सारी रातों में

भी वह और बून एक ही बिस्तरे में सोएंगे। और वह फिर सोचने लगा, पता नहीं सैम इस बारे में क्या सोचता होगा। अगर वह चाहता तो शेरू को अपने साथ रख सकता था, हालांकि बून गोरा आदमी जरूर है। सैम मेजर द स्पेन या मैककैस्लिन से इजाजत ले सकता था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि शुरू में सैम ने ही शेरू को छुआ था और शेरू भी इस बात को जानता था। और फिर बड़े होकर इसाक ने इस बात को अच्छी तरह समझा। ठीक ही था कि शेरू बून के पास सोता था। सैम सरदार था, राजा था और बून एक साधारण आदमी था, सैम का शिकारी था, नौकर था। उसे ही कुत्तों की देखभाल करनी चाहिए थी।

पहले दिन सुबह, जब शेरू के नेतृत्व में शिकारी कुत्तों का दल बूढ़े भालू पर हमला करने चला तब सात अजनबी कैम्प में आए। वे लोग मलेरिया के मारे, फटे चिथड़ों में और पुरानी बन्दूकें हाथों में लिए न मालूम कहां से आ गए थे। वे लोग जंगल में छोटा-मोटा शिकार करते थे या उनमें से कुछ जंगल के किनारे कपास और मक्का की खेती करते थे। उनके कपड़े सैम फादर्स से कुछ ही अच्छे थे और जिम से घटिया थे। पुरानी बंदूकें और राइफिलें उनके पास थीं और वे ठंडी फुहारों में बगल वाले आंगन में प्रातःकाल धैर्य से बैठे दिखाई दिए। सैम ने मेजर द स्पेन को बताया कि पिछले दिनों गर्मियों और शरद् भर वे लोग दो-दो या तीन-तीन करके या अकेले शेरू को देखने आते और चुपचाप देख-कर चले जाते थे। उनका एक मुखिया भी था।—गुड मौर्निंग मेजर—उसने कहा—हमने सुना था कि आज सुबह आप अपने नीले कुत्ते को दो अंगुलियों वाले भालू से भिड़ाना चाहते हैं। हमने सोचा, अगर आपकी इजाजत हो तो हम भी चल कर देख लें। जब तक वह हम पर हमला न करेगा, हम गोली नहीं चलाएंगे।

'आप लोगों का स्वागत है,' मेजर द स्पेन ने कहा ।—आप गोली भी चला सकते हैं । आखिर, यह भालू हमसे ज्यादा आपका ही तो है ।

'आप ठीक ही कहते हैं', एक आगन्तुक ने कहा—मैं इस भालू को अपने कई जानवर खिला चुका हूं, इसलिए उसमें मेरा हिस्सा भी है ।

'मैं समझता हूं, मेरा भी कुछ हिस्सा है', दूसरे ने कहा—पिछले साल यह मेरा एक बछड़ा उठा ले गया था और उसका वही हाल किया जो कि पिछले जून में उसने आपकी घोड़ी के बच्चे का किया था ।

'आप सब लोगों का स्वागत है', मेजर द स्पेन ने कहा—अगर आप-को हमारे कुत्तों के आगे कोई भी शिकार दिखाई दे तो आप उसे बखूबी मार सकते हैं ।

उस दिन किसीने भी बूढ़े भालू पर गोली न चलाई । कोई भी उसे देख न पाया । कुत्तों ने जंगल के बीच के उस खुले स्थान पर, जहां इसाक ने अपने ग्यारहवें वर्ष में एक बार उसे देखा था, एक सौ गज की दूरी से उस-पर हमला किया । उस समय इसाक कोई दो फर्लांग की दूरी पर होगा । उसे कुत्तों के पैरों की ध्वनि सुनाई दी थी, पर कोई अपरिचित आवाज़ सुनाई न दी जिससे वह समझ सकता कि शेरू भी उन कुत्तों के साथ था । वे इतनी तेजी के साथ दौड़ रहे थे, जितना तेज दौड़ते हुए इसाक ने उन्हें पहले कभी न सुना था और न उनकी आवाज़ों में वह भय था जो हमेशा सुनाई देता था । पर इतने से भी उसे उनमें शेरू का पता न चल सकता था । सैम ने उस रात इसाक को बताया कि शेरू पीछा करते समय गुर्राता नहीं है । सैम ने कहा—वह तभी गुर्राएगा जब बढ़े भालू की गर्दन पर सवार हो सकेगा । उससे पहले नहीं । तुम्हें याद होगा, दरवाज़े पर टक्कर मारते वक्त भी वह गुर्राता नहीं था । इसमें उस नीले का खून है । क्या कहते हो तुम उसे ?···

'आयरडेल' लड़के ने कहा।

शेरू वहीं था; दौड़ने की आवाज़ बिल्कुल नदी के पास थी। जब उस रात करीब ग्यारह बजे शेरू के साथ बून वापस लौटा तब उसने कसम खाकर कहा कि शेरू ने एक बार बूढ़े भालू को रोक लिया था लेकिन दूसरे शिकारी कुत्ते आगे न बढ़ पाए। बूढ़ा भालू निकल भागा और नदी के जल में घुसकर कई मील तक तैरता चला गया और करीब दस मील तक किनारे-किनारे बून और शेरू उसका पीछा करते रहे। और फिर नदी पार करके दूसरे किनारे चले। फिर रात हो गई और यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि वह नदी से कहां निकला था या उस समय भी पानी में ही था। बून बाकी शिकारी कुत्तों को गाली देता हुआ खाना खाता रहा और फिर सोने चला गया। कुछ देर बाद लड़के ने उसके बदबूदार कमरे का दरवाज़ा खोला जहां से खुर्राटों की आवाज़ आ रही थी। दरवाजा खुलते ही शेरू ने बून के तकिए से सिर उठाकर इसाक की ओर देखा, एक क्षण को आंखें झपकाईं और फिर सिर नीचा कर लिया।

जब अगला नवम्बर और फिर आखिरी दिन आया, जो परम्परा से बूढ़े भालू के लिए पहले से ही तय होता था, तब फिर एक दर्जन से ज्यादा अजनबी इन्तज़ार में बैठे थे। इस बार सभी जंगल में रहने वाले लोग न थे। कुछ शहरी लोग भी थे जो दूसरे जिलों से दूर-दूर के शहरों से आए थे। उन्होंने शेरू और बूढ़े भालू के बारे में सुन रखा था और वे उस बड़े नीले कुत्ते व टूटे पंजे वाले भालू की सालाना दौड़-धूप देखने आए थे। कुछ लोगों के पास बन्दूकें तक न थीं और कुछ-एक की शिकारी पोशाक और बूट बिल्कुल नए थे मानो कल ही खरीदे गए हों।

इस बार शेरू ने नदी से पांच मील की दूरी पर बूढ़े भालू को घेरा और उसका रास्ता रोक लिया। इस बार शिकारी कुत्तों ने भी साहस-

पूर्वक शेरू का अनुसरण किया । इसाक इतना निकट था कि कुत्तों की आवाज़ सुन रहा था । उसने बून को खांसते सुना, जनरल काम्पसन की दोनली बन्दूक से दो बार फायर होते सुना और जान लिया कि वे गोलियां बूढ़े भालू के शरीर में घुस चुकी थीं, क्योंकि वह मौके से ज़्यादा दूर न था । भालू के फिर भागने पर उसने शिकारी कुत्तों को भौंकते सुना । अब वह खुद भी दौड़ रहा था । हांफता, लड़खड़ाता हुआ वह उस जगह आ पहुंचा जहां से जनरल काम्पसन ने गोली चलाई थी और जहां बूढ़े भालू ने दो शिकारी कुत्तों को मार डाला था । इसाक ने जनरल काम्पसन की गोली से बहे खून को देखा, मगर इसने ज्यादा आगे वह न जा सका । वह एक पेड़ के सहारे रुक गया ताकि उसके दिल की धड़कन कम हो जाए, और वहीं खड़े हुए शिकारी कुत्तों की दूर होती हुई आवाज सुनता रहा ।

उस रात कैम्प में डरे, घबराए, पांच अजनबी आदमी नई शिकारी पोशाकों और नए बूटों में बैठे थे । वे सारे दिन रास्ता खोकर जंगल में भटकते फिरे थे और आखिर सैम उन्हें ढूंढ़कर लाया था । इसाक ने बाकी कहानी भी सुनी कि किस तरह शेरू ने भालू को फिर रोका और उस-पर हमला किया था, लेकिन सिर्फ काना खच्चर जो जंगली जानवरों के खून की गंध सहन कर सकता था, भालू के पास जाने की स्थिति में था और इस पर बून सवार था । बून ने कभी किसी जावनर को मारा न था । बून ने अपनी बन्दूक से बूढ़े भालू पर पांच बार गोली चलाई पर भालू पर कुछ असर न हुआ और इस बीच भालू ने एक शिकारी कुत्ते को मार डाला और दौड़कर नदी की ओर भागकर गायब हो गया । बून और शेरू ने नदी के किनारे-किनारे फिर उसका पीछा किया । वे बहुत दूर तक चले गए और इस बार शेरू के लिए भालू के खून की गन्ध से आगे का रास्ता पता लगाना मुश्किल न था । वे ठीक उसी जगह आ

पहुंचे जहां बूढ़ा भालू नदी से निकला था, लेकिन बून ने घोड़े से उतर-कर शेरू को रोक लिया। इस बार उसने गाली-गलौज तक न की। वह कीचड़ में लथपथ थका हुआ दरवाजे में खड़ा था और उसके भावना-शून्य मुख पर आंतरिक वेदना अंकित थी और वह अब भी अन्दर था। उसने कहा—मैं चूक गया। मैं भालू से सिर्फ पचीस फुट की दूरी पर था और फिर भी पांच बार चूका।

लेकिन हमने उसे घायल किया है, मेजर द स्पेन ने कहा—जनरल काम्पसन ने उसे घायल किया है। आज से पहले इतना भी न हुआ था।

'लेकिन मैं चूक गया,' बून ने कहा—मैं पांच बार चूक गया। और शेरू ठीक मेरी आंखों में देखता रहा।

'कोई परवाह नहीं,' मेजर द स्पेन ने कहा—बहुत बढ़िया दौड़ हुई। और आखिर हमने खून तो गिराया। अगले साल जनरल काम्पसन या वाल्टर को काने खच्चर पर चढ़ने देंगे और भालू निश्चय ही मारा जाएगा।

फिर मैककैस्लिन ने पूछा—शेरू कहां है बून ?

'मैं उसे सैम के पास छोड़ आया हूं,' बून ने मुंह फेरते हुए कहा—अब मैं उसके साथ सोने लायक नहीं हूं।

तो उसे भी शेरू से घृणा और भय होना चाहिए था। फिर भी उसे न भय हुआ, न घृणा। उसे लगा कि जैसे होना यही था। उसे लगा कि कोई बात, जिसे वह समझ न पा रहा था, शुरू हो रही थी, शुरू हो चुकी थी। सब कुछ एक पूर्व निर्धारित नाटक के अंतिम अंक की भांति था। एक ऐसी चीज़ की समाप्ति का प्रारम्भ था जिसे वह न जानता था। वह केवल यही जानता था कि वह अफसोस न करेगा। वह नम्र होगा और उसे गर्व होगा कि वह भी इस अनुभव को प्राप्त करने योग्य समझा गया।

३

दिसंबर का महीना था। उसने पहले कभी दिसंबर में इतनी ज्यादा सर्दी न देखी थी। उन्हें कैंप में आए दो हफ्ते से चार दिन ऊपर हो चुके थे और वे मौसम सुधरने के इंतजार में थे ताकि शेरू और बूढ़े भालू की सालाना दौड़ हो सके। इसके बाद उन्हें घर लौट जाना था। मौसम खराब था और उन्हें चार दिन अधिक रुकना पड़ा था तथा उनके पास ताश खेलने के अलावा कोई काम न था। उनकी शराब खत्म हो चली थी इसलिए इसाक व बून को एक सूटकेस और शराब-विक्रेता श्री सेमेस के नाम मेजर का एक पत्र लेकर शहर भेजा गया था ताकि वे और शराब ला सकें। मतलब यह है कि मेजर द स्पेन और मैककैस्लिन बून को शराब लाने और साथ में इसाक को इसलिए भेज रहे थे कि बून सारी शराब या अधिकांश शराब या कम से कम कुछ शराब लेकर तो आ ही जाए।

टेनी के बेटे जिम ने इसाक को सुबह तीन बजे जगाया। इसाक ने जल्दी-जल्दी कांपते हुए कपड़े पहने। कांप वह सर्दी से नहीं रहा था क्योंकि चूल्हे में खूब आग जल रही थी, बल्कि शीतकालीन रात्रि में इतने सबेरे रक्त का प्रवाह और हृदय की गति मंद हो गई थी एवं नींद भी पूरी नहीं हुई थी। इसाक ने रसोई और मकान के बीच का हिस्सा पार किया। तारे चमक रहे थे, घोर सर्दी पड़ रही थी। प्रभात होने में तीन घंटे शेष थे। इसाक ने महसूस किया मानो वह अंधकार उसकी जबान पर, उसकी हड्डियों में, उसके तमाम शरीर में घुस गया हो। जब वह रसोई में पहुंचा तब उसने लैंप की रोशनी में, सुलगते हुए चूल्हे के पास बून को बैठे देखा। बून उस समय नाश्ता कर रहा था। उसकी दाढ़ी के

बाल कुछ बढ़े हुए थे और उसके चेहरे ने पानी की तथा उसके बालों ने कंघी की मानो कभी शक्ल ही नहीं देखी थी। उसमें चौथाई इंडियन (अमेरिका की एक आदिवासी जाति) रक्त था और वह चिकासा नामक जाति के एक आदिवासी सरदार का पोता था परंतु दूसरों द्वारा इस ओर इशारा किए जाने पर वह लड़ बैठता था और यह मानने को कभी तैयार न होता था कि उसकी रगों में विजातीय रक्त था। कभी प्राय: शराब पीने के बाद वह उतने ही ज़ोर-शोर के साथ कहता था कि उसका बाप विशुद्ध चिकासा जाति का था और उसकी मां भी केवल आधी ही गोरी थी। वह छः फुट चार इंच लंबा था, उसका दिमाग एक बच्चे का-सा और दिल एक घोड़े का-सा था और उसकी आंखें छोटी-छोटी बटनों-जैसी थीं, जिनमें न गंभीरता थी, न तुच्छता, न उदारता और न दुष्टता। उसके भद्दे चेहरे को देखकर उसके बारे में कुछ पता न लगता था और इसाक ने उसके चेहरे से ज्यादा बुरा चेहरा न देखा था। उसका चेहरा ऐसा था जैसे एक फुटबॉल के बराबर बड़े अखरोट पर किसी मिस्त्री ने अपने हथौड़े से नाक-कान बना दिए हों और फिर उसपर रंग कर दिया हो। उसका रंग इंडियनों का-सा बिल्कुल लाल न था बल्कि उस लाल रंग में एक चमक थी जो शायद ह्विस्की पीने से पैदा हुई थी। वह घर से बाहर खुश और जबर्दस्त रहता था। उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थीं लेकिन वे आयु चालीस वर्ष हो जाने के कारण नहीं थीं बल्कि इसका कारण था कि उसे भागते हुए शिकार का पीछा करते हुए कभी धूप में और कभी अंधेरी झाड़ियों में अधमुंदी आंखों से देखना पड़ता था। वह नवंबर या दिसंबर की सर्दी में धरती पर सोता था ताकि दिन निकलते ही शिकार खेलना शुरू कर सके, मानो समय कोई ऐसी चीज हो जैसे हवा, जिसमें से होकर वह गुज़र जाता है और उसका कुछ नहीं बिगड़ता, और हवा की तरह समय भी उसकी आयु नहीं बढ़ाता। वह साहसी,

स्वाभिभक्त, अदूरदर्शी और गैरजिम्मेदार व्यक्ति था। उसका न कोई काम-धंधा था और न कोई व्यापार-व्यवसाय, और उसमें एक ही दोष था और एक ही गुण था : ह्विस्की और मेजर द स्पेन तथा इसाक के चचेरे भाई मैककैस्लिन के प्रति सम्पूर्ण आस्था और स्वाभिभक्ति।—मैं इन दोनों चीजों को गुण कहूंगा।—मेजर द स्पेन ने एक बार कहा था। —या दोनों को दोष—मैककैस्लिन ने कहा।

नाश्ता करते समय इसाक ने नीचे रसोई से शिकारी कुत्तों की आवाज सुनी जो गोश्त भूनने की गंध पाकर या शायद लोगों की पदध्वनि सुनकर जाग गए थे। उसने शेरू की स्वल्प और तीक्ष्ण आवाज भी एक बार सुनी, जैसे किसी अच्छे शिकारी को बेवकूफों के अलावा और सबसे केवल एक बार बोलना पड़ता है। मेजर द स्पेन और मैककैस्लिन के अन्य कुत्ते शक्ति और आकार में, और शायद साहस में भी शेरू की बराबरी के न थे; परन्तु वे बेवकूफ न थे; बूढ़े भालू ने उनमें से आखिरी बेवकूफ कुत्ते को गत वर्ष ही मार डाला था।

नाश्ता खत्म होते ही टेनी का बेटा जिम आया। बाहर गाड़ी खड़ी थी। ऐश चाचा ने उन्हें काफी दूर तक छोड़ आना तय किया ताकि वे लकड़ी के लट्ठे ढोने वाली रेलगाड़ी पकड़ सकें। टेनी के बेटे जिम को जूठी प्लेटें धोने के लिए कैम्प में ही रहने दिया गया था। इसाक इस बात का कारण जान गया। बूढ़े ऐश को बून को चिढ़ाते वह कई बार पहले भी देख चुका था।

सर्दी पड़ रही थी। धरती पर बरफ जमी थी और उनकी गाड़ी शोर मचाती हुई आगे बढ़ रही थी। आकाश स्थिर और चमकीला था। अब इसाक कांप न रहा था, बल्कि धीरे-धीरे हिल रहा था, और उसने अभी जो खाना खाया था, वह अभी तक उसके पेट में गरम और ठोस था। —आज सुबह वे बूढ़े भालू का पीछा न कर सकेंगे।—उसने कहा—

आज किसी भी कुत्ते में सूंघकर रास्ता ढूंढ़ निकालने की क्षमता नहीं।

'सिवाय शेरू के', ऐश ने कहा।

'शेरू के लिए सूंघना जरूरी नहीं। उसे सिर्फ अपने सामने एक रीछ चाहिए।' ऐश ने अपने पैर बोरियों में छुपा रखे थे और सिर को रजाई से ढक लिया था और उसकी सूरत अजीब-सी दिखाई दे रही थी।—एक हजार एकड़ के बर्फीले मैदान पर शेरू ने एक रीछ का पीछा किया था और उसे पकड़ लिया था। दूसरे कुत्तों का कोई महत्व नहीं क्योंकि वे चाहे जितनी ही कोशिश करें पर शेरू के साथ नहीं चल सकते; जब तक उसके सामने रीछ है।

'दूसरे कुत्तों में क्या कमी है ?' बून ने पूछा—बहरहाल, इस बारे में तुम क्या खाक जानते हो ? आज तुमने पहली बार रसोई से अपनी दुम बाहर निकाली है। तुमने जंगल से लकड़ी काटकर ले आने के अलावा और क्या जाना है ?

'दूसरे कुत्तों में भी कोई कमी नहीं है' ऐश ने कहा—काश, मैं इन कुत्तों की तरह जानता होता कि किस तरह अपनी तन्दुरुस्ती का ख्याल रखा जाता है।

'खैर, आज वे कुत्ते बूढ़े भालू का पीछा न कर सकेंगे' बून ने कहा। उसकी आवाज रूखी, सख्त और निश्चयात्मक थी।—मेजर ने वादा किया है कि जब तक मैं और इसाक लौट न आएंगे वे लोग बूढ़े भालू का पीछा न करेंगे।

'आज मौसम साफ होगा और रात को पानी बरसेगा' कहकर ऐश हंसने और अपनी रजाई में मुंह छिपाकर खिलखिलाने लगा। —चलो खच्चरो, जल्दी दौड़ो—उसने कहा और लगाम झटकाई और गाड़ी में जुते खच्चर काफी दूर तक तेज़ी के साथ दौड़ने के बाद धीमे पड़े और फिर छोटे-छोटे कदम भरते हुए जल्दी-जल्दी चलने लगे। —मेरी समझ

में नहीं आता कि मेजर प्रतीक्षा क्यों करेगा। वह तो सिर्फ शेरू को ही काम में लाना चाहता है। मैंने कभी भी तुम्हें यह कहते नहीं सुना कि आज हम कोई रीछ या और कोई जानवर मारकर कैम्प में लाए।

इसाक सोचने लगा कि अब बून ऐश को गाली देगा या शायद मारेगा भी। लेकिन बून ने ऐसी कोई हरकत न की और न पहले ही कभी की थी। इसाक ने जान लिया था कि बून गाली-गलौज या मार-पीट न करेगा हालांकि चार साल पहले बून ने किसी दूसरे की पिस्तौल से जेफरसन शहर की एक सड़क पर एक नीग्रो पर पांच बार गोली चलाई थी और नतीजा वही हुआ था जो पिछले बरस बूढ़े भालू पर पांच बार गोली चलाने पर हुआ था।—भगवान कसम—बून ने कहा—शेरू को या और किसी कुत्ते को तबतक मेजर बाहर न निकालेगा जबतक मैं आज रात को लौट न आऊंगा। उसने मुझसे वादा किया है। चाबुक मारो इन खच्चरों के और जल्दी-जल्दी चलाओ। क्या तुम मुझे सर्दी में ठिठुराकर मार डालना चाहते हो?

वे कटे हुए पेड़ों के ढेरों के पास आ पहुंचे और उन्होंने आग जलाई। कुछ देर बाद लकड़ी के लट्ठों को ले जाने वाली रेल जंगल में से आई और बून ने उसे रोक लिया। फिर बन्द डिब्बों की गरमाहट में लड़का सो गया और बून तथा रेल का कन्डक्टर और ब्रेकमैन, शेरू और बूढ़े भालू के बारे में बातें करते रहे मानो वे कोई ऐतिहासिक व्यक्ति हों। रेलगाड़ी हिलती-डुलती शोर मचाती आगे बढ़ी जा रही थी और नींद में ऊंघता हुआ इसाक इनकी बातचीत सुन रहा था। वे उन बछड़ों और बकरों के बारे में जिन्हें बूढ़ा भालू उठाकर ले गया था, और उन फन्दों और रुकावटों के बारे में जिन्हें वह हमेशा तोड़ जाता था बातचीत कर रहे थे और कह रहे थे कि उसकी खाल के नीचे अवश्य सीसा है। इस बूढ़े भालू के पांव में दो उंगलियां थीं और उस प्रदेश में जिसके फंदे में उंगलियां कट

जाने के कारण भालू ५० वर्ष से दो उंगलियों वाले, तीन उंगलियों वाले या लंगड़े कहलाते आते थे, केवल यह बूढ़ा भालू एक खास भालू था (जनरल काम्पसन उसे मुखिया भालू कहा करता था) और इस तरह उसने एक मनुष्य-सा नाम कमाया था जिसके लिए उसे ज़रा भी खेद न था।

सूर्योदय के समय होक के कारखाने पर गाड़ी रुकी और वे अपनी शिकारी पोशाकों में और कीचड़ में सने जूतों में बाहर निकले। बून की दाढ़ी के नीले बड़े-बड़े बाल चमक रहे थे। यह ठीक ही था। वह लकड़ी काटने का कारखाना था और वहां के सब लोग इसी तरह के कपड़े पहनते थे। कुछ देर बाद मेमफिस जाने वाली गाड़ी आई। बून ने मकई और शीरे के तीन पैकेट और एक बोतल बीयर खरीदी। तभी इसाक सो गया और बून दाने चबाने लगा।

लेकिन मेमफिस में यह वेशविन्यास अजीब लगने लगा। ऐसा प्रतीत होता था मानो ऊंची-ऊंची इमारतों और सीमेन्ट की पटरियों पर शानदार घोड़ागाड़ियों और कलफदार कालर तथा नेकटाई पहने हुए लोगों के सामने उनके बूट और उनकी खाकी वर्दी बहुत ज़्यादा भद्दी और गन्दी और बून की कुछ दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी तो बहुत ही बुरी लग रही थी। उसके चेहरे को देखकर लगता था मानो उसे कभी भी जंगल से बाहर नहीं निकलना चाहिए था या कम से कम मेजर द स्पेन या मैककैस्लिन या किसी ऐसे आदमी के पास ही रहना चाहिए था जो उसे जानता हो और कह सके—डरो मत। यह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा। —बून स्टेशन के साफ-सुथरे प्लेटफार्म पर चला जा रहा था और अपने दांतों में फंसे मकई के दाने को जीभ से निकाल रहा था। वह संभल-संभलकर आगे बढ़ रहा था मानो मक्खन पोते हुए कांच के फर्श पर चल रहा हो। वे लोग पहले शराबखाने के पास से गुजरे। हालांकि दरवाज़े

बन्द थे फिर भी इसाक बुरादे और पुरानी शराब की गन्ध सूंघ सकता था। बून खांसने लगा। करीब एक मिनट तक खांसता रहा।—मुझे सर्दी लग गई है—उसने कहा—पता नहीं कहां मैं सर्दी खा गया।

'स्टेशन पर खा गए होगे', इसाक ने कहा।

बून फिर खांसने लगा। वह चलते-चलते रुक गया। उसने लड़के की ओर देखा और पूछा—क्या कहा ?

'जब हम कैम्प से चले थे या रेल में थे तब तुम्हें खांसी नहीं थी।' बून आंख मिचकाकर लड़के की ओर देखने लगा। फिर उसने आंख मिचकाना बंद कर दिया। उसे फिर खांसी नहीं उठी। उसने धीरे से कहा :

'मुझे एक डालर उधार दोगे ? लाओ दे भी दो। मैं जानता हूं तुम्हारे पास है। तुम कभी खर्च तो करते ही नहीं। मेरा मतलब यह नहीं कि तुम कन्जूस हो। तुम बस कभी सोचते ही नहीं कि तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है। जब मैं सोलह साल का था तो एक डालर का नोट मेरे हाथ में आते ही साफ हो जाता था। और मैं यह भी न पढ़ पाता था कि वह किस बैंक का नोट है। उसने फिर धीरे से कहा—इसाक लाओ, मुझे एक डालर दे दो।

'तुमने मेजर और मैककैस्लिन से वादा किया था कि कैम्प लौटने तक नहीं पियोगे।'

'ठीक है', बून ने उसी शान्ति और धैर्य के साथ कहा।—तुम्हीं बताओ, मैं सिर्फ एक डालर में क्या कर सकता हूं। दूसरा डालर तो तुम दोगे नहीं।

'तुम ठीक कहते हो, मैं तुम्हें नहीं दूंगा,' लड़के ने कहा। उसकी आवाज़ भी शान्त थी, परन्तु क्रोध से जड़ थी—पर क्रोध बून के प्रति नहीं था। उसे याद आया कि बून रसोई में एक सख्त कुर्सी पर पैर

फैलाकर सोया था, ताकि वह दीवार घड़ी को देख सके और इसाक को और मैककैस्लिन को जगा सके। और उनके साथ जैफरसन तक के सत्रह मील के फासले को गाड़ी में बैठकर पार करने के बाद वहां से मेमफिस की गाड़ी पकड़ सके। उसने मैककैस्लिन को तैयार कर लिया था कि वह उसके लिए टेक्सास का जंगली टट्टू खरीद देगा और नीलाम में चार डालर पचहत्तर सेंट में टट्टू खरीद वे उसे सधी हुई दो पुरानी घोड़ियों के बीच में कांटेदार तार से बांधकर घर लाए। इस नये टट्टू ने मकई के दाने पहले कभी न देखे थे और शायद उन्हें मक्खी समझ लिया था। आखिर बून ने बताया (इसाक तब दस वर्ष का था और बून तो सारी जिन्दगी ही दस वर्ष का रहा) कि नया टट्टू सध गया है और फिर उसके सिर पर एक बोरा डालकर चार नीग्रो लोगों ने उसे पकड़ लिया और एक पुरानी दो पहिये की गाड़ी में उसे जोत दिया। फिर इसाक और बून गाड़ी पर चढ़ गए और बून ने नीग्रो लोगों से कहा—अच्छा अब छोड़ दो इसे।—और तब एक नीग्रो ने, वह टेनी का बेटा जिम था, टट्टू के सिर पर से बोरा हटा लिया और उछलकर दूर जा खड़ा हुआ। तभी नया टट्टू बेतहाशा दौड़ा और गाड़ी का एक पहिया खुले फाटक से टकराकर टूट गया। उसी समय बून ने इसाक को गर्दन से पकड़-कर सड़क के किनारे की खाई में फेंक दिया। इसके आगे इसाक को साफ-साफ कुछ न दिखाई दिया। गाड़ी का दूसरा पहिया भी टकराकर टूट गया और बून उस गर्द-गुबार में लगाम पकड़े हुए पेट के बल घिसड़ता रहा। अंत में लगाम भी टूट गई और दो दिन बाद वह टट्टू सात मील दूर पकड़ा गया। उस समय भी उसके सिर पर सारा साजो-सामान रखा था, मानो वह कोई जमींदारनी हो जिसने एक साथ दो हार पहन रखे हों। और इसाक ने बून को डालर दे दिया।

'अच्छा, अब आओ', बून ने कहा।—इस सर्दी को दूर करें।

'मुझे सर्दी नहीं लग रही है', लड़के ने कहा ।

'तुम चाहो तो लैमनेड पी सकते हो ।'

'मुझे लैमनेड नहीं चाहिए ।' लड़के ने कहा ।

वह अन्दर दाखिल हुआ और दरवाज़ा पीछे से बन्द हो गया । अब सूरज अच्छी तरह निकल आया था । आसमान बिल्कुल साफ था, हालांकि बूढ़े ऐश ने कहा था कि रात से पहले-पहले बारिश होगी । वातावरण में उष्णता आ गई थी । तो इसका अर्थ यह था कि वे लोग अगले दिन बूढ़े भालू का पीछा कर सकते थे । इसाक ने एक नया उत्साह अनुभव किया, ठीक वैसा ही जैसा उसने प्रथम दिन किया था । चाहे वह शिकार खेलते-खेलते और बूढ़े भालू का पीछा करते-करते स्वयं बूढ़ा क्यों न हो जाए, वह कभी अपने उस उत्साह की नूतनता खोने वाला न था । उसने खुलकर सांस लेना फिर शुरू किया और पुनः विनम्रता तथा गर्व अनुभव किया । उसने सोचा कि इस बारे में सोचना उसे बन्द कर देना चाहिए । उसे लगा कि वह वापस दौड़ा चला जा रहा है ; स्टेशन की ओर, रेल की पटरियों की ओर । और दक्षिण की ओर जाने वाली पहली गाड़ी आ गई है ; उसने फिर सोचा कि उसे इस बारे में सोचना बन्द कर देना चाहिए । सड़क पर भीड़ थी । उसने बड़े-बड़े नार्मन घोड़े गाड़ियों में जुते देखे ; शानदार गाड़ियों में मर्दों को खूबसूरत ओवरकोट पहने और औरतों को अपने फर-कोटों में दमदमाते देखा । वे लोग अपनी गाड़ियों में से उतरकर स्टेशन में दाखिल हो रहे थे ।

वे लोग बाहर निकल आए । बून अपने हाथ के पिछले भाग से अपना मुंह पोंछ रहा था ।—अच्छा—वह बोला—अब चलें और अपना काम करें ।

उन्होंने अपना सूटकेस शराब की बोतलों से भरवा लिया । इसाक को मालूम न हुआ कि कब और कैसे बून ने एक अतिरिक्त बोतल

हथिया ली। निश्चय ही वह शराब की दूकान वाले ने उसे दी होगी। जब वे शाम को पुनः होक के कारखाने पहुंचे तब वह बोतल खाली हो चुकी थी। दो घंटे बाद होक के कारखाने के लिए गाड़ी मिल सकती थी। वे सीधे स्टेशन पर चले आए जैसा कि मेजर द स्पेन और मैककै-स्लिन ने बून से कहा था और अपने आदेश का पालन करने के लिए ही इसाक को साथ भेंजा था। यहां बून ने गुसलखाने में जाकर शराब का एक लम्बा घूंट चढ़ाया। फौजी टोपी पहने हुए एक आदमी आया और उसने बून से कहा कि वहां शराब पीने की मनाही है। फिर उसने गौर से बून के चेहरे को देखा और आगे कुछ न कहा। अगली बार बून ने एक रेस्तरां में मेज के नीचे पानी के गिलास में डालकर शराब पी और उसी समय वहां की महिला मैनेजर ने उससे कहा कि वह वहां नहीं पी सकता और बून उठकर फिर गुसलखाने में चला गया। वह नीग्रो बैरे को तथा अन्य सब लोगों को, जो बड़ी उत्सुकता से उसकी बातें सुन रहे थे, शेरू और बूढ़े भालू की बातें सुना रहा था, जिनके बारे में उन लोगों को कुछ पता न था। फिर उसे ख्याल आया कि चिड़ियाघर में कुछ वक्त बिताया जा सकता है। उसने पता लगा लिया कि अगली गाड़ी दिन के तीन बजे होक के कारखाने जाने वाली है। उसने इसाक से कहा कि हम चिड़ियाघर के जानवरों को देखने चलें। पर मैं एक बार गुसलखाने और हो आऊं। उसने कहा कि फिर हम पहली गाड़ी पकड़ लेंगे और कैम्प पहुंच जाएंगे और शेरू को अपने साथ लेकर आएंगे जहां भालुओं को आइसक्रीम और भिंडियां खिलाई जाती हैं। उन सब भालुओं से शेरू का मुकाबला कराएंगे।

इस तरह उन्होंने पहली गाड़ी छोड़ दी जिससे उन्हें वापस लौटना था लेकिन इसाक ने बून को तीन बजे वाली गाड़ी में बिठा ही दिया। अब फिर सब ठीक था। अब बून गुसलखाने में भी नहीं जा रहा था।

अब वह रेल के डिब्बों के बाहरी रास्ते में खड़ा होकर शराब पी रहा था और शेरू के बारे में उन लोगों से बातें कर रहा था जिनमें यह कहने की हिम्मत न थी कि वहां शराब पीने की मनाही है।

जब वे होक के कारखाने पहुंचे तो शाम हो चुकी थी और बून सो गया था। लड़के ने जैसे-तैसे उसे जगाया और उसे तथा सूटकेस को उतारा और कारखाने के होटल में कुछ खाने के लिए बून को मनाया। जब वे लकड़ी के लट्ठों को ले जाने वाली रेलगाड़ी में बैठ गए और जंगल में दाखिल होने लगे तब बून ठीक हालत में था। उस समय सूरज डूब रहा था और आकाश में लाली छाई हुई थी और निश्चित था कि उस रात बरफ न पड़ेगी। अब लड़के की सोने की बारी थी और वह दमकते हुए चूल्हे के पास बैठा ऊंघने लगा, जबकि बिना स्प्रिंग की गाड़ी खड़-खड़ाती हुई चली जा रही थी और बून, ब्रेकमैन और कन्डक्टर शेरू तथा बूढ़े भालू के बारे में बातें कर रहे थे। वे बून की बातों को भली प्रकार समझ सकते थे क्योंकि वे यहीं के थे।

'बरफ गलने लगी है,' बून ने कहा—शेरू कल बूढ़े भालू को जरूर धर पकड़ेगा।

बूढ़े भालू पर हमला करने वाला शेरू होगा या कोई और होगा लेकिन वह बून नहीं होगा। उसने गिलहरी से बड़े किसी जानवर को कभी भी न मारा था। हां, एक नीग्रो औरत को ज़रूर मार डाला था, जबकि गोली उसने नीग्रो आदमी पर चलाई थी। वह विशालकाय नीग्रो था और बून से मुश्किल से दस फुट की दूरी पर था, और बून ने मेजर द स्पेन के नीग्रो सईस की पिस्तौल से उस बड़े नीग्रो पर पांच बार गोली चलाई और उस नीग्रो ने डेढ़ डॉलर की, डाक से मंगाई हुई, अपनी सस्ती पिस्तौल से बून को भून दिया होता मगर उसकी पिस्तौल चल न सकी, पांच बार महज़ फिस-फिस-फिस-फिस-फिस करके

रह गई। बून फिर भी गोली चलाता रहा और उसने एक खिड़की का बड़ा कांच तोड़ दिया जिसके लिए मैककैस्लिन को पैंतालीस डॉलर हर-जाना भरना पड़ा और रास्ता चलती एक औरत की टांग में भी उसकी गोली लगी जिसका मुआवज़ा मेजर द स्पेन को देना पड़ा। दोनों ने ताश के पत्ते फेंटकर आपस में तय किया कि कांच का मुआवज़ा मैक-कैस्लिन और नीग्रो औरत की टांग का मुआवज़ा मेजर द स्पेन देगा। और उसी वर्ष कैम्प में पहली सुबह एक बारहसिंगा सीधा बून की तरफ दौड़ता चला आया था और इसाक ने बून की पुरानी बन्दूक के चलने की आवाज़ और फिर बून की आवाज़ सुनी—वह आ रहा है। वह आ रहा है। मारो उसे, मारो उसे—और जब इसाक वहां पहुंचा तो उसने बीस कदम की दूरी पर बारहसिंगे के पैर के निशान और बून की बन्दूक से निकले खाली कारतूस पड़े पाए।

उस रात कैम्प में जैफरसन शहर से पांच मेहमान आए थे : मि० बेयार्ड सारटोरिस और उनका बेटा, जनरल काम्पसन का बेटा और अन्य दो व्यक्ति। अगली सुबह इसाक ने अपनी खिड़की में से भोर की हलकी फुहार देखी, जिसकी ऐश ने पहले ही भविष्यवाणी की थी और साथ ही उसने उन लगभग दो दर्जन लोगों को हलकी बरसात में ज़मीन पर खड़े या बैठे हुए देखा जो बूढ़े बून को अपना अनाज और अपने बछड़े पिछले दस साल से खिलाते आए थे। वे लोग अपने पुराने टोप और ऐसे शिकारी कोट पहने हुए थे जिन्हें किसी भी शहरी नीग्रो ने फेंक दिया या जला दिया होता, सिर्फ उनके रबर के जूते ही मजबूत थे और उनके पास पुरानी बदरंग बन्दूकें थीं और कुछ लोग ऐसे भी थे जिनके पास बन्दूकें तक न थीं। कैम्प में सुबह का नाश्ता हो रहा था कि एक दर्जन आदमी और चले आए, कुछ घोड़ों पर और कुछ पैदल। वे लोग तेरह मील दूर जंगल के किनारे स्थित होक के कारखाने से आए

थे और उनमें से लकड़ी के लट्ठे ले जाने वाली रेलगाड़ी के कन्डक्टर के पास ही सिर्फ एक बन्दूक थी। इस तरह जब वे उस सुबह जंगल के अन्दर घुसने लगे तब मेजर द स्पेन की पार्टी में बहुत काफी लोग हो गए थे। कैम्प के छोटे अहाते में वे समा न पा रहे थे। वे पास की गली में, जहां मेजर द स्पेन की घोड़ी खड़ी थी और जहां ऐश गन्दे कपड़े पहने हुए मेजर की बन्दूक में कारतूस भर रहा था, इकट्ठे होने लगे। वहीं घोड़ी के पास, एक कुत्ते की तरह नहीं बल्कि एक घोड़े की तरह विराट और गम्भीर, वह नीला कुत्ता खड़ा था और अपने निद्रालु नेत्रों से शून्य में देख रहा था और शिकारी कुत्तों की चीख-चिल्लाहट के प्रति बेखबर था।

'आज हम काने खच्चर पर जनरल काम्पसन को चढ़ाएंगे,' मेजर द स्पेन ने कहा—पिछले साल उन्होंने घायल कर दिया था; अगर वह एक ऐसे खच्चर पर सवार होते जो डटकर खड़ा रह सकता, तो वह निश्चय ही···

'नहीं,' जनरल काम्पसन ने कहा—अब मैं किसी घोड़े या खच्चर पर या और किसी सवारी पर चढ़कर जंगल में दौड़ने-फिरने के लिए जरूरत से ज्यादा बूढ़ा हो चुका हूं। इसके अलावा पिछले साल मुझे एक मौका मिला था और मैं उसे खो बैठा। मैं तो आज सुबह मचान पर ही बैठा रहूंगा। आज तो इसाक को ही काने खच्चर पर सवार होने दो।

'नहीं, नहीं,' मैककैस्लिन ने कहा—भालुओं का शिकार करने के लिए इसाक की अभी सारी जिन्दगी पड़ी है। और किसीको···

'नहीं,' जनरल काम्पसन ने कहा—मैं चाहता हूं कि इसाक ही काने खच्चर पर सवार हो। वह इस समय भी तुमसे या मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जंगल को जानता है और अगले दस वर्षों में वाल्टर

जितना काबिल हो जाएगा।

जब तक मेजर द स्पेन ने उससे न कहा, तब तक इसाक इस बात पर विश्वास न कर पाया। और फिर वह उस काने खच्चर पर सवार हो गया, जिसे जंगली खून से परहेज न था और मेजर द स्पेन की घोड़ी के पास खड़े हुए उस बड़े कुत्ते को देखने लगा जो सुबह की धुंधली रोशनी में एक बछड़े से बड़ा लग रहा था—उसका बड़ा सिर, मर्दों जैसी चौड़ी छाती, और वह नीली चमड़ी जिसके नीचे मांसपेशियां उभर रही थीं और जिसपर किसी भी स्पर्श से सिहरन न होती थी क्योंकि उस शरीर में स्थित हृदय किसी भी आदमी से या किसी भी वस्तु से प्रेम न करता था। इसाक देखता रहा उस कुत्ते को जो घोड़े की तरह खड़ा था और फिर किसी भी घोड़े से बहुत भिन्न था क्योंकि घोड़े में तो केवल ज्यादा वजन और रफ्तार होती है जब कि शेरू में न केवल साहस, संकल्प और पीछा करने तथा मार डालने की इच्छा ही थी बल्कि हद से ज्यादा बर्दाश्त करने का माद्दा था और यही उसे अपने शिकार को पकड़कर मार डालने के लिए तैयार करता था। फिर शेरू ने इसाक की ओर देखा, अन्य शिकारी कुत्तों की तुच्छ चिल्लपों सुनते हुए अपना सिर घुमाकर उसकी ओर देखा। उसकी पीली आंखें बून की आंखों जैसी ही थीं, उनमें गहराई न थी, और बून की ही आंख की तरह उनमें नीचता, उदारता, सज्जनता या दुष्टता न थी। वे निस्तेज, निद्रालु नेत्र थे। फिर उसने अपनी आंखें झपकाई और इसाक समझ गया कि कुत्ता उसकी ओर नहीं देख रहा था, उसने पहले कभी भी उसकी ओर न देखा था। शेरू उसी मुद्रा में खड़ा रहा, उसने अपना सिर दुबारा मोड़ने की जरूरत न समझी।

उस सुबह इसाक ने पहली चीख सुनी। शेरू जंगल में गायब हो चुका था जबकि सैम और टेनी का बेटा जिम अभी गाड़ी के खच्चर और घोड़े

पर काठी और जीन ही चढ़ा रहे थे। अन्य शिकारी कुत्ते भी रास्ता सूंघते-सूंघते, चीखते-चिल्लाते आगे बढ़ गए और जंगल में गायब हो गए। फिर इसाक और मेजर द स्पेन और सैम और टेनी का बेटा जिम उनके पीछे-पीछे घोड़ों पर चढ़कर चले और उन्होंने सिर्फ दो सौ गज की दूरी पर सीले-भीगे जंगल से वह पहली चीख सुनी जिसमें वही भय और मानव वेदना-सी थी, जिससे इसाक पहले ही परिचित हो चुका था। वे आगे बढ़ने लगे। इसाक को प्रतीत हुआ कि वह उस बड़े नीले कुत्ते को और साथ ही उस भालू को भी देख पा रहा था जो एक भारी रेल के इंजन-सा था और जिसे उसने चार साल पहले देखा था। वह शिकारी कुत्तों को खदेड़ता हुआ, यहां तक कि दौड़ते हुए खच्चरों से अलग हटते हुए तेजी के साथ चला जा रहा था। फिर एक गोली चलने की आवाज सुनाई दी। वे लोग जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगे और कुत्तों का शोरगुल भी आगे जाकर धीमा होने लगा। वे लोग उस बनवासी के पास से निकले जिसने गोली चलाई थी।

इसाक ने शिकारी कुत्तों की बदली हुई आवाज़ सुनी और करीब दो सौ गज आगे उन्हें देखा। भालू पीछे मुड़कर आया। इसाक ने शेरू को बेतहाशा आगे बढ़ते और भालू को एक हाथ से उसे मारते देखा और फ़िर वह चीखते-चिल्लाते कुत्तों पर पिल पड़ा और एक कुत्ते को मारकर उसने उछाल फेंका और फिर दौड़ने लगा। उस समय वे लोग शिकारी कुत्तों की बहती धारा के बीच जा पहुंचे। इसाक ने मेजर द स्पेन और टेनी के बेटे जिम को चिल्लाते और जिम की पिस्तौल को छूटते सुना। उस समय इसाक और सैम फादर्स दोनों अकेले आगे बढ़ रहे थे। एक शिकारी कुत्ता हिम्मत करके शेरू के साथ ही लगा रहा। इसाक ने उस कुत्ते की आवाज पहचान ली। यह वही नया कुत्ता था जिसमें एक साल पहले कुछ भी समझ न थी तथा और कुत्तों की तुलना में उसमें अब

भी कुछ समझ नहीं थी। 'शायद साहस इसीको कहते हैं' उसने सोचा।
—ठीक है—सैम ने पीछे से कहा।—ठीक है। भालू को नदी से जितना अलग रखा जा सके उतना ही अच्छा है।

अब वे बांसों के जंगल में आ गए। इसाक और सैम दोनों ही वह रास्ता अच्छी तरह जानते थे। वे दोनों एक साथ उस घने भाग से बाहर निकल आए। वे जानते थे कि भालू उस रास्ते से निकलकर नदी के पास के ऊंचे टीले पर पहुंच गया होगा, तभी इसाक ने वाल्टर इवेल की राइफल की दो बार आवाज सुनी।—नहीं, कुछ नहीं—सैम ने कहा। मुझे अभी तक कुत्ते की आवाज सुनाई दे रही है। आगे चलो।

वे बांस के जंगलों से होते हुए खुली पहाड़ी पर जा पहुंचे जिसके नीचे गहरी मटमैली नदी बहती थी, जिसमें सुबह के धूमिल प्रकाश में उन्हें अपनी परछाईं न दिखाई दी यद्यपि नदी का प्रवाह इतना मन्द था कि उसका जल स्थिर प्रतीत होता था। अब इसाक को भी शिकारी कुत्ते की आवाज सुनाई देने लगी। वह एक ऊंचा भयातुर स्वर था। फिर उसने पहाड़ी के किनारे-किनारे बून को दौड़ते हुए देखा, उसकी पुरानी बन्दूक उसकी पीठ पर झूल रही थी, उछल रही थी। वह दौड़ा हुआ, वहशी-सा चेहरा बनाए हुए उनके पास आया और उछलकर इसाक की घोड़ी पर पीछे जा बैठा।—वह दूसरी तरफ जा चुका है।—उसने कहा।
—वह बिल्कुल सीधा गया है। शेरू उसके बहुत पास था। छोटा कुत्ता भी साथ था। शेरू उसके इतने पास था कि मैं गोली न चला सका। बढ़े चलो, उसने काने खच्चर को एड़ लगाते हुए कहा—आगे बढ़ो।

वे नदी के किनारे गीली धरती पर फिसलते और झाड़ियों से टकराते हुए आगे बढ़कर नदी में कूद पड़े। इसाक ने उस समय न कोई धक्का ही महसूस किया और न ठंड। वह एक हाथ से घोड़ी की काठी और दूसरे हाथ से पानी के ऊपर अपनी बन्दूक पकड़े हुए था। बून उसके

सामने था और सैम पीछे और चारों तरफ तैरते हुए शिकारी कुत्ते थे। कुत्ते खच्चरों से ज्यादा तेज़ तैर रहे थे और उनसे काफी पहले दूसरे किनारे पर पहुंच चुके थे। मेजर द स्पेन पिछले किनारे पर खड़े आवाज़ दे रहे थे और इसाक ने मुड़कर देखा कि टेनी का बेटा जिम और उसका घोड़ा भी पानी में उतर आया है।

अब उनके सामने का जंगल और बरसाती हवा का शोर मिलकर एक हो गया था। एक भीषण नाद सुनाई दे रहा था, एक गहरी गूंज उठ रही थी और इसाक को लगा कि शिकार के पीछे भौंकने वाले तमाम कुत्ते मानो एक साथ उसीके लिए भौंक रहे हों। जैसे ही काना खच्चर पानी के बाहर निकला, इसाक ने उसकी रकाब पकड़ ली और झाड़ियों के बीच में से टकराता हुआ वह उठ खड़ा हुआ। तभी उसने भालू को देखा। वह एक पेड़ के सहारे अपने पिछले पैरों पर खड़ा था और भौंकते हुए शिकारी कुत्ते उसे घेरे थे। शेरू ने उछलकर फिर एक बार उसपर हमला किया।

इस बार भालू ने उसे मार नहीं गिराया। उसने एक प्रेमी की तरह कुत्ते को अपनी बाहों में भर लिया और वे दोनों ज़मीन पर आ पड़े। इसाक अपने खच्चर से उतर गया था। उसने अपनी बन्दूक के दोनों घोड़े चढ़ा लिए लेकिन कुत्तों की धकापेल में वह कुछ देख न पाया। इतने में भालू एक बार फिर खड़ा हो गया। बून चिल्ला-चिल्लाकर कुछ कह रहा था, किन्तु इसाक कुछ समझ न पा रहा था। शेरू अभी तक भालू के गले से चिपका हुआ था। भालू ने कुछ ऊपर उठकर एक शिकारी कुत्ते को एक पंजा मारा और उसे पांच-छः फुट की दूरी पर फेंक दिया और फिर वह ऊंचा उठने लगा और सीधा खड़ा हो गया और अपने पंजों से शेरू के पेट को झंझ ड़ने लगा। तभी बून दौड़ता हुआ आगे बढ़ा। इसाक ने उसके हाथ में एक चमकता छुरा देखा और देखा कि वह उछलकर

कुत्तों पर जा पड़ा है, और उन्हें लात मार-मारकर हटा रहा है, फिर वह दौड़ता हुआ भालू के ऊपर चढ़ गया—ठीक उसी तरह जैसे वह इसाक के खच्चर के पीछे उछलकर बैठा था। उसने अपनी दोनों टांगों से भालू के पेट को जकड़ रखा था, उसका बायां हाथ भालू की गर्दन पर था, जहां शेरू चिपका हुआ था, और उसके उठते-गिरते हुए छुरे की चमक बार-बार दिखाई दे रही थी।

भालू सिर्फ एक बार गिरा। एक क्षण के लिए वे सब—भालू की गर्दन से चिपका हुआ शेरू और भालू, और उसकी पीठ पर सवार बून जो अपने छुरे को दबा रहा था—पत्थर की एक सामूहिक मूर्ति से दिखाई पड़े। फिर वे नीचे आ पड़े और बून के खिचाव से भालू उल्टा उसपर गिरा और बून नीचे दब गया। तब पहले भालू की पीठ दिखाई दी लेकिन बून फिर उसपर सवार हो गया। उसने अपने चाकू को भालू के शरीर में घुसाना बन्द न किया था और इसाक उसके हाथ को उठते-गिरते देखता रहा। फिर एक साथ भालू उठ खड़ा हुआ और अपने साथ उसने बून और शेरू दोनों को उठा लिया और आदमी और कुत्ते दोनों को लेकर आदमी की तरह अपने पिछले पैरों से तीन-चार कदम जंगल की ओर बढ़ा और फिर गिर गया। वह लड़खड़ा कर नहीं गिरा, धम्म से नीचे आ गया। किसी पेड़ की तरह वह एक साथ ज़मीन पर आ पड़ा और वे तीनों आदमी, कुत्ता और भालू ज़मीन पर गिरकर गेंद की तरह उछले।

इसाक और टेनी का बेटा जिम दौड़कर आगे बढ़े। बून भालू के सिर पर झुका हुआ था। बून का बायां कान बुरी तरह कट गया था, उसके कोट की बाईं आस्तीन बिल्कुल गायब हो चुकी थी और उसका दायां जूता घुटनों से पांव तक फट गया था और बरसात की पतली फुहार में उसका चमकीला पतला खून उसकी टांग, हाथ, बांह और चेहरे

पर बह रहा था। उसके मुख पर अब नृशंसता न थी, बल्कि एक शान्ति थी। दोनों ने मिलकर भालू की गर्दन से शेरू के जबड़े को अलग किया। धीरे-धीरे बून ने कहा—देखते नहीं इसकी सारी अंतड़ियां बाहर निकल आई हैं?—वह अपना कोट उतारने लगा। उसने शान्त स्वर में ही टेनी के बेटे जिम से कहा—नाव ले आओ। कोई सौ-डेढ़ सौ गज़ दूर होगी किनारे पर। मैंने उसे देखा था।—टेनी का बेटा जिम उठा और चला गया। और फिर इसाक को याद नहीं कि टेनी के बेटे जिम ने उससे कुछ कहा या और कोई बात हुई थी कि उसने और बून ने सिर उठाकर देखा और अकस्मात् उन्होंने सैम फादर्स को रौंदी हुई कीचड़ में मुंह के बल जड़वत् पड़े पाया।

खच्चर ने उसे नहीं गिराया था। इसाक को याद आया कि बून जब भालू के पीछे दौड़ा था, उसके पहले ही सैम नीचे आ गया था। उसपर किसी भी तरह का निशान न था और जब बून व इसाक ने मिलकर उसको पलटा तो उन्होंने देखा कि उसकी आंखें खुली हुई थीं और उसने अपनी बोली में, जिसमें वह जो बेकार-सी बातें किया करता था, कुछ कहा। लेकिन वह हिल न सकता था। टेनी का बेटा जिम इस बीच नाव ले आया था, और नदी के दूसरे किनारे पर खड़े मेजर द स्पेन को वह पुकार रहा था। बून अपने शिकारी कोट में शेरू को लपेटकर नाव तक ले आया और फिर वे सैम को भी उठा लाए। उन्होंने वापस लौटकर भालू को काने खच्चर की काठी से बांध दिया और उसे खींचकर नदी तक ले आए और उसकी लाश को भी नाव पर चढ़ा दिया। दूसरे किनारे पर खड़े मेजर द स्पेन ने नाव का सिरा पकड़कर खींचा और किनारे पर नाव लगने से पहले ही बून उछलकर नीचे उतर आया। उसने एक बार बूढ़े भालू की ओर देखा और धीरे से कहा—ठीक है। फिर उसने पानी में जाकर सैम को छुआ और सैम ने उसकी ओर देखते

हुए अपनी उसी बोली में कुछ कहा जिसमें वह बेकार-सी बातें किया करता था।—तुम्हें नहीं मालूम क्या हुआ था ?—मेजर द स्पेन ने पूछा।

'जी, नहीं' इसाक ने कहा—खच्चर ने उसे नहीं गिराया। किसीने कुछ नहीं किया। जब बून भालू की ओर दौड़ रहा था, सैम खच्चर पर न था। और तब हमने देखा कि वह धरती पर पड़ा हुआ है।—बून चिल्लाकर टेनी के बेटे जिम से कुछ कह रहा था और वह उस समय नदी के बीच में था।

'जल्दी आओ। जल्दी करो' उसने कहा—फौरन उस खच्चर को लेकर आओ।

'खच्चर का क्या करोगे ?' मेजर द स्पेन ने पूछा।

बून ने उसकी ओर देखा तक नहीं। 'मैं डाक्टर लाने जा रहा हूं', उसने शांत स्वर में कहा। उसके चेहरे पर बहती खून की धार कुछ कम हो गई थी और उसका मुख पतली पड़ती जाने वाली खून की धार के पीछे शान्त दीख रहा था।

'तुम्हें खुद डाक्टर की ज़रूरत है,' मेजर द स्पेन ने कहा—टेनी के बेटे जिम को···

'रहने भी दो,' बून ने कहा। उसने घूमकर मेजर द स्पेन की ओर देखा। उसके मुख पर अब भी शान्ति थी, केवल उसकी आवाज़ में कुछ व्यग्रता थी।—देख नहीं रहे हैं कि कुत्ते की तमाम अंतड़ियां बाहर निकल आई हैं ?

'बून !' मेजर द स्पेन ने कहा। दोनों एक दूसरे को देखने लगे। बून मेजर द स्पेन से कहीं ज्यादा लम्बा था। अब तो इसाक भी मेजर से लम्बा हो गया था।

'डाक्टर फौरन बुलाना होगा ?' बून बोला—इसकी तमाम अंतड़ियां····

'अच्छी बात है,' मेजर द स्पेन ने कहा। टेनी का बेटा जिम पानी से निकल आया था। उसके घोड़े और दूसरे खच्चर ने बूढ़े भालू की गंध पा ली थी और वे उछल-कूद मचा रहे थे तथा टेनी के बेटे जिम के काबू से बाहर हो रहे थे। मेजर द स्पेन ने अपने कम्पास की लम्बी चमड़े की पेटी टेनी के बेटे जिम को देते हुए कहा—फौरन जाकर अपने साथ डाक्टर क्राफर्ड को लेकर आओ। कह देना कि दो आदमियों की मरहमपट्टी करनी है। मेरी घोड़ी ले जाओ। यहां से रास्ता तो पता लगा सकते हो न?

'जी हां,' टेनी के बेटे जिम ने कहा।

'ठीक है,' मेजर द स्पेन ने कहा—जाओ।—फिर लड़के को सम्बोधित करते हुए कहा—इन खच्चरों और घोड़ों को ले जाओ और गाड़ी तैयार करो। हम नाव से कून ब्रिज तक पहुंच रहे हैं। वहीं मिलना। रास्ता पता लगा लोगे न ?

'जी हां,' इसाक ने कहा।

'तो ठीक है। अब चल दो।'

वह गाड़ी लेने चल दिया। उसने अब जाकर महसूस किया कि वे बूढ़े भालू के पीछे कितनी दूर निकल आए थे। गाड़ी में घोड़े जोतते-जोतते अपराह्न हो चला था। वह संध्या होते-होते कून ब्रिज पहुंचा। नाव वहां पहले से मौजूद थी, पानी तक पहुंचने और नाव दिखाई देने से पहले ही वह गाड़ी से उतर गया और घोड़ों की लगाम पकड़े हुए गाड़ी को ठीक जगह रोकने की कोशिश करने लगा। सब लोगों ने मिलकर गाड़ी को खड़ा किया और उसके खच्चरों को खोल दिया और फिर काने खच्चर को गाड़ी में जोत दिया। बून गाड़ी में से शेरू को उठा लाया था और उसके पास चुपचाप बैठा था। सैम भी सहारे से उठ खड़ा

हुआ और गाड़ी पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन बून ने उसका इन्तज़ार न किया और उसे खुद अपने हाथों से उठाकर गाड़ी में रख दिया। इसके बाद उन्होंने बूढ़े भालू को काने खच्चर की काठी से फिर बांध दिया और वे उसे घसीटकर गाड़ी तक ले आए और दो बांसों की मदद से उसके शरीर को उन्होंने गाड़ी पर चढ़ा दिया। फिर बारिश होने लगी मानो सारे दिन उन्हींके इन्तज़ार में रुकी रही हो।

वे पानी में भीगते और अधिकाधिक सघन होते अंधकार में से होते हुए कैम्प लौट आए। उन्हें रास्ता बताने के लिए कैम्प के लोग आकाश में गोलियां चला रहे थे। जब वे सैम की झोंपड़ी के पास पहुंचे तो सैम ने उठ खड़े होने की कोशिश की और अपने बाप-दादाओं की भाषा में कुछ शब्द कहे और फिर साफ-साफ बोला—मुझे जाने दो। जाने दो मुझे।

'अब इसमें ज़्यादा जान नहीं रही', मेजर ने कहा।—आगे बढ़ो।—उसने तेज़ी से कहा।

सैम उठ खड़े होने की कोशिश कर रहा था—मुझे जाने दो मालिक—उसने फिर कहा—मुझे घर जाने दो।

अतः उसने गाड़ी रोक दी और बून ने नीचे उतरकर सैम को उठा लिया और इस बार सैम को खुद अपने पैरों पर न चलने दिया। वह उसे उसकी झोंपड़ी के अन्दर ले आया और मेजर द स्पेन ने जलते कोयलों से एक कागज़ जलाकर लैम्प जलाया और बून ने सैम को बिस्तरे पर लिटा उसके बूट उतारे और मेजर द स्पेन ने उसे कम्बल से ढक दिया। लड़का तब वहां न था। वह खच्चरों को थामे हुए था, और काने से दूसरा खच्चर गाड़ी रुकते ही बूढ़े भालू की गन्ध पाकर भड़क उठा। उस समय सैम की आंखें एक गम्भीर मुद्रा में खुली प्रतीत होती थीं और उन लोगों से दूर, अपनी झोंपड़ी से भी दूर, एक भालू की मौत और एक कुत्ते की आने वाली मौत से भी परे देख रही थीं। फिर वे लोग कैम्प

की ओर लौटे और रोशनियों से जगमगाते उस मकान की ओर बढ़े जहां से हवा में लगातार एक के बाद एक गोलियां दागी जा रही थीं और खिड़कियों में खड़े लोग शिकारियों के लौटने का इन्तज़ार कर रहे थे। सबसे पहले बून ने प्रवेश किया, खून से लथपथ और शान्त, अपने कोट में जख्मी कुत्ते को लपेटे हुए। उसके तख्ते के पलंग पर चादर न बिछी थी और उसे ऐश भी, जो एक गृहिणी की तरह कुशल था, कभी आरामदेह बिस्तरे का रूप न दे पाया था। उसी बिस्तर पर उसने खून से लथपथ अपना कोट और उसमें लिपटे कुत्ते को लिटा दिया।

आरा मिल से डाक्टर आ चुका था। बून उसे अपने ज़ख्म तब तक दिखाने को तैयार न था, जबतक वह पहले शेरू को न देख ले। वह शेरू को क्लोरोफार्म सुंघाकर खतरा मोल लेने के खिलाफ था। उसने शेरू की अंतड़ियों को यथास्थान रखकर खाल की सिलाई कर दी और मेजर द स्पेन शेरू का सिर और बून उसके पैरों को पकड़े रहे। शेरू ने हिलने की कतई कोशिश न की। वह चुपचाप पड़ा रहा और उसकी पीली आंखें खुली रहीं और इस बीच नई शिकारी पोशाकों और परानी पोशाकों वाले दोनों तरह के लोग उस वायुहीन कमरे में चले आए जिसमें बून के शरीर व उसके कपड़ों की बदबू के कारण एक घुटन थी। फिर डाक्टर ने बून के चेहरे और बांह और पैर के घावों को धोकर मरहम-पट्टी की। इसाक उस समय हाथ में लालटेन लिए खड़ा था। फिर वे सब सैम फादर्स की झोंपड़ी में चले आए। टेनी का बेटा जिम आग सुलगाकर उसके सामने बैठा ऊंघ रहा था। जब से सैम बिस्तरे पर लेटा था, हिला-डुला बिल्कुल न था और मेजर द स्पेन ने उसके शरीर को कम्बलों से ढक दिया था। फिर भी उसने आंखें खोलीं और सब लोगों के चेहरों को देखा और जब मैककैस्लिन ने उसका कन्धा छुआ और कहा—सैम, डाक्टर तुम्हें देखना चाहता है—तो वह कम्बल से हाथ निकालकर अपनी

कमीज के बटन टटोलने लगा। मैककैस्लिन ने कहा—ठहरो, हम खोले देते हैं।—उन लोगों ने उसकी कमीज उतार दी। तांबे-से शरीर का वह जंगली निस्सन्तान, निस्संवंधी, जातिहीन बूढ़ा निश्चल पड़ा था, उसकी आंखें खुली थीं पर अब वह किसी व्यक्ति की ओर देख न रहा था। डाक्टर ने उसकी जांच कर उसे कम्बल से ढक दिया और अपने बैग में स्टेथस्कोप रखकर बैग को एक बार थपथपाया और इसाक जान गया कि सैम का आखिरी समय आ गया है।

'बेहद थकावट है', डाक्टर ने कहा—शायद कोई बहुत बड़ा धक्का पहुंचा है। यह उम्र और दिसम्बर के महीने में नदियों में तैरना ! ठीक हो जाएगा। एक-दो दिन इसे बिस्तरे से मत उठने देना। क्या आज यहां इसके साथ कोई रहेगा ?

'कोई न कोई जरूर रहेगा,' मेजर द स्पेन ने कहा।

वे लोग घर लौटकर उसी बदबूदार छोटे कमरे में चले आए जहां बून अपने हाथों में शेरू का सिर थामे बैठा था। वे लोग जिन्होंने शेरू के पीछे रहकर शिकार खेला था और वे भी जिन्होंने शेरू को देखा तक न था, सबके सब चले आए और उसे देखकर चुपचाप वापस लौट गए। रात बीत गई और सुबह हुई और फिर उन लोगों ने अहाते में जाकर बूढ़े भालू को देखा, जिसकी आंखें खुली थीं, होंठ फटे थे, दांत टूटे थे और शरीर के अन्दर छोटे-छोटे लोथड़े जमा थे जो पुरानी बंदूकों की गोलियां थीं। (उसके शरीर से कुल बावन गोलियां निकलीं) और उसके बाएं कंधे के नीचे आसानी से न दिखाई देने वाला एक बड़ा सूराख था, जिसके रास्ते बून के चाकू ने उसकी जिन्दगी पर प्रहार किया था। उसी समय ऐश एक बड़ी चम्मच से थाली को पीट-पीटकर नाश्ता परोसे जाने का ऐलान कर रहा था और इसाक ने देखा कि वही पहला मौका था जब शिकारी कुत्ते उनके खाने के समय नीचे से चीखे-चिल्लाए नहीं मानो

बूढ़ा भालू मरकर भी शेरू की गैरमौजूदगी में उनके लिए एक बड़ा खतरा था।

रात को बारिश बंद हो चुकी थी। सुबह सूरज निकला और दिन चढ़ते-चढ़ते हवा गर्म हो चली। उन लोगों ने शेरू को बाहर खुले बरामदे में लिटा दिया। यह बून का ही विचार था। उसने कहा, 'शेरू कभी भी घर में रहना न चाहता था। मैंने ही उसे बाध्य किया था।' उसने एक औज़ार की मदद से अपने लकड़ी के पलंग के तख्ते निकाल लिए और शेरू को हिलाए बिना ही शेरू समेत तख्ते को उठाकर वे बाहर ले आए और जंगल की तरफ मुंह कर उसे लिटा दिया।

फिर इसाक, डाक्टर, मैककैस्लिन और मेजर द स्पेन सैम की झोंपड़ी में चले आए। इस बार सैम ने आंखें नहीं खोलीं और उसकी सांस शांत, मंद थी, मानो वह सांस ही न ले रहा हो। इस बार डाक्टर ने स्टैथस्कोप तक न निकाला और न सैम को छूकर ही देखा।—बिल्कुल ठीक हो गया—डाक्टर ने कहा।—इसे तो सर्दी भी नहीं लगी। बस, यों ही चल दिया।

'चल दिया ?' मैककैस्लिन ने पूछा।

'हां। बूढ़ों के साथ अक्सर ऐसा ही होता है। वे रातभर अच्छी तरह सोते हैं या थोड़ी-सी व्हिस्की पी लेते हैं और ज़िन्दा रहने का इरादा बदलकर ज़िन्दगी से कूच कर देते हैं।'

वे घर लौट आए। और फिर बाहर के बहुत-से लोग आने लगे। परिश्रमी बनवासी जो कुनैन खाकर और नदी का पानी पीकर जीवित रहते थे, और जंगल के किनारे कपास की खेती करने वाले किसान जिनके मवेशियों को बूढ़ा भालू उठा ले जाया करता था और कैम्प में तथा आरा मशीन की मिल में काम करने वाले मजदूर और शहरों में बसने वाले लोग, जिनके शिकारी कुत्तों को बूढ़े भालू ने मार डाला था

ग्रौर जिनके बनाए फंदों को बेकार साबित किया था ; वे घोड़ों पर चढ़कर, पैदल ग्रौर गाड़ियों में बैठकर ग्राए ग्रौर बूढ़े भालू को देख ग्रौर फिर शेरू को देख बड़े ग्रहाते में इकट्ठे होने लगे। करीब एक सौ ग्रादमी दिन की तेज धूप में, खड़े या बैठे बूढ़े भालू ग्रौर उसका पीछा करने वाले कुत्तों ग्रौर गुजरे जमाने के लोगों के बारे में बातें कर रहे थे । बीच-बीच में शेरू ग्रांखें खोल लेता था,.उन लोगों को देखने के लिए नहीं बल्कि जंगल को देखने के लिए, ग्रौर फिर मूंद लेता । सूरज डूबते-डूबते शेरू के प्राण निकल गए ।

उस रात मेजर द स्पेन ने कैम्प भंग कर दिया । वे शेरू को जंगल में ले गए, या कहना चाहिए कि बून ग्रपनी रजाई में लपेटकर उसे ले गया क्योंकि जिस तरह डाक्टर ने ग्राने से पूर्व उसने किसीको भी शेरू को छूने न दिया था, उसी तरह ग्रब भी वह शेरू को ग्रपने हाथों में लिए हुए था । उसके पीछे इसाक ग्रौर जनरल काम्पसन ग्रौर वाल्टर तथा लगभग ग्रन्य पचास लोग थे जिनके हाथों में लालटेन ग्रौर जलती हुई चीड़ की खपच्चियां थीं । वे लोग दूर-दूर से ग्राए थे ग्रौर उन्हें रात के ग्रंधेरे में घोड़ों पर चढ़कर या पैदल ग्रपने-ग्रपने घरों को वापस जाना था । बून ने शेरू का कब्र खोदने का काम भी दूसरों के हाथों न होने दिया; ग्रौर खुद ही कब्र में शेरू को लिटाकर ढक दिया । जनरल काम्पसन कब्र के सिरे पर खड़े थे ग्रौर उन्होंने शीतकालीन वृक्षों की शाखाग्रों के नीचे जलती हुई खपच्चियों को हाथों में लिए-लिए लोगों के सामने उसी तरह दुख प्रकट किया जिस तरह वे किसी मनुष्य के लिए करते । फिर वे कैम्प में लौट ग्राए । मेजर द स्पेन ग्रौर मैककैस्लिन ग्रौर ऐश ने सारे बिस्तरे बांध रखे थे, गाड़ी में खच्चर जोते जा चुके थे ग्रौर प्राय: सारा सामान लद चुका था । रसोई में चूल्हा ठंडा पड़ा था ग्रौर खाने की मेज पर कुछ ठंडा खाना रखा था । सिर्फ काफी ही गरम थी ।

इसाक दौड़ता हुआ रसोई में पहुंचा। मेजर द स्पेन और मैककैस्लिन आखिरी कौर खा रहे थे।—क्या ?—वह चिल्ला उठा—मैं घर नहीं जाऊंगा।

'हां', मैककैस्लिन ने कहा।—हम लोग आज रात वापस जा रहे हैं। मेजर घर पहुंचना चाहते हैं।

'नहीं' उसने कहा—मैं यहीं ठहरूंगा।

'तुम्हें सोमवार को स्कूल जाना है। तुम निश्चित समय से एक हफ्ता ज्यादा ठहर चुके हो। अब घर चलकर तुम्हें स्कूल का काम पूरा करना है। सैम ठीक है। तुमने डाक्टर की बात सुनी ही होगी। मैं बून और टेनी के बेटे जिम को उसके पास रहने के लिए छोड़े जा रहा हूं।

इसाक हांफ रहा था। दूसरे लोग भी रसोई में चले आए। इसाक ने उत्तेजित हो तेजी से सब के चेहरों को देखा। बून के हाथ में एक नई बोतल थी। उसने बोतल के नीचे हथेली मारकर काग को दांतों से निकाल थूक फेंका और गटक-गटक पीने लगा।—तुम्हें स्कूल जाना ही होगा—बून ने कहा—नहीं तो मैं खुद ही तुम्हारी दुम पकड़कर तुम्हें भेज दूंगा, फिर चाहे तुम सोलह बरस के हो या साठ बरस के। पढ़े-लिखे बिना क्या खाक करोगे ? पढ़े-लिखे बिना मैककस्लिन आज कहां होता ? अगर मैं स्कूल नहीं जाता तो आज कहीं होता ?

इसाक ने फिर मैककैस्लिन की ओर देखा। इसाक छोटी-छोटी, दबी-दबी सांस ले रहा था मानो उस रसोई में उसका दम घुट रहा हो।—आज बृहस्पतिवार है। मैं रविवार की रात को घर लौट आऊंगा और रात में ही बैठकर स्कूल का सारा काम कर लूंगा—उसने कहा। वह अभी तक निराश न हुआ था।

'नहीं, मैं कहता हूं' मैककैस्लिन ने कहा।—यहां बैठो और खाना खाओ। हम आज रात जा रहे हैं।

'ठहरो मैककैस्लिन' जनरल काम्पसन ने कहा। इसाक को उनके आने का पता तभी चला जब उन्होंने आकर उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—क्या बात है, बेटे ?

'मुझे यहां रुकना होगा,' लड़के ने कहा— मुझे रुकना ही होगा।

'ठीक है,' जनरल काम्पसन ने कहा—तुम रुक सकते हो। अगर स्कूल से एक हफ्ते गैर हाजिर रहने से तुम्हें किसी किराए के टट्टू मास्टर द्वारा दिया गया काम पूरा करने के लिए पसीना बहाना पड़ता हो तो बेहतर है कि तुम पढ़ना ही छोड़ दो। और तुम मैककैस्लिन, बेकार बातें मत करो। तुम्हारा एक पैर खेत में है और दूसरा बैंक में। तुम उतना भी नहीं जानते जितना यह लड़का जानता है। इसमें वह चीज़ है जो तुम और तुम्हारे बाप-दादाओं में नहीं थी। यह सिर्फ एक कम्पास की मदद से उस भालू को देखने चला गया जिसे हम दूर से गोली भी नहीं मार पाए थे और फिर अंधेरे में दस मील वापस चला आया।

'ठीक है,' जनरल काम्पसन ने फिर कहा—यहां खाने-पीने को काफी है। तुम रविवार को घर लौट आओगे। यही वादा तो तुमने मैककैस्लिन से किया है न ? रविवार को आना है, रविवार की रात को नहीं।

'हां श्रीमान्' लड़के ने कहा।

'तो आओ बैठो और हम सब खाना खाएं', उसने कहा—हमें जल्दी चलना है। घर पहुंचते-पहुंचते कड़ी सर्दी पड़ने लगेगी।

वे खाना खा चुके थे। गाड़ी लदी खड़ी थी और चल देने को तैयार थी, सिर्फ लोगों के बैठने भर की देर थी। तय हुआ था कि बून बड़ी सड़क तक गाड़ी को चलाकर ले जाएगा और वहां से घोड़ों वाली गाड़ी में वे लोग बैठेंगे। बून गाड़ी के पास खड़ा था। वह सबसे लम्बा था और उसके सिर पर बंधी पट्टियां किसी पठान की पगड़ी-सी लग रही थीं। उसने

पुरानी बन्दूक लेकर, जिससे उसने कभी किसीको न मारा था, लपक पड़ा। मैककैस्लिन अपने खच्चर के रुकने से पहले ही उतरकर बून की तरफ बढ़ा।

'रुक जाओ', बून ने कहा—भगवान कसम, मैं शेरू को छूने न दूंगा। रुक जाओ मैककैस्लिन।—फिर भी मैककैस्लिन सधे हुए कदमों से बढ़ता चला आया।

'मैककैस्लिन', मेजर द स्पेन ने कहा। फिर मेजर ने कहा—बून! ओ बून!—और फिर वह भी घोड़े से उतर आया। इसाक भी जल्दी से खड़ा हो गया और फिर भी मैककैस्लिन सधे हुए कदमों से बढ़ा चला आया और कब्र के पास हाथ बढ़ाकर उसने बून की बन्दूक को बीच में से पकड़ लिया और वह और बून शेरू की कब्र के ऊपर बन्दूक बीच में रखकर आपस में जकड़े खड़े थे और मैककैस्लिन से लम्बा बून का विस्मित और उन्मत्त मुख दिखाई दे रहा था, और उसके सिर पर बूढ़े भालू के पंजों के निशान साफ नजर आ रहे थे, और तभी बून का सांस फूलने लगा जैसे मानो एक साथ हवा की कमी हो गई हो और सांस घुटने लगी हो।

'जाने भी दो बून', मैककैस्लिन ने कहा।

'तुम अपने को क्या समझते हो?' बून बोला—क्या तुम यह नहीं जानते कि मैं यह बन्दूक तुमसे छीन सकता हूं? क्या तुम नहीं जानते कि मैं इस बन्दूक को एक रूमाल की तरह गोल करके तुम्हारी गर्दन में बांध सकता हूं।

'हां', मैककैस्लिन ने कहा—छोड़ दो बन्दूक, बून।

'शेरू यही चाहता था। उसने हमें बताया था। उसने यह भी बताया था कि क्या करना होगा। तुम इसे यहां से हटा नहीं सकते। हमने इसके कहे मुताबिक किया है, और मैं तब से जंगली बिल्लियों और

कीड़ों से इसके शरीर को बचाने के लिए यहां बैठा हूं.....' फिर मैककैस्लिन ने बन्दूक तिरछी की और पांचों गोलियां एक साथ जमीन पर चल पड़ीं और मैककैस्लिन ने बून की ओर से आंखें हटाए बिना ही बन्दूक छीनकर पीछे फेंक दी।

'क्या तुमने इसे मारा था बून ?' उसने कहा। फिर बून हिला, वह मुड़ा, एक नशेबाज की तरह और एक क्षण के लिए अन्धे की तरह आगे बढ़कर एक बड़े पेड़ के पास जा हठात् रुक गया और फिर दोनों हाथ बढ़ा पेड़ की ओर लपक पड़ा और पेड़ के तने में अपना मुंह छिपाकर जोर-जोर से सांसें भरने लगा। मैककैस्लिन पीछे-पीछे चला आया था, उसने एक भी क्षण के लिए मैककैस्लिन की ओर से आंखें न हटाई थीं।

'क्या तुमने उसे मारा था बून ?'

'नहीं,' बून ने कहा—नहीं।

'सच बताओ,' मैककैस्लिन ने पूछा—अगर उसने चाहा होता तो मैं ही खुद उसे मार डालता।—इसाक उठ खड़ा हुआ। वह उन सब लोगों के बीच मैककैस्लिन की ओर मुंह किए खड़ा था और ऐसा लग रहा था कि न केवल उसकी आंखों से बल्कि उसके समूचे चेहरे से पसीने की तरह पानी बह रहा है।

'उसे ऐसे ही रहने दो।' वह चिल्ला उठा—भगवान के लिए उसे ऐसे ही रहने दो।

४

तब वह इक्कीस वर्ष का था। वह जानता था कि वह स्वयं और उसका चचेरा भाई, जंगल के ही नहीं बल्कि उस पाली-पोसी भूमि के संसर्ग में हैं जो उसे विरासत में मिलनी थी। यह भूमि उसके दादा बूढ़े कैरोदर्स मैककैस्लिन ने एक गोरे आदमी के नाते पैसे देकर उन जंगली लोगों से खरीदी थी जिनके बाप-दादा बिना बन्दूक उस जंगल में शिकार करते थे। फिर उसने उसे सुधारा-संवारा और व्यवस्थित किया था अथवा यह उसका विचार मात्र था कि उसने ऐसा किया था, क्योंकि बूढ़े कैरोदर्स के गुलाम जिनके जीवन-मरण पर उसका अधिकार था, अपना पसीना बहाकर सिर्फ चौदह इंच की गहराई तक उस भूमि को खुरच सके थे ताकि उसमें से कोई ऐसी चीज़ पैदा हो सके जो पहले न थी और जिसे पैसों में बदला जा सके, क्योंकि बूढ़े कैरोदर्स ने पैसे देकर उस जमीन को खरीदा था, उसपर कब्जा रखा था और इसलिए वह कुछ उचित मुनाफा भी चाहता था। इसी कारण बूढ़े कैरोदर्स मैककैस्लिन ने इस बात को अच्छी तरह समझते हुए अपने बाल-बच्चों और अपने उत्तराधिकारियों में यह विश्वास पैदा करा दिया था कि भूमि उसकी अपनी है और उसे अधिकार है कि वह किसीको भी वह जमीन विरासत में दे डाले क्योंकि सबल और क्रूर व्यक्ति को अपने गर्व, गौरव और शक्ति का पूर्वज्ञान होता है। ठीक इसी तरह मेजर द स्पेन ने अच्छी तरह समझते हुए उस जंगल का एक टुकड़ा हासिल किया था जो किसी भी दस्तावेज से ज्यादा पुराना और बड़ा था। ठीक इसी तरह बूढ़ा टामस सटपेन, जिससे पैसे देकर मेजर द स्पेन ने जंगल का टुकड़ा खरीदा था, इस बात को अच्छी तरह जानता था। ठीक इसी तरह आदिवासी सरदार इक्केमोटब था, जिससे टामस सटपेन ने पैसे या शराब देकर या कुछ और ऐसी ही वस्तु देकर जमीन हासिल

की थी। वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि उस जमीन के एक टुकड़े को भी बेचने या त्यागने का उसे अधिकार नहीं है।

जंगल के संसर्ग में नहीं बल्कि उस भूमि के संसर्ग में; कुछ पाने की तीव्र लालसा में नहीं बल्कि परित्याग में; और कचहरी की चौकोर, बरामदेदार लकड़ी की इमारत में, जिसके अधीन उस समय भी सब मज़दूर थे और जिसपर नसवार और सर्दी-जुकाम तथा ऐसे लेपों और मरहमों के विज्ञापन लगे थे जो गोरे आदमी काले नीग्रो लोगों के बालों को सीधा करने या उनकी चमड़ी का रंग बदलने के लिए बेचते थे ताकि वे नीग्रो लोग भी उन लोगों जैसे ही लगने लगें जिन्होंने उन्हें दो सौ वर्ष तक अपने बन्धन में रखा था और जिन्हें अगले सौ वर्ष तक, एक गृहयुद्ध के बावजूद पूर्ण स्वतंत्रता न मिलनी थी।

वह स्वयं और उसका चचेरा भाई पनीर, नमकीन गोश्त, मिट्टी के तेल और तम्बाकू की खुशबुओं के बीच तथा खेती के तरह-तरह के औजारों तथा एक मेज़ और उसके ऊपर की आलमारी में रखे हुए उन बहीखातों के संसर्ग में पले थे। उन बहीखातों में खाने-पीने की रसद और अन्य साज-सामान का ब्यौरा लिखा रहता था। यह सामान कपास की खेती से प्राप्त होता था (जिसके दो धागे सत्य की भांति सुकुमार और भूमध्य रेखा की भांति अदृश्य होते हुए भी एक मज़बूत लोहे के तार की तरह उन लोगों को ज़मीन से बांधे हुए थे जो अपना पसीना बहाकर कपास उगाते थे)। वे पुराने बहीखाते बहुत पुराने और बेढंगे हो चुके थे और उनके पीले पन्नों पर उसके पिता तथा चाचा के हाथ की लिखावट में गृहयुद्ध से पूर्व के दो दशकों का विवरण लिखा था

'छोड़ दोगे इस ज़मीन को', मैककैस्लिन ने कहा—त्याग दोगे इस ज़मीन को। तुम उस आदमी के वारिस हो, जिसने मौका देखकर इस जमीन को खरीदा, उसे किसी भी तरह हासिल किया, और उसपर किसी

भी तरह कब्जा रखा। यह कभी एक घोर जंगल था और इसमें जंगली जानवर और उनसे भी ज्यादा जंगली आदमी बसते थे और इसे उसने साफ करवाया था और इस लायक बनाया था कि उसके बाल-बच्चे आराम, बेफिक्री और शान से रह सकें और उसके नाम तथा कारनामों की याद कायम रख सकें। तुम उसके पितृकुल के वंशज ही नहीं, बल्कि पितृकुल के वंशजों में और तीसरी पीढ़ी में एकमात्र और अंतिम संतान हो, जब कि मैं एक तो कैरोदर्स से चौथी पीढ़ी में हूं और दूसरे मैं उनसे मातृकुल की ओर से ही संबंधित हूं और मेरे नाम में मैककैस्लिन शब्द भी सौजन्यवश, और मेरी दादी को उस व्यक्ति की सफलताओं पर अभिमान होने के कारण जोड़ दिया गया जिसकी सम्पत्ति और यादगार को तुम समझते हो कि तुम त्याग सकते हो।'

'मैं इस जमीन को छोड़ नहीं सकता, त्याग नहीं सकता क्योंकि यह जमीन कभी भी मेरी नहीं थी। पिताजी और चाचाजी की भी यह जमीन नहीं थी और न वे इसे मुझे बख्श सकते थे; न दादाजी की ही यह जमीन थी क्योंकि बूढ़े इक्केमोटब को भी यह हक हासिल न था कि वह इसे दादाजी को बेच सकता था। न यह जमीन इक्केमोटब के बाप के बाप की थी और न किसी अन्य व्यक्ति की ही, क्योंकि जैसे ही इक्केमोटब ने यह जाना, यह महसूस किया कि वह पैसा लेकर उस जमीन को बेच सकता था, उसी क्षण से यह भूमि उसकी या उसके बाप-दादाओं की न रही और जिस आदमी ने इस जमीन को खरीदा, दरअसल, कुछ नहीं खरीदा।'

'कुछ नहीं खरीदा ?'

'हां, कुछ नहीं खरीदा, क्योंकि बाइबिल में लिखा है कि ईश्वर ने कैसे इस धरती को बनाया और फिर धरती की ओर देखा और कहा—ठीक है—और फिर उसने मनुष्य को जन्म दिया। ईश्वर ने आरम्भ में धरती बनाई, फिर उसपर मूक पशुओं को बसाया और तब मनुष्य को

जन्म दिया ताकि वह ईश्वर का प्रतिनिधि बनकर ईश्वर की ओर से इस धरती पर और इसपर बसने वाले पशुओं पर आधिपत्य स्थापित कर सके, न कि अपने निजी नाम से, अपने वारिसों को उस भूमि का हमेशा के लिए, पीढ़ी दर पीढ़ी अमिट अधिकार प्रदान कर लम्बे-चौड़े, चौकोर टुकड़ों में उसे विभाजित कर सके। ईश्वर की मर्जी थी कि वे लोग भाई-चारे की भावना के साथ सारी बिरादरी के लिए उस भूमि पर अधिकार रखे, इस अधिकार के लिए केवल दया और नम्रता और सहनशीलता और परिश्रम की फीस ही उसने मांगी थी।'

'फिर भी दादाजी ने इस भूमि को अपना बनाया था। उनसे पहले और भी बहुत-से लोग ऐसा कर चुके थे क्योंकि जैसा कि बाइबिल में कहा गया है, स्वर्ग से मनुष्य का बहिष्कार हो चुका था। यह काम अकेले दादा-जी ने ही नहीं किया था क्योंकि बहुत पहले ईश्वर के प्यारे अब्राहम और उसके उन बेटों का लम्बा इतिहास है जिन्होंने अब्राहम को अधिकार-वंचित किया था, और पांच सौ वर्षों तक आधा ज्ञात संसार और उसकी समस्त वस्तुएं केवल एक नगर के अधीन थीं, जैसे हमारे खेत और उनमें काम करने वाले हमारे गुलाम इस कचहरी की इमारत और इसमें रखे हुए इन बहीखातों के अधीन हैं और उनसे कभी छुटकारा नहीं पा सकते। और अगले हजार वर्ष तक लोग उस विध्वंस के टुकड़ों के लिए लड़ते-झगड़ते रहे और अंत में ये टुकड़े ही खत्म हो गए और लोग पुरानी दुनिया की मांसहीन हड्डियों के लिए गुर्राते रहे जबकि अचानक ही उन्हें एक नए गोलार्द्ध का पता लगा। इसीलिए मैं कहता हूं कि हर चीज़ के बावजूद बूढ़े कैरोदर्स ने इस जमीन को खरीदा, इसपर कब्जा पाया और इसे किसी भी प्रकार अपना बनाया, फिर इसे विरासत में दिया। नहीं तो तुम यहां खड़े इस भूमि को छोड़ने और त्यागने की बात कैसे करते? बूढ़े कैरोदर्स ने पचास साल तक इस जमीन पर कब्जा रखा जिसे आज

तुम छोड़ने की बात कर रहे हो और ईश्वर ने, परम न्यायपालक जगत्-पिता ने क्षमा कर दिया। क्या सचमुच? या केवल देखता ही रहा? क्या सचमुच? कम से कम उसने किया कुछ नहीं, देखा या शायद देख नहीं सका या देखना पसन्द नहीं किया? या शायद वह विकृत, नपुंसक अथवा अन्धा है?'

'अधिकारहीन है,'

'क्या?'

'अधिकारहीन है, नपुंसक नहीं। उस (ईश्वर) ने क्षमा नहीं किया, और न वह अन्धा ही है क्योंकि वह यह सब देख रहा था और मैं तो यह कहता हूं, उसे स्वर्ग से वंचित किया गया था। कैनान के अधिकार से वंचित किया गया था, और जिन्होंने उसे अधिकार वंचित किया उन्होंने अधिकार-वंचित को अधिकारवंचित किया और रोमन कृषिभूमियों को बिना जोते लाभ पाने वाले जमीदारों के पांच सौ वर्ष और उत्तरी वनों से आए हुए उन जंगली आदमियों के एक हज़ार वर्ष जिन्होंने उन्हें अधिकारवंचित करके उनकी लालसा की वस्तु पर कब्जा कर लिया था और जो स्वयं फिर दूसरों के लोभ के शिकार बन गए थे, और जिन्हें तुम पुरानी दुनिया की मांसहीन हड्डियों पर पुरानी दुनिया के बेकार धुंधलके में गुर्राते देखते रहे थे और जो उस ईश्वर के नाम की निंदा करते थे और अंत में उसने एक मामूली अंडे का प्रयोग करके उन्हें एक नई दुनिया दिखा दी। उसने पुरानी दुनिया के लोगों के आपसी झगड़ों को देख एक नई दुनिया खोल दी जिसपर नम्रता, दया और सहनशीलता के आधार पर एक नया राष्ट्र स्थापित किया जा सकता था। फिर भी और सब चीज़ों के बावजूद दादाजी ने इस भूमि का स्वामित्व पाया क्योंकि ईश्वर की ऐसी आज्ञा थी। वह नपुंसक नहीं, न वह अन्धा ही है और न उसने क्षमा ही किया था। उसने तो आज्ञा दी थी और वह देखता रहा था कि किस प्रकार वह भूमि

आरम्भ से ही दादाजी और उनके जैसे अन्य गोरों द्वारा खरीदे जाने से पूर्व ही अभिशप्त थी और इसीलिए उसने उनको पुरानी दुनिया की भ्रष्ट और निरर्थक संध्या से, उसकी दूषित हवा के बहाव से इस नई जमीन पर ला खड़ा किया और यह भूमि दया और कृपा कर उन्हें दान में दी बशर्ते कि वे भी दया और नम्रता, और सहानुभूति और सहनशीलता बरतें।'

'ओ!'

'ईश्वर ने देखा कि जब तक इक्केमोटब और इक्केमोटब के बेटे, पोते, परपोते, पीढ़ी दर पीढ़ी, लगातार इस जमीन को अपने हक में रखते आए इस भूमि का भाग्य फूटा था। शायद ईश्वर ने यह भी देखा कि कुछ समय के लिए इस भूमि को इक्केमोटब के वंश से अलग करके और एक अन्य को स्थानापन्न करके ही वह अपना उद्देश्य पूरा कर सकता था। शायद ईश्वर को पहले से ही मालूम था कि दूसरा कौन होगा, शायद यह न्यायोचित ही था कि गोरों के श्राप को दूर करने के लिए केवल गोरों का ही रक्त योग्य और समर्थ था।'

'ओ।'

'और जब उसने अनीति के विरोध में अनीति पैदा करने वाला रक्त प्रयुक्त किया, जैसे डाक्टर ज्वर दूर करने के लिए ज्वर बढ़ाने वाली दवा काम में लाते हैं, ज़हर को मारने के लिए ज़हर देते हैं तो वह प्रतिशोध लेने से कुछ अधिक कर रहा था। शायद उसने सब लोगों में से दादाजा को ही चुना। शायद वह जानता था कि दादा खुद काम न आने वाले थे क्योंकि वह वक्त से काफी पहले पैदा हुए थे, लेकिन वह जानता था कि दादा के उत्तराधिकारी होंगे, और शायद उसने पहले से ही जान लिया था कि कौन उत्तराधिकारी होंगे, शायद उसने दादा में ही उन अगली तीन पीढ़ियों का बीज देख लिया था जिनके बाद जाकर उसके अपने कुछ गरीब

बन्दे आज़ाद होने वाले थे।'

'तुम बाइबिल की वाणी से बोल रहे हो। जानते हो और वह···

'हां, कुछ बातें ऐसी हैं जो ईश्वरीय वाणी हैं और कुछ ऐसी हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे ईश्वर ने कहीं हैं पर ईश्वर ने कहीं नहीं। मैं जानता हूं कि तुम यही कहोगे कि यदि मेरे लिए एक वस्तु सत्य है और तुम्हारे लिए दूसरी तो फिर कैसे चुना जाए कि सत्य क्या है? यह चुनने की ज़रूरत नहीं। दिल पहले से ही जानता है। ईश्वर ने अपनी पोथी उन लोगों के लिए नहीं लिखी जो अपनी पसन्द से चुनना और छांटना चाहते हैं, उन लोगों के लिए लिखी है जो दिल से समझना चाहते हैं। यह पोथी बहुत अक्लमन्द लोगों के लिए नहीं क्योंकि शायद अक्लमन्दों को इसकी जरूरत नहीं या शायद अक्लमन्दों के पास अब दिल नहीं। यह तो उन लोगों के लिए है जो दलित और पतित हैं और जो हृदय के अतिरिक्त अन्य माध्यम से पढ़ नहीं सकते। जिन लोगों ने इस ईश्वरीय वाणी को लिखा है वे सत्य के बारे में लिख रहे थे और सत्य केवल एक है और वह उन सब चीज़ों में है जो दिल को छूती हैं।'

'तो जिन लोगों ने इस ईश्वरीय वाणी को लिखा है, क्या वे झूठे भी थे?'

'हां, क्योंकि वे इन्सान थे। उन्होंने अपने बाद आने वाले सभी परेशान और उलझे हुए दिल के लोगों के लिए दिल की बेहद उलझन में से सचाई निकालकर लिखने की कोशिश की थी। जो वे कहना चाहते थे और जो ईश्वर कहना चाहता था, वह बहुत आसान था। जिनके लिए वे ईश्वरीय शब्द लिखे गए थे वे उन्हें स्वीकार नहीं कर सकते थे। उन्हें रोजमर्रा की बोलचाल में लिखा जाना था ताकि वे लोग उन्हें समझ सकें, सिर्फ वही लोग नहीं जो उन शब्दों को सुनते थे बल्कि वे भी जो उन्हें बोलते और लिखते थे क्योंकि वे भी उन पुनीत शब्दों को काम-क्रोध, मद-

लोभ, और भय-घृणा की जटिलताओं में ही, जो हृदय को अनुप्रेरित करती हैं, समझ सकते थे । जो केवल श्रवण द्वारा ही पा सकते हैं उन्हें सत्य पाने के लिए कितना पीछे जाना पड़ता है ?'

'मैं तुम्हारी बात का जवाब दे सकता हूं चूंकि तुम एक ही पोथी से अपनी बात सही और मेरी बात गलत साबित करना चाहते हो । लेकिन जवाब देना जरूरी नहीं क्योंकि तुम खुद जवाब दे चुके हो । जैसा कि तुम कहते हो, दिल सचाई जान सकता है, वह कभी झूठ नहीं बोलता, कभी गलती नहीं करता। शायद तुम सच कहते हो, क्योंकि यद्यपि तुम पुरखा कैरोदर्स से अपने आपको तीन पीढ़ी बाद का मानते हो, पर दरअसल तीन पीढ़ियां नहीं थीं। पीढ़ियां पूरी तरह दो भी नहीं थीं। चाचा बुक और चाचा बडी । और वे न पहले और न अकेले थे । हज़ारों बुक और बडी दो पीढ़ियां पूरी होने से पहले ही, और कभी-कभी इस देश में एक ही पीढ़ी में, हो चुके हैं । इस देश में, जिसे कि तुम्हारा दावा है ईश्वर ने उत्पन्न किया और स्वयं मनुष्य ने उसे अभिशप्त और कलंकित बनाया । और वह·······

'हां । पिताजी और चाचाजी से कहीं ज्यादा लोग थे ।' उसने मेज के ऊपर आलमारी की ओर निगाह तक न उठाई, और न मैककैस्लिन ने ही उधर देखा । उनके लिए देखना ज़रूरी भी न था। उसे लगा कि चमड़े की पुरानी, तड़की हुई जिल्दों में बंधे वे बहीखाते अपनी-अपनी जगह से उठकर, एक-एक करके, अपने लुप्त होते हुए काल-क्रम से मेज़ पर खुल रहे हों या यों कहिए कि उन पुराने, पीले पड़ते पन्नों और उनपर हल्की, मिटती-सी स्याही में लिखा हुआ अन्याय तथा थोड़ा-सा सुधार और पूर्व-स्थापन का वह विवरण अनाम, अनन्तकालीन, सामुदायिक धूलि में लुप्त होने से पूर्व किसी देवता के न्यायालय, अथवा किसी पुण्य वेदी, अथवा सम्भवतः सर्वव्यापी, सर्वोच्च न्यायकर्ता, के सम्मुख ही अंतिम बार अव-

लोकन, चिंतन और स्मरण के लिए खोले जा रहे हों।'

'वे पुराने पीले पन्ने जिनपर धुंधली स्याही में लिखावट थी, सबसे पहले उसके दादा और फिर उसके बाप और चाचा की, जो पचास और यहां तक कि साठ बरस की उम्र में भी कुंवारे थे और जिनमें से एक खेत के सारे काम करता था और दूसरा घर में खाना बनाता था और तब भी बनाता रहा जब कि उसके भाई ने शादी कर ली और जब इसाक भी पैदा हो चुका था।'

'वे दोनों भाई बाप के मरते ही उसके बेहद बड़े, खलिहान जैसे मकान को छोड़, जिसे बाप पूरा न कर पाया था, एक लकड़ी की बनी कोठरी में चले आए थे जो दोनों ने मिलकर बनाई थी और आगे चलकर और भी कमरे उन्होंने बनवाए, और लकड़ी के लट्ठों को उठाने के अलावा, जो केवल इन दो आदमियों के न थे, और किसी काम में उन्होंने किसी गुलाम को हाथ न लगाने दिया था, और फिर पुराने, बड़े मकान में सारे गुलामों को बसा दिया था जिसकी बहुत-सी खिड़कियों में तब तक भी तख्ते गड़े थे या हिरन या रीछ की खालों पर कीलें ठोक दी गई थीं। हर शाम खेत पर काम करने वाला भाई फौजी हवलदार की तरह नीग्रो लोगों को परेड करवाता और सभी मर्द, औरत, बच्चों को ज़बर्दस्ती बिना पूछे-ताछे बंद कर देता था, उस बड़े मकान में, जो किसी बड़े से बड़ा और खुला और अधूरा था, मानो बूढ़ा कैरोदर्स अपनी अहंमन्यता की असीमित कल्पना के मूर्त संकेत को देख हतप्रभ हो उठा हो। तो एक भाई, जो खेती करता था, सब गुलामों को चील्हकर और गिनकर खेड़ की तरह बंद कर देता और कच्चे लोहे की एक बड़ी कील उस मकान के दरवाज़े में लगा देता, जिसकी आधी खिड़कियां लापता थीं और जिसके पिछले दरवाज़ों में चूलें न थीं और इसलिए जब वह बड़ा हुआ और बड़े होने के पचास बरस बाद भी वह एक तरह की किंवदंती सुनता आया

था : कि मैककैस्लिन परिवार के गुलाम रात को चोरी-चोरी चांदनी रात में खुली सड़कों से बचते हुए दूसरे खेतों तक आया-जाया करते थे, और दोनों गोरे भाइयों तथा उन दो दर्जन काले लोगों के बीच भलेमानसों-सा इकरार था कि शाम को हाज़री देने और मकान में बंद किए जाने के बाद, गोरों में से कोई भी मकान के पिछवाड़े जाकर न देखेगा। बशर्ते कि सभी नीग्रो सुबह दरवाज़ा खुलते समय अन्दर मौजूद हों।

दोनों जुड़वां भाइयों के हाथ की लिखावट भी एक-सी ही थी, जब तक कि दोनों नमूनों को पास-पास रखकर मुआयना न किया जाए, और जब दोनों के हाथ के लिखे अक्षर एक ही पृष्ठ पर होते (जैसा कि अक्सर होता था, मानो बहुत समय से, ज़बानी बातचीत के बजाए, उन्होंने अपने ज़रूरी काम-काज के लिए, जो १८३० और '४० में उत्तरी मिसीसिपी के सारे वीरान जंगल को पार करके आगे बढ़ गया, और सबमें से छांटकर उन्हें ही चला रहा था। प्रतिदिन बढ़ती हुई पृष्ठसंख्या का प्रयोग करते थे।) तो वे दोनों लिखावटें ऐसी लगतीं मानो किसी एक दस वर्ष के लड़के ने लिखा हो, अन्तर केवल इतना था कि लिखावट में तब भी सुधार न हुआ जब कि विरासत में पाए और खरीदे हुए गुलामों की संख्या बढ़ने लगी—रोसिकस और फोबी, और थ्यूसीडाइडीज़ और यूनिस और उनके बेटे-पोते, और सैम फादर्स और उसकी मां, जिन दोनों को एक नई घोड़ी के बदले इक्केमोटब से उसने हासिल किया था, जिस तरह वह जमीन भी इक्केमोटब से हासिल की थी, और टेनी बीचम जिसको एक भाई एमोडियस ने ताश के खेल में एक पड़ौसी से जीता था और पर्सीवल ब्राउनली, जिसे दूसरे भाई थियोफिलस ने बेडफोर्ड फारेस्ट से न जाने क्यों खरीदा था, और उस समय वह दासों का व्यापारी ही था, अभी सेनापति नहीं बना था (केवल एक ही पृष्ठ था और उसमें एक

वर्ष का नहीं, केवल सात महीने का ब्यौरा था, जो इसाक अब समझने लगा था कि उसके बाप के हाथ की लिखावट में ही था) :

> पर्सीवल ब्राउनली २६ वर्ष का क्लर्क और मुनीम कोल्ड वाटर में एन० बी० फारेस्ट से खरीदा ३ मार्च १८५६ २६५ डालर

और उसके नीचे उसी लिखावट में :

> ५ मार्च १८५६ मुनीम नहीं पढ़ सकता अपना नाम लिख सकता है पर वह मैंने पहले भी लिख दिया था कहता है कि मैं हल चला सकता हूं पर मुझे ऐसा नहीं लगता आज खेत में भेजा है ५ मार्च १८५६

और उसी लिखावट में :

> ६ मार्च १८५६ हल भी नहीं चला सकता कहता है कि मैं उपदेशक बनूंगा इसलिए शायद वह ढोरों को पानी पीने के लिए जोहड़ का रास्ता तो दिखा ही सकता है

और अब दूसरी लिखावट थी, और इस लिखावट को उसी पृष्ठ पर दूसरी लिखावट के साथ देखकर वह पहचान सकता था कि यह उसके चाचा के हाथ की है :

> २३ मार्च १८५६ वह भी नहीं कर सकता हां एक बार में एक को ही उससे पिंड छुड़ाओ

फिर पहली वाली लिखावट में :

> २४ मार्च १८५६ कौन ऐसा बुद्धू है जो उसे खरीदेगा

फिर दूसरी लिखावट में :

> १९ अप्रैल १८५६ कोई भी नहीं तुमने दो महीने पहले कोल्ड वाटर में बहुत मंहगा सौदा कर लिया मैंने यह कभी नहीं कहा कि उसे बेच दो उसे आज़ाद कर दो

पहली में :

२२ अप्रैल १८५६ में यह रकम उसीसे हासिल करूंगा ।

दूसरी में :

१३ जून १८५६ कैसे १ डालर प्रति वर्ष २६५ डालर २६५ वर्ष उसे आज़ाद करने में दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करेगा

और फिर पहली में :

१ अक्टूबर १८५६ खच्चर जोसेफीन ने टांग तोड़ ली और गोली से उड़ा दिया गया दूकान गलत नीग्रो गलत सब कुछ गलत १०० डालर

और फिर उसीमें :

२ अक्टूबर १८५६ आज़ाद कर दिया मैककैस्लिन के नाम डाला और मैककैस्लिन २६५ डालर

और फिर दूसरी में :

३ अक्टूबर १८५६ थियोफिलस मैककैस्लिन के नाम डाले नीग्रो २६५ डालर खच्चर १०० डालर ३६५ डालर वह अब तक गया नहीं है पिताजी आते ही होंगे

फिर पहली में :

३ अक्टूबर १८५६ कुतिया का बच्चा जाएगा नहीं पिताजी ने क्या किया

दूसरी में :

२९ अक्टूबर १८५६ उसका दूसरा नाम रख दिया

पहली में :

३१ अक्टूबर १८५६ उसका दूसरा नाम क्या रक्खा

दूसरी में :

क्रिसमस १८५६ स्पिंट्रिअस

साकार रूप धारण करने लगे और पृष्ठ के बाद पृष्ठ तथा वर्ष के बाद वर्ष गुज़रने के साथ-साथ उनका वासनाओं और जटिलताओं से पूर्ण एक तरह का संदेहास्पद जीवन भी दिखाई देने लगा। वहां सब कुछ साकार होने लगा, न केवल सामान्य और उपेक्षित अन्याय तथा इसका धीरे-धीरे खतम होते जाना बल्कि वह खास दुखद घटना जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी और जो कभी खतम नहीं की जा सकती थी, नये पृष्ठ और नये लेजर पर वह लिखावट थी जिसे वह देखते ही पहचान सकता था कि उसके पिता की है :

> पिताजी मर गए लूसिअस क्विंटस कैरोदर्स मैककैस्लिन, कैलिना १७७२ मिसिप्पी १८३७। मरे और दफनाए गए २७ जून १८३७
>
> रोस्कस । दादाजी ने कैलिना में लिया था नहीं मालूम कितने साल का आज़ाद किया २७ जून १८३७ जाना नहीं चाहता। मरा और दफनाया गया १२ जनवरी १८४१
>
> फिब्बी रोस्कस-पत्नी। दादाजी ने कैलिना में खरीदी पचास वर्ष की आयु बताती है आज़ाद की २७ जून १८३७ जाना नहीं चाहती। मरी और दफनाई १ अगस्त १८४९
>
> थ्यूसीडस रोस्कस और फिब्बी-पुत्र पैदा हुआ कैलिना में १७७९। १० एकड़ का टुकड़ा लेने से इंकार कर दिया पिता के वसीयतनामा २८ जून १८३७ ए.और टी मैककैस्लिन से २०० डालर नकद लेने से इंकार कर दिया २८ जून १८३७ रहना चाहता है और उसके लिए काम करना चाहता है

और फिर अगले पांच पृष्ठों में प्राय: इतने ही वर्ष का जमाखर्च दिखाया गया था। जमाखाते में उसकी संचित मज़दूरी थी जो धीरे-धीरे बढ़ती जा

रही थी। (और लड़के को ऐसा लगता था कि जैसे वह उस काले आदमी को आंखों से सचमुच देख रहा है। वह काला गुलाम जिसे उसके गोरे मालिक ने उसी कार्य द्वारा सदा के लिए आज़ाद कर दिया था जिससे काला आदमी कभी भी मुक्त नहीं हो सकता। वह दफ्तर में दाखिल होकर गोरे आदमी के बेटे से बहीखाता देखने की इजाजत मांगता था हालांकि वह गुलाम स्वयं एक शब्द भी नहीं पढ़ सकता था। उसे गोरे आदमी की बात माननी ही पड़ती थी क्योंकि हिसाब को जांचने, या यह पता लगाने का उसके पास कोई ज़रिया न था कि कितने दिनों बाद वह स्वतन्त्र हो सकेगा, और जहां चाहे वहां, चाहे १७ मील दूर जेफर्सन ही, जा सकेगा) और अंत में अंतिम बात लिखकर उसके नीचे दो लकीरें लगाई गई थीं।

> ३ नवम्बर १८४१ नकद थ्यूसीडस मैककैस्लिन को २०० डालर जे० में लुहारगीरी शुरू कि दिसम्बर १८४१ जे० में मरा और दफनाया गया १७ फरवरी १८५४
> यूनिस को पिताजी ने न्यू ओरलियन्स में ६५० डालर में खरीदा। १८०९ में थ्यूसीडस से उसकी शादी हुई और १८३२ में क्रिसमस के दिन वह क्रिक में डूब मरी।

और फिर दूसरे हाथ की लिखावट नज़र आई जो इसाक जानता था, उसके चाचा के हाथ की थी जो सारे दिन रसोई के चूल्हे के सामने बैठा खाना पकाता था :

> २१ जून १८३३ वह खुद डूबकर मरी थी

और फिर पहले हाथ की लिखावट में :

> २३ जून १८३३, क्या कभी किसी ने किसी नीग्रो को स्वयं डूबते सुना है

और फिर दूसरे हाथ की लिखावट में धीरे-धीरे जमाकर आखरी तौर पर, निर्णयात्मक रूप में लिखा था। दोनों वाक्य ऐसे लिखे हुए थे, मानो रबर की मुहर से लिखे गए हों :

१३ अगस्त १८३३ वह खुद डूबकर मरी थी

और इसाक सोचने लगा, लेकिन क्यों ? आखिर क्यों ? तब वह सोलह साल का था। न वह पहला मौका था और न आखरी, जब उसने दफ्तर में अकेले बैठकर उन पुराने बहीखातों को देखा था। जब वह बच्चा था, जब वह नौ और दस और ग्यारह वर्ष का था तभी से वह उन पुराने, जिल्द-बंधे बहीखातों को देखता आया था। हालांकि उन्हें खोलकर देखने की उसकी कोई खास इच्छा न थी परन्तु वह जानता था कि किसी न किसी दिन वह उन्हें खोलकर देखेगा क्योंकि केवल उन्हीं बहीखातों से वह क्रमानुसार और सविस्तार यद्यपि जटिल विवरण पा सकता था, न केवल अपने निजी खानदान का, बल्कि अपने सभी लोगों का, न केवल गोरों का बल्कि अपने सभी काले लोगों का जो उसके गोरे जन्मदाताओं की भांति ही उसकी अपनी विरासत के अंग थे, और साथ ही उस भूमि का भी जिसका सबने मिलकर उपभोग किया था, और जिसे सदा ही गोरे और काले सभी लोग मिलकर काम में लाते रहेंगे। उसका ख्याल था कि जब वह बूढ़ा हो जाएगा और जब कभी बैठे-बैठे ऊब जाएगा तब वह उन बहीखातों को देखेगा जिनमें उसके अपने जीवन के विगत स्थिर, अमिट वर्षों का विवरण अंकित होगा। अब वह सोलह साल का था। वह पहले से ही जानता था कि उन पृष्ठों में उसे क्या मिलेगा। तलाश शुरू करने से पहले ही वह जानता था कि उसे क्या मिलने वाला था। उसने आधी रात को मैककैस्लिन के कमरे से दफ्तर की चाबी निकाली और दफ्तर का दरवाज़ा अन्दर से बन्दकर बहीखातों के पुराने पन्नों को देखने लगा। वह उस समय यह न सोच रहा था कि नीग्रो औरत ने

ख़ुदकशी क्यों की थी बल्कि यह कि उसके पिता ने अपने भाई की टिप्पणी पढ़कर क्या सोचा होगा : चाचाजी ने यह क्यों सोचा कि उसने आत्म-हत्या की थी ? और वह अगले पृष्ठ पर ढूंढ़ने लगा हालांकि वह जानता था कि उसे क्या मिलने वाला था :

> टामैसीना उर्फ़ टामी थ्यूसीडस और यूनिस की बेटी जन्म
> १८१० प्रसूतिका में मृत्यु जून १८३३ और दफनाई गई

अगली बात भी :

> टर्ल जो थ्यूसीडस और यूनिस टामी से पैदा हुआ जून १८३३
> पिता का वसीयतनामा

और आगे कुछ नहीं, दिन प्रतिदिन दी जाने वाली मज़दूरी का कोई हिसाब नहीं, क्योंकि वह सौतेले भाइयों के बाद तक जीवित रहा, न खाने और कपड़े का कोई सही ब्यौरा और न उनके मरने और दफनाए जाने की ही कोई तारीख । केवल पिता का वसीयतनामा, और उसने वह भी देखा था : और उसी तरह बड़े-बड़े टेढ़ेमेढ़े अक्षरों में, अधूरे अस्पष्ट वाक्यों में, बूढ़े कैरोदर्स ने लिख रखा था, अपने समकालीन जीवन का विवरण जिसमें बहुत-सी बातें उसके हस्तलिखित शब्दों की ही भांति अस्पष्ट और अस्फुट रह गई थीं जैसे एक अविवाहित दास-कन्या के पुत्र को बालिग हो जाने पर एक हज़ार डालर की वसीयत जो कि उसके अपने बेटों को अपने पिता का पुत्र बनने की क़ीमत के रूप में अदा करनी थी और जो कि मुंह बंद करने के लिए रिश्वत के रूप में नहीं दी गई थी क्योंकि उसके जीते जी उसके सुयश को कोई कलंक न लगा सकता था । वह रकम तो एक तुच्छ वस्तु की भांति, एक टोपी या पुराने जूतों की तरह फेंकी गई थी । और वह नीग्रो लड़के को इक्कीस साल बाद जाकर मिलनी थी । तो इसके माने हैं कि एक नीग्रो से 'मेरा बेटा' कहने की अपेक्षा एक हज़ार डालर

दे देना आसान था, उसने सोचा, चाहे 'मेरा बेटा' दो शब्द ही हैं लेकिन फिर भी उनके बीच प्रेम, किसी न किसी प्रकार का प्रेम, तो रहा होगा, उसने सोचा। वह पीकदान ही तो न थी महज़ रात के पीकदान के साथ-सा प्रेम नहीं। बूढ़ा करोदर्स, इतना बूढ़ा कि अब उसकी ज़िन्दगी के पांच साल से अधिक बाकी न थे, वह बहुत वर्षों से विधुर था और चूंकि उसके बेटे न सिर्फ कुंवारे थे बल्कि आधी उम्र पार कर चुके थे, वह अपने घर में अकेलापन महसूस करता था, ऊब जाता था, और चूंकि खेती से अब बहुत धन मिलने लगा था, जो उसकी बुरी से बुरी लत आसानी से पूरी कर सकता था और वह लड़की पतिहीन, युवा, केवल तेईस वर्ष की थी जब उसके बच्चा पैदा हुआ था : शुरू में शायद बूढ़े ने अपना अकेलापन पूरा करने के लिए, घर में जवानी भरी चाल और आवाज़ देखने-सुनने के लिए उसे बुलाया और फिर उसकी मां को हुक्म दिया कि वह उसे हर रोज़ कमरे साफ करने और बिस्तरे बिछाने भेजे और उसके मां-बाप को मानना पड़ा क्योंकि वे शायद शुरू से ही इस बात के लिए तैयार थे क्योंकि वह उनकी इकलौती बेटी थी। वे खेत में मज़दूरी नहीं करते थे और उनका दर्जा दूसरे नीग्रो लोगों से ऊंचा था, न सिर्फ इसलिए कि पति और उसके मां-बाप भी गोरे आदमी को विरासत में मिले थे बल्कि इसलिए कि वह गोरा आदमी अपने गुलाम के लिए बहू ढूंढ़ने एक दिन में तीन सौ मील से ज़्यादा रास्ता तय कर न्यू ओरलियन्स पहुंचा था और वहां उसने लड़की को खरीदा था जब कि लोग घोड़ों पर सवार हो या पानी के जहाज़ों में बैठ यात्रा किया करते थे।

बस, इतना ही था। वह उन पुराने पत्रों को उलटता रहा और सोचता रहा अपने उस पुरखा के बारे में जो कभी कहीं बाहर न जाता था और जिसके लिए गुलाम खरीदना ज़रूरी न था और फिर भी वह न्यू ओरलियन्स पहुंचा एक लड़की खरीदने और जब इसाक दस वर्ष का

था, टामी का बेटा टर्ल ज़िन्दा था और इसाक जानता था कि टर्ल के रक्त में एक गोरे का रक्त मिला था और पचास वर्ष बाद आधी रात को एक लालटेन की रोशनी में उन पन्नों को पलटते हुए उसे लगा कि वह वस्तुतः उस लड़की को देख पाया जो क्रिसमस के दिन डूब मरी थी जिसकी बेटी और उसके प्रेमी का बच्चा छः महीने बाद ही पैदा हुआ था। वह चली जा रही थी नदी की ओर अकेली, अडिग, सब दुखों को त्याग कर, विश्वास और आशा को भी त्यागकर परित्याग की औपचारिकता के साथ।

बस, इतना ही काफी था। अब वह कभी उन बहीखातों को नहीं देखेगा, उनके पीले पुराने पन्ने सदा ही उसके मन में उसके अपने जन्म की भांति एक तथ्य बनकर रहेंगे :

> टेनी बीचम इक्कीस वर्ष एमोडियस मैककैस्लिन द्वारा ह्यूबर्ट बीचम से जीती गई—टामी के बेटे टर्ल से विवाहित १८५९

और आज़ादी की कोई तारीख नहीं क्योंकि उसकी आज़ादी और उसके पहले बच्चे की आज़ादी (जमींदार के) दफ्तर में मैक्कैस्लिनों से प्राप्त नहीं हुई थी, बल्कि वाशिंगटन के एक अपरिचित व्यक्ति से प्राप्त हुई थी, और न मरने या दफनाए जाने की ही कोई तारीख दर्ज थी, इसलिए नहीं कि मैककैस्लिन अपने बहीखातों में लोगों की मृत्यु का ब्यौरा न रखता था बल्कि इसलिए कि १८८३ में वह जीवित थी और अपनी शेष सन्तान का पुत्र देखने को जीवित रहने वाली थी।

> एमोडियस मैककैस्लिन बीचम टामी टर्ल और टेनी बीचम का बेटा १८५९ मरा १८५९

इसके बाद सारी लिखावट उसके चाचा की थी क्योंकि उसका पिता अब उस आदमी की घुड़सवार फौज में था जिसका नाम दास-व्यापार करते

हुए वह ठीक-ठीक लिख भी नहीं सकता था : एक पृष्ठ भी नहीं, एक पूरी पंक्ति भी नहीं :

बेटी टाम्स टर्ल और टेनी १८६२

और एक पूरी पंक्ति भी नहीं थी, न लिंग का जिक्र था और न कोई कारण बताया गया हालांकि लड़का इसका अंदाज कर सकता था क्योंकि मैककैस्लिन तब तेरह साल का था और उसे याद था कि किस तरह विक्सबर्ग के अलावा और स्थानों में हमेशा खाने को काफी नहीं होता था :

टाम्स टर्ल और टेनी का बच्चा १८६३

और फिर वही लिखावट और यह चलती रही, जैसे मानो टेनी के धीरज ने और बूढ़े कैरोदर्स की निर्दयता के क्षीण होते हुए और हल्के कमज़ोर भूत ने अंत में भुखमरी को भी जीत लिया था और इतना साफ, पूर्ण और सावधानी से लिखा हुआ और सही लेख था जितना लड़के ने इससे पहले नहीं देखा था, जैसे मानो वह बूढ़ा आदमी जिसे शुरू में औरत होना चाहिए था, खाना पकाने और अपनी तथा चौदह वर्ष के अनाथ की देखभाल करने के बीच के समय में, अपने भाई की अनुपस्थिति में बागान के बचे-खुचे काम को चालू रखने की कोशिश कर रहा था और उसने इस बात को एक आशाप्रद और शुभशकुन समझा था कि गुलामों का यह नामहीन उत्तराधिकारी कम से कम इतने काल तक जीवित रहेगा कि उसका कुछ नाम रखा जाए :

जेम्स थ्यूसीडस बीचम, टाम्स टर्ल और टेनी बीचम का बेटा जन्म २९ दिसम्बर १८६४ और दोनों ठीक है उसका नाम थियोफिलस रखना चाहते थे पर एमोडियस मैककैस्लिन और कैलिना मैककैस्लिन और दोनों मर गए इसलिए उन्हें छोड़ गए पैदा हुए २ बजे दोनों ठीक हैं

पर इससे आगे और कुछ नहीं, अभी लड़के को, जो अब जवान हो गया है, टेनेसी की बेकार यात्रा से लौटने में दो साल और लगेंगे और बूढ़े कैरोदर्स ने अपने नीग्रो पुत्र और उसके वंशजों को जो विरासत दी थी उसका तीसरा हिस्सा बिल्कुल जैसे का तैसा सुरक्षित था इस विरासत को, इन तीनों बालकों के अंत में यह जाहिर कर देने के दिनों में कि वे जीवित रहने के इरादे से दुनिया में आए हैं, उनके गोरे सौतेले चाचाओं ने बढ़ाकर प्रत्येक के लिए १००० डालर तक कर दिया बशर्ते कि उनके बालिग होने के समय परिस्थिति अनुकूल हो—और १८६४ में (या १८६७ में भी, जब वह स्वयं पैदा हुआ था) पैदा हुए आदमी के जब तक जीने की संभावना या उसे अपने आपको आशा या अभिलाषा रह सकती थी, वह दिन गुज़र जाने के भी बहुत दिन बाद उसने वह पृष्ठ स्वयं पूरा कर दिया और वहां तक पूरा कर दिया जहां तक उसे पूरा किया जा सकता था। अब उसकी अपनी लिखावट थी, और विचित्र बात थी कि वह न उसके पिता की न चचा की और न मैककैस्लिन की ही लिखावट से मिलती थी बल्कि हिज्जों को छोड़कर और सब बातों में उसके दादा की लिखावट से मिलती थी :

> अपने इक्कीसवें जन्मदिन की रात को किसी समय लापता हो गया दिसम्बर २९ १८८५। इसाक मैककैस्लिन ने जैक्सन टेन तक सूत्र खोजा पर वहां जाकर सूत्र खो गया। उसकी विरासत का तिहाई हिस्सा ट्रस्टी मैककैस्लिन एडमंड्स को आज १२ जनवरी १८८६ के दिन लौटा दिया

पर बात यहीं खतम नहीं हो गई। उसे दो वर्ष हो गए और अब फिर उसके पिता की लिखावट आ गई जिसका पिछला सेनापति अब सैनिक कार्य और दास-व्यापार दोनों से छुट्टी पा गया था; एक बार फिर बही-खाते में लिख गया और इसके बाद खतम हो गया, यह अब पहले से भी

अधिक अस्पष्ट, गठिया के कारण जिसने अब उसे बेकार कर दिया था, उसकी लिखावट का कुछ भी अर्थ लगाना प्रायः असंभव था, और अब विराम-चिह्नों की तरह सब तरह के हिज्जों के बखेड़े से भी वह बिल्कुल मुक्त हो गया था, मानो उन चार वर्षों में, जिनमें वह अपने को नीग्रो बेचने वाले एकमात्र जीवित आदमी की फौज में रखा था, वह न केवल श्रद्धा और आस्था की बल्कि सुलेख की भी निस्सारता का कायल हो गया था :

मिस सोफोन्सीव ब दतर त त और त १८६६

पर विश्वास और इच्छाशक्ति निस्सार नहीं मानता था क्योंकि यह, जैसा कि मैककैस्लिन ने इसाक को बताया था, बाएं हाथ से लिखा गया था, पर बहीखाते में बस एक बार ही और लिखा था, फिर नहीं, क्योंकि इसाक स्वयं एक साल का था और जब छः वर्ष बाद ल्यूकाज़ पैदा हुआ, तब उसका पिता और चचा दोनों १२ महीनों के अन्दर मर गए फिर उसकी अपनी लिखावट थी, जो वहां थी और उसे देख रहा था, १८८६, वह सत्रह साल की थी, स्वयं उससे दो साल छोटी और वह उस समय दफ्तर में ही था जब शाम के समय मैककैस्लिन अन्दर आया और बोला, 'वह फोन्सीबा से शादी करना चाहता है,' और इसाक ने मुड़कर देखा मैककैस्लिन से लम्बा एक अपरिचित व्यक्ति जो मैककैस्लिन तथा अन्य गोरे लोगों की अपेक्षा अधिक अच्छे कपड़े पहने हुए एक गोरे आदमी की तरह ही कमरे में आ खड़ा हुआ था, मानो उसने मैक़कैस्लिन को एक गोरे आदमी के नाते अपने से बड़ा नहीं समझा बल्कि इसलिए कि वह मैककैस्लिन का मचान था और वह रास्ता जानता था, और वह एक गोरे आदमी की तरह ही बातें भी करता था। वह एक सम्पन्न और अनुभवी गोरे आदमी की मुद्रा में, जिसमें धैर्य का अभाव न हो बल्कि जिसे समय का अभाव हो, बातचीत कर रहा था। 'फोन्सीबा से शादी

करनी है ?' इसाक चिल्लाया और फिर चुपचाप उस नीग्रो और मैककैस्लिन को बातें करते सुना ।

'अरकन्सास में रहते हो । यही कहा था न तुमने ?'

'हां । वहां मेरी जायदाद है । एक फ़ार्म है ।'

'जायदाद ? फार्म ? तुम्हारा अपना है ?'

'हां ।'

'तुम बड़ों से 'जी साहब' नहीं कहते ?'

'हां । सिर्फ बड़ों से ही कहता हूं ।'

'अच्छा । तो तुम उत्तर से आए हो ।'

'हां । बचपन से वहीं रहा हूं ।'

'तो तुम्हारा बाप गुलाम था ।'

'हां । कभी था ।'

'तो फिर अरकन्सास में तुम फार्म के मालिक कैसे हो ?'

'मेरे पास उपहार की ज़मीन है । मेरे बाप को मिली थी । यूनाइटेड स्टेट्स (अमरीका) से । सैनिक सेवा के लिए ।'

'अच्छा' मैककैस्लिन ने कहा । 'यांकी (यूनाइटेड स्टेट्स के उत्तरी राज्य) फ़ौज ?'

'यूनाइटेड स्टेट्स की फौज,' अजनबी ने कहा और फिर मैककैस्लिन की पीठ की ओर मुंहकर चिल्ला उठा :

'टेनी, चाची को बुलाओ । मैं उसे खुद ले जाऊंगा । मैं उसे....'

लेकिन मैककैस्लिन अब उसे भी शामिल नहीं कर रहा था । अजनबी ने पीछे फिरकर उसकी आवाज़ की तरफ भी ध्यान न दिया । फिर वे दोनों ऐसे बातें करने लगे मानो वह वहां हो ही न ।

'जब तुम तय ही कर चुके थे,' मैककैस्लिन ने कहा, 'तो मुझसे आज्ञा लेना तुमने क्यों ज़रूरी समझा ?'

'मैं आपके अधिकार को मानकर आज्ञा लेने नहीं आया हूं। आपकी ज़िम्मेदारी सिर्फ इसी बात में मानता हूं कि आप उस परिवार के ज्येष्ठ व्यक्ति हैं जिसकी यह लड़की एक नारी-सदस्या है। मैं आपसे इजाज़त लेने नहीं आया। मैं आपसे····'

"बस काफी है," मैकर्कैस्लिन ने कहा। लेकिन अजनबी ने बात न मानी। वह मैकर्कैस्लिन के प्रति उपेक्षा प्रदर्शित नहीं कर रहा था और यह भी नहीं कि उसने मैकर्कैस्लिन की बात न सुनी हो। न तो वह कोई झूठा बहाना बना रहा था और न किसी बात को सत्य प्रमाणित करने का ही प्रयास कर रहा था, बल्कि स्थिति के अनुसार एक नितांत आवश्यक वक्तव्य दे रहा था जो मैकर्कैस्लिन की मौजूदगी में ही दिया जाना था, चाहे, मैकर्कैस्लिन उसे सुने या न सुने। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने आपसे बोल रहा हो, अपने बोले हुए शब्दों की ध्वनि स्वयं सुन रहा हो। वे दोनों एक दूसरे के सामने खड़े थे, बिलकुल पास न होते हुए भी ज़्यादा दूर नहीं और यद्यपि ज़ोर-ज़ोर से नहीं बोल रहे थे फिर भी उनकी आवाज़ों में एक तीखापन था :

'···मैं आपको उसके परिवार के मुखिया होने के नाते पूर्व सूचना दे रहा हूं। इज़्ज़तदार आदमी इससे ज़्यादा और क्या कर सकता है। इसके अलावा तुमने अपनी शिक्षा-दीक्षा के अनुसार···'

'बस, काफी है, मैंने कहा न,' मैकर्कैस्लिन बोला। 'रात होने से पहले यहां से दफा हो जाओ। चले जाओ।' लेकिन एक क्षण के लिए आगन्तुक वहीं खड़ा रहा और मैकर्कैस्लिन की ओर शान्त, क्रोध रहित नेत्रों से देखता रहा, मानो मैकर्कैस्लिन की आंखों की पुतलियों में वह अपना ही सबल रूप देख रहा हो।

'हां' उसने कहा। 'आखिरकार, यह तुम्हारा घर है न। और तुमने अपने तरीके से···खैर जाने दो। तुम ठीक कहते हो। बस इतना

ही काफी है ।' वह दरवाज़े की ओर मुड़ चला, और फिर रुका, मात्र एक क्षण के लिए, और फिर आगे बढ़ते हुए उसने कहा, 'परेशान मत होओ। मैं इस लड़की के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करूंगा।' और फिर वह चला गया ।

'लेकिन, आखिर लड़की ने कैसे इस अजनबी से जान-पहचान की ?' इसाक चकित हो चिल्ला उठा। 'मैंने पहले कभी इस आदमी का नाम तक नहीं सुना। और फ़ोन्सीबा, वह तो पैदा होने के बाद से गिरजाघर जाने के अलावा और कभी कहीं बाहर भी न गई थी।'

'अहा,' मैककैस्लिन ने कहा। 'यह तो मां-बाप तक नहीं जान पाते कि कैसे सत्रह वर्ष की लड़कियां अपने लिए ऐसे पुरुषों को खोज लेती हैं, जो बाद में कभी-कभी उनसे शादी भी कर लेते हैं।' और अगली सुबह वे दोनों चले गए, फ़ोन्सीबा भी। मैककैस्लिन ने उसे फिर कभी नहीं देखा और न इसाक ने ही, क्योंकि पांच महीने बाद जिस औरत को ढूंढ़कर उसने पाया वह एक बदली हुई स्त्री थी। इसाक के बटुए में एक हज़ार डालर का सोना था और वह उसी तरह घूम रहा था जिस तरह एक वर्ष पूर्व उसने घूम-फिरकर टेनी के बेटे जिम को टेनसी में जा पकड़ा था। वह नीग्रो युवक फ़ोन्सीबा को अपने साथ ले जाते समय टेनी को एक पता दे गया था और तीन महीने बाद उस आदमी के हाथ का लिखा एक पत्र आया यद्यपि मैककैस्लिन की पत्नी ऐलिस ने फोन्सीबा को थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना सिखा रखा था। लेकिन वह पत्र एक दूसरे पते से आया था और इसाक रेल से और फिर किराए की गाड़ियों से और फिर रेल से वहां जा पहुंचा। वह एक कुशल यात्री और सूंघकर रास्ता ढूंढ़ने वाले कुत्ते-सा अनुभवी हो गया था क्योंकि दिसम्बर के महीने में रात-दिन होटलों में, सड़क-किनारे की सरायों में, और अजनबी लोगों के घरों में और सूने खलिहानों में, आशा न होने पर भी दृढ़ संकल्प के

साथ उसे ढूंढ़ता फिर रहा था, और सोने की मोहरों से भरे अपने बटुए को बचाए रखने के डर से कहीं भी पूरे कपड़े न उतारता था। वह केवल दृढ़ संकल्प और निराशाजन्य साहस के बल पर आगे बढ़ता गया और स्वयं से कहता रहा : उसको ढूंढ़ना ही होगा। उसे ढूंढ़कर निकालना ही होगा। इस बार ज़रूर उसे पाना होगा। आखिर उससे ढूंढ ही निकाला। एक थके-मांदे किराए के घोड़े पर बर्फीली बरसात के थपेड़े खाते हुए उसने एक अकेला मकान देखा—जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वर्षा के प्रहार से शीघ्र ही मलवे का ढेर हो जाना था और अपने आस-पास ही पथविहीन वंजर भूमि में मिल जाना था; ऐसा था वह मकान जिसमें कोई खलिहान, कोई अस्तबल नहीं था। वह मकान और उसके पास का खेत नाममात्र को ही मकान और खेत थे। थोड़ी-सी लकड़ियों को लेकर बनाया गया वह घर और उसके पास का खेत शायद कभी अच्छा रहा हो पर तब बिल्कुल बेकार था। इसाक उस बेढंगे मकान का बेडौल दरवाज़ा खोलकर उस अजीब रसोई में दाखिल हुआ जिसमें बर्फीली शांति थी और खाना पकाने के लिए आग तक न थी और एक क्षण पश्चात् उसने देखा कि एक भद्दी-सी मेज़ के पीछे एक कोने में वह बैठी थी, और काफी के रंग का उसका चेहरा चिरपरिचित होते हुए भी अपरिचित दिखाई दे रहा था। इसाक अगले कमरे में चला आया जो उस मकान का एकमात्र दूसरा कमरा था और उसने देखा कि अंगीठी के सामने एकमात्र कुरसी पर वही आदमी बैठा था और पढ़ रहा था जबकि अंगीठी में एक दिन से अधिक का ईंधन न था। वह उसी ठाट-बाट के साथ कपड़े पहने बैठा था जिस तरह पांच महीने पूर्व एक कचहरी में दाखिल हुआ था और उसकी आंखों पर सोने के फ्रेम का एक चश्मा था जिसमें, इसाक ने देखा, कांच नहीं लगे थे और वह उस विनाश के बीच बंजर भूमि से घिरा बैठा था। वह पढ़ रहा था और उसके

कपड़ों से तथा उसके शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी।

'क्या तुम देख नहीं रहे ?' इसाक ने चिल्लाकर कहा, 'क्या तुम देख नहीं रहे ? इस समूची धरती, इस समूचे दक्षिण प्रदेश पर शाप है और सबसे ज़्यादा हम लोगों पर है, गोरे और काले दोनों पर; एक धरती से उपजे और जिन्होंने इसी धरती से शक्ति पाई है। माना कि मेरी जाति के लोग यह शाप लाए थे, शायद इसी कारण उनके उत्तराधिकारी इसका विरोध नहीं कर सकते, मुकाबला नहीं कर सकते बल्कि जब तक शाप न पूरा हो जाए इसे सहते रह सकते हैं। फिर तुम्हारी जाति के लोगों की बारी आएगी क्योंकि हम अपना अधिकार खो बैठे हैं। लेकिन अभी नहीं, अभी नहीं।'

सामने बैठा हुआ व्यक्ति उठ खड़ा हुआ, इस्तरी किए हुए, बगैर सलवट के उसके कपड़े अब भी शानदार थे हालांकि उनकी शान अब कुछ फीकी पड़ चुकी थी। उसने किताब के पन्नों के बीच अपनी एक अंगुली देकर उसे बन्द कर रखा था और दूसरे हाथ में म्यूज़िक मास्टर के डंडे की तरह कांचरहित चश्मा लिए था और सधी हुई सुमधुर दुर्बलता और असीम अनीति तथा निर्मूल आशा से भरी बोली में उसने कहा, 'तुम ग़लत कहते हो। तुम गोरे लोग जो शाप लाए थे, वह दूर हो चुका है। अब हम एक नये युग में पदार्पण कर रहे हैं और यह युग जैसा कि हमारे संस्थापकों ने चाहा था, सबकी स्वतंत्रता, स्वाधीनता और समानता की सेवा में समर्पित होगा और यह देश एक नया स्वर्ग बनेगा....'

स्वतन्त्रता ? किससे स्वतन्त्रता ? काम न करने की स्वतन्त्रता ? और यह स्वर्ग का कौन-सा कोना है ?'

'तुम इसे बुरे मौसम में देख रहे हो। आजकल सर्दी है। सर्दी में कोई खेती नहीं करता।'

'समझा। तो इसके माने हैं जब तक ज़मीन बेकार पड़ी रहेगी, इस लड़की के खाने और कपड़े की ज़रूरत भी पूरी न होगी ?'

'मुझे पेन्शन मिलती है,' नीग्रो ने कहा। उसने यह वाक्य इस तरह कहा जैसे कोई कहना चाहता हो कि उसे ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त है या उसके पास सोने की खान है। 'मुझे अपने पिता की पेंशन भी मिलती है। हर महीने की पहली तारीख को रुपया आ जाता है। आज कौन-सी तारीख है ?'

'ग्यारह,' इसाक ने कहा। 'पहली तारीख में अभी बीस दिन और हैं। तब तक क्या होगा ?'

'शहर में एक सौदागर है जो मुझे उधार खाने-पीने का सामान दे देता है। और वही मेरी पेन्शन के चेक को कैश करता है। चेक भुनाने के लिए अख्तियार मैंने उसे दे रखा है, क्योंकि आपसी....'

और अगर खाने-पीने का सामान बीस दिन तक न चले तो क्या होगा ?'

'मेरे पास अभी भी एक सुअर है।'

'कहां ?'

'बाहर' उसने कहा। 'इस इलाके में लोग-बाग सर्दी के दिनों में जानवरों को खुला घूमने देते हैं। वह अक्सर आ जाया करता है। लेकिन अगर वह न भी आए तो भी मुझे कोई परवाह नहीं, मैं उसे खोज लूंगा...'

'हां, तुम्हें कोई परवाह नहीं। तुम्हें कोई परवाह नहीं,' वह चिल्ला उठा। 'तुम्हें अभी तक पेंशन का चेक जो मिलता है। और इस शहर का सौदागर पिछले सारे पैसे वसूल कर अगर कुछ बचेगा तो तुम्हें देगा और इस बीच तुम अपने सुअर को पकड़कर खा लोगे और अगर तुम उसे पकड़ न पाए तो क्या करोगे ?'

'जब तक सर्दी का मौसम खत्म हो, अगले वसन्त में मेरी योजना है।'

'तब जनवरी का महीना होगा,' इसाक ने कहा। 'तब फरवरी का महीना आएगा और फिर आधे से ज़्यादा मार्च' और जब वह मुड़ा और लौटकर रसोई में आया तो वह लड़की वहां वैसे ही बैठी थी, हिली-डुली तक न थी, मालूम होता था मानो वह सांस भी न ले रही हो, सिर्फ उसकी आंखें इसाक को देख रही थीं; उन बड़ी अथाह, काली आंखों में न भय था, न इसाक को पहचानने की स्वीकृति, और न किसी प्रकार की आशा। 'फ़ोन्सीबा' उसने कहा। 'फ़ोन्सीबा, तुम अच्छी तो हो ?'

'मैं आज़ाद हूं' वह बोली।

उस छोटे-से शहर में एक सराय, एक अस्तबल, एक बड़ा स्टोर और एक लुहार की दुकान थी, साथ ही उसमें एक बैंक भी था और इसाक ने अपनी कमरबन्द में बंधी सोने की मोहरों को उस बैंक में जमा कर दिया और एक कागज़-पेंसिल लेकर बारह महीनों को तीन डालरों से गुणा कर उनसे एक हज़ार डालर को भाग दिया। इस तरह फ़ोन्सीबा को अट्ठाइस वर्ष तक तीन डालर प्रति मास मिलने थे, कम से कम अट्ठाइस वर्ष तक उसे भूखे न मरने का आश्वासन था और बैंकवालों ने हर महीने की पन्द्रह तारीख़ को एक विश्वस्त संदेशवाहक के हाथों रुपया पहुंचा देने का वादा किया। वह घर लौट आया और कहानी यहीं ख़त्म हो गई, क्योंकि १८७४ में उसके पिता और चाचा दोनों मर गए और पुराने बही-खाते फिर कभी अलमारी में से न निकाले गए। लेकिन अगर वह चाहता तो इस कहानी को अपने हाथों पूरी कर सकता था :

> ल्यूकाज़ क्विंट्स कैरोदर्स मैककैस्लिन बीचम। टामी के बेटे टर्ल और टेनी बीचम का एक मात्र शेष पुत्र। १७ मार्च, १८७४

पर इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी : लूसिअस क्विंटस और यह और यह और यह, बल्कि ल्यूकाज़ क्विंटस, उसने लूसियस कहलाने से इन्कार नहीं

किया क्योंकि उसने वह शब्द अपने नाम से उड़ा दिया, नाम को अस्वीकार नहीं किया क्योंकि इसका तीन चौथाई वह प्रयोग में लाता था, उसने तो केवल नाम लेकर इसे बदल डाला, अब इसे गोरे आदमी का दिया हुआ नाम नहीं रहने दिया बल्कि अपना ही बना दिया, अपने आप रचा हुआ, स्वयं अपने से पैदा हुआ और उसने अपना नाम रख लिया, वह स्वयं अपना पूर्वज था, क्योंकि पुराने बहीखातों में इसके विपरीत बात लिखी थी, जैसे कि बूढ़ा कैरोदर्स स्वयं अपना पूर्वज था।

बस, इतना ही काफी था। १८७४ में वह एक लड़का था, १८८८ में एक मर्द था, परित्यक्त और स्वतंत्र, १८९५ में एक पति था परन्तु पिता न था, वह विधुर नहीं था परन्तु उसकी पत्नी भी नहीं थी, और शीघ्र ही उसने पता लगा लिया था कि कोई भी पुरुष सदा स्वतन्त्र नहीं रह सकता और यदि उसे सम्पूर्ण स्वतन्त्रता मिले तो भी उसे सहन नहीं कर सकता, और इसी कारण वह विवाह करके जेफर्सन के एक नए बंगले में रहता था जो उसकी पत्नी के पिता ने उसे दिया था। एक सुबह जब वह अखबार पढ़ रहा था, अचानक ल्यूकाज़ दरवाज़े में आ खड़ा हुआ और उसने अखबार की तारीख देखकर सोचा, आज ल्यूकाज़ की वर्षगांठ है। आज वह इक्कीस वर्ष का हो गया है और ल्यूकाज़ ने कहा :

'वह रुपया कहां है जो बूढ़े कैरोदर्स ने मेरे लिए छोड़ा था ? मुझे चाहिए। सारा रुपया' और मैककैस्लिन ने कहा,

'हमारे बाप-दादा के अलावा और भी बहुत-से लोगों ने नीग्रो लोगों के साथ अपने सम्बन्धों को खूब अच्छी तरह जान लिया था और फिर भी १८६५ की दुर्घटना हुई।'

'लेकिन यह काफी नहीं था' वह बोला। 'तीन पीढ़ियां निकल चुकीं और यह सारा व्यापार दादाजी के समय से शुरू हुआ था। ईश्वर ने दादाजी और उनके बेटे-पोतों को कुछ सोच-समझकर ही पैदा किया होगा। ईश्वर ने

इन सब लोगों को पैदा करके उनसे कोई आशा न की होगी और न गर्व अथवा दुःख ही अनुभव किया होगा। ईश्वर उन लोगों को जन्म देकर चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा होगा; इसलिए नहीं कि उसने इन लोगों को जीवन और गति प्रदान की बल्कि इसलिए कि वह इन लोगों के साथ बहुत काफ़ी दिनों तक परेशान रहा था। वह जानता था कि वे लोग व्यक्तिगत रूप में किसी भी तरह का काम करने का माद्दा रखते थे, वे किसी भी ऊंचाई या गहराई तक पहुंच सकते थे, और इसलिए ईश्वर ने उन्हें मान्यता दी अथवा अपने समान उन लोगों को समझा और इस तरह ईश्वर ईश्वर न रहा और उसने अपने स्वर्ग में अकेले रहते हुए उन लोगों को बनाया और इसलिए इसकी ज़िम्मेदारी ईश्वर पर ही है। और शायद ईश्वर जान गया था कि उसने नाहक ही इन लोगों को बचाया, फिर भी चूंकि उसने इन लोगों को बना दिया था और वह जानता था कि इन लोगों में सब तरह के काम करने का माद्दा था क्योंकि उसने उस आदि शक्ति में से इनका निर्माण किया था, जिसमें सब कुछ समाया हुआ था, वह दूर से इन्हें देखता रहा और वे लोग अपनी व्यक्तिगत उच्चता और नीचता का परिचय देते रहे और आखिर ईश्वर ने देख लिया कि वे सब दादाजी के जैसे ही थे—'

'ओ'

'हां। यदि ईश्वर दादाजी में पिताजी और चाचाजी को देख पाया था तो उसने मुझे भी देखा होगा; एक ऐसा इसाक जो सब कुछ परित्याग करने को राजी हो—'

'यह पलायन है।'

'ठीक है। पलायन सही—एक दिन भगवान् ने भी वही कहा जो तुमने यहां इस कमरे में एक दोपहर को फ़ोन्सीबा के पति से कहा था: बहुत हो चुका। बस काफी है। तंग आकर या गुस्से में या तुम्हारी तरह

परेशान होकर नहीं, भगवान् ने केवल कहा, 'बस काफी है।' और आखिरी बार अपनी सृष्टि को देखा क्योंकि उसने उन लोगों को इस दक्षिण प्रदेश में पैदा किया था और इस प्रदेश के लिए भगवान ने शिकार के लिए जंगल और मछलियों के लिए नदियां, बीज के लिए गहरी उपजाऊ धरती, उसे उगाने के लिए वसंत, उसे परिपक्व करने के लिए लम्बी गर्मियां, फसल काटने के लिए पतझड़ और मनुष्यों व पशुओं के लिए अल्पकालीन सर्दियां प्रदान कर बहुत कुछ किया था। जब उसे संसार में कहीं कोई आशा नहीं दिखाई दी तो उसने उस ओर देखा जिस ओर आशा हो सकती थी—पूर्व, उत्तर और पश्चिम की ओर एक असीम, सम्पूर्ण आशाप्रद महाद्वीप पड़ा था जो स्वतंत्रता और स्वाधीनता का आगार था। और फिर उसने गुलाम बनाने वालों के धनी वंशजों को, जिनके पुरुष भी सियारों जैसे थे, जिन्हें डरावने लगने वाले आदमी किसी यात्री द्वारा पिंजरे में बंद करके लाए हुए ब्राजील के बंदर जैसा मालूम होते थे, आरामदेह भवनों में बैठकर भयंकरता और अत्याचार के बारे में प्रस्ताव पास करते हुए देखा और वोट बटोरने में लगे हुए राजनीतिज्ञों को धुआंधार भाषण करते और पैसा बटोरने में लगे हुए दवाफरोशों को दवाइयों की नुमाइशें करते देखा जिनके लिए अन्याय और अत्याचार वैसे ही अस्पष्ट बातें थीं, जैसे तटकर (टैरिफ) त्रेतायुग और अमरत्व और जो गुलामी के बन्धनों को उसी प्रकार अपनी स्वार्थसिद्धि का साधन बनाते थे जैसे इश्तहारों और अन्य तमाशों को, उन घूमते हुए चक्रों को देखा जो मुनाफे के लिए कपड़े बनाते थे, रुई कातते थे और कपास ओटने के लिए ओटनिया बनाते थे, जिन्हें ढोने के लिए गाड़ियां और जहाज़ बनाते थे, और उन आदमियों को देखा जो उस मुनाफे के लिए चक्कों को चलाते थे और इसपर टैक्स लगाते और उसे वसूल करते थे, और इसे ढोने का महसूल बताकर बेचने का कमीशन तय

और वसूल करते थे। और वह उन्हें त्याग सकता था क्योंकि वे और उनकी सब बाद वाली पीढ़ियां उसीकी सृष्टि थीं और अन्त में न केवल वह पुरानी दुनिया, जिसमें से वह उन्हें बचाकर लाया था, बल्कि वह नई दुनिया भी, जिसका उसने प्रकाश किया था और जिसे उसने उनका शरणागार और आश्रय बनाया था, अंतिम लालिमापूर्ण सायंकाल में निष्प्राण होती हुई वही बेकार तरंगहीन चट्टान बन जाती, परन्तु उस तमाम थोथे शोर-शराबे और निरर्थक जोश-खरोश में एक मौन, उन सब ज़ोर-शोर से बोलने वालों में केवल एक भोला-भाला आदमी जो यह मानता था कि अन्याय और अत्याचार हर सूरत में अन्याय और अत्याचार ही है और इतना सीधा था कि उनके विरुद्ध कार्य करने को तत्पर था जो अनपढ़ था और ठीक तरह बोलना नहीं जानता था, शायद इतना व्यस्त था कि उसके पास बोलने की फ़ुरसत नहीं थी, उन सबमें वह अकेला ही ऐसा आदमी था जिसने उसे (ईश्वर को) खुशामदों, कसमों, प्रार्थनाओं और धमकियों से दिक नहीं किया और उसे पहले ही यह सूचित करने के झंझट में भी नहीं पड़ा कि वह क्या करने वाला है और इसीलिए यदि ईश्वर के अलावा कोई और छोटी शक्ति होती तो उसे दरवाज़े के ऊपर लगे हिरणों के सींगों पर से लम्बी पुश्तैनी बन्दूक उतारने की क्रिया का पता भी चला होता। इसपर उस (ईश्वर) ने कहा कि मेरा नाम ब्राउन भी है, तब दूसरा बोला कि मेरा भी और तब उस (ईश्वर) ने कहा तो मेरा या तेरा नहीं हो सकता क्योंकि मैं इसके विरुद्ध हूं जिसपर दूसरे ने कहा कि इसी तरह मैं विरुद्ध हूं। और विजयोल्लास से वह (ईश्वर) बोला तो तुम बन्दूक लेकर कहां जा रहे हो ? और दूसरे ने उसे एक वाक्य एक शब्द में बता दिया और वह चकित, जो आशा, अभिमान और शोक से परे था, बोला पर तुम्हारे संघ, तुम्हारी कमेटियां और तुम्हारे अफसर। कहां हैं तुम्हारे वाद-विवाद, तुम्हारे प्रस्ताव,

तुम्हारी संसदीय प्रक्रिया ? और दूसरे ने कहा, मैं उनके विरुद्ध नहीं हूं। वे सब बिल्कुल ठीक हैं, मैं उनका आदर करता हूं जिनके लिए समय अनुकूल है। मैं तो इस बात के विरुद्ध हूं कि केवल गोरे होने के कारण मज़बूत लोग कमज़ोर लोगों को केवल नीग्रो होने के कारण गुलाम बनाए हुए हैं। तो भी ईश्वर ने इस नई दुनिया को एक मौका और दिया क्योंकि इस देश के लिए ईश्वर ने बहुत कुछ किया था...' और मैककैस्लिन बोला,

'क्या ?' और वह बोला,

'—ईश्वर इन लोगों के लिए स्वयं को अभी तक उत्तरदायी समझता था क्योंकि वे उसके ही बनाए हुए थे—'

'और उसने हम लोगों की तरफ से पीठ फेर ली ?—' वह बोला,

'जिनकी बीवियां और बेटियां कम से कम उनके लिए दवादारू तैयार करती थीं और जब वे अपनी बदबूदार कोठरियों में बीमार पड़े रहते तो वे उनके लिए खाना-पीना लेकर सर्दी में जातीं और उनके पास बैठकर आग जलातीं, लेकिन इतना ही काफी नहीं था : और जब वे लोग बहुत ज्यादा बीमार होते, वे उन्हें अपने घरों में ले आतीं और उनकी परिचर्या करतीं, लेकिन यह काम गोरे लोग अपने मवेशियों के लिए भी तो करते थे और इसलिए यह सब भी काफी न था : इसलिए ईश्वर ने कहा, दुख के साथ नहीं और न आशा अथवा गर्व के साथ : जाहिर है कि ये लोग तकलीफ़ से गुज़र कर ही कुछ सीख सकते हैं, केवल उसी बात को याद रख सकते हैं जिसपर खून के चिह्न हों।' और मैककैस्लिन बोला,

'ऐशबी एक दिन तीसरे पहर अपने माता के दूर के रिश्ते की बहनों से या शायद वे उसकी माता की केवल परिचित ही थीं, मिलने के लिए घोड़े पर चढ़कर जा रहा था कि वह अचानक चौकियों पर पहुंचा और उतर पड़ा और मुट्ठी भर सैनिकों को लेकर, जिन्हें उसने पहले

कभी नहीं देखा था, अच्छी तरह जमे हुए और प्रशिक्षित राईफलधारी सैनिकों से भिड़ गया। ली का लड़ाई का हुक्मनामा, जो शायद कुछ सिगरेटों पर लिपटा हुआ था और अन्तिम सिगरेट निकाल लेने पर निश्चित ही फेंक दिया गया था, एक यांकी (यूनाइटेड स्टेट्स के उत्तरी राज्यों का सैनिक) जासूस को यांकी सैनिक पंक्ति के पीछे एक सैलून के फर्श पर उस समय मिला जब ला शार्स्बर्ग से पहले अपनी सेना को विभाजित कर चुका था। जैकसन प्लैंक रोड पर था और पहले ही बाजू वाली सड़क पर ऊपर को बढ़ आया था जिसे हुकर समझता था कि पीछे से आकर घेरा नहीं जा सकता था और वह यह भी समझता था कि अपना क्रूर अविरत प्रहार जारी रखने के लिए वह रात गुजारने की प्रतीक्षा कर रहा था जिससे वह सारा पहलू उस हुकर के चंगुल में जा फंसेगा, और हुकर चांसलसैविल में सामने की गैलरी में बैठा हुआ शराब पी रहा था और लिंकन को यह तार दे रहा था कि मैंने ली को हरा दिया है। उस जैकसन को, जो बहुत-से छोटे-छोटे अफसरों से घिरा हुआ था, रात के अंधेरे में उसके ही गश्ती दस्ते के एक आदमी ने गोली से उड़ा दिया और उसके बाद स्टुआर्ट सेनाध्यक्ष हुआ जो पद में उससे नीचे था; ऐसा लगता था जैसे वह बहादुर आदमी घोड़ा और तलवार लेकर ही पैदा हुआ हो और युद्ध के बारे में जानने योग्य सब बातें जानता हो सिवाय इसकी क्रूरतापूर्ण मूर्खता के : और वह स्टुआर्ट पेन-सिल्वानिया के मुर्गीखानों पर हमला कर रहा था जब ली को ठीक उसी जगह, जहां हैनकाक सीमेटरी ब्रिज पर था, भीड़ की सब गतिविधियों का पता होना चाहिए था : लौंगस्ट्रीट भी गेटिसबर्ग में और उसी लौंग स्ट्रीट को घोर अंधेरे में भूल से उसके अपने ही आदमियों ने उसी तरह गोली मार दी जैसे जैकसन को मार दी थी? उसका मुंह हमारी ओर था।' और वह बोला,

'उन्हें और किसने लड़ाया ? जैकसनों और स्टुग्रार्टों और ऐशबियों और मौर्गनों और फोरेस्टों ने नहीं तो किसने उनसे लड़ाई लड़ी ?—ये लोग मध्यवर्ती और मध्य-पश्चिमी प्रदेश के किसान थे जिनके दसियों या सैकड़ों एकड़ नहीं, एक एकड़ जमीन थी जिसमें वे स्वयं खेती करते थे और कपास या तमाखू या गन्ने में से कोई केवल एक ही फसल नहीं बोते थे, उनके पास न गुलाम थे और न उन्हें उनकी ज़रूरत थी, और प्रशांत सागरीय तट की ओर नज़र लगाए हुए थे और उनमें से सब लोग पूरी दो पीढ़ियों से भी वहां नहीं थे और जहां वे रुक गए थे वहां किसी आकस्मिक दुर्घटना के कारण ही रुक गए थे। जैसे एक बैल मर गया या गाड़ी की धुरी निकल गई। और-न्यू इंग्लैंड के मिस्त्री जिनके पास अपनी कोई ज़मीन नहीं थी और जो सब चीजों को पानी के ताल और पहिए घुमाने की लागत से नापते थे, और थोड़े-से व्यापारी और जहाज़-मालिक जो अब भी अपने पीछे अटलांटिक की ओर ताक रहे थे और इस महाद्वीप से अपने व्यापार-घरों के कारण ही सम्बद्ध थे। और वे लोग जिनमें देखने की सतर्कता थी, वीरान स्थानों को काल्पनिक नगर नाम देकर पैसा बनाने वाले, और तर्कसंगत ढंग से सोचने की समझदारी थी। वे महाजन जिन्होंने लोगों की वह ज़मीन धरोहर रखी हुई थी जिसे पहले के लोग त्याग कर जाने की प्रतीक्षा में थे, और रेल-मार्गों और स्टीम-नौकाओं पर उन्हें और भी पश्चिम की ओर ले जाने के लिए, और फैक्टरियों और पहियों पर, और किराए की उन कोठरियों में जिनमें उन्हें चलाने वाले रहते थे और समय पर अच्छी तरह समझने और डरने के लिए और भविष्य की कल्पना करने के लिए भी खाली समय और विशाल दृष्टि : बोस्टन में पाली-पोसी गई (जो बौस्टन में नहीं जन्मी थी) वृद्धकुमारी, इसी तरह पाली-पोसी गई वृद्ध कुमारियों के वंशजों की लम्बी परम्परा और इसी तरह वृद्धकुमारी चाचियों और चाचा जिनके हाथों को दोषारोपण करने

केवल देशप्रेम और साहस की आवश्यकता है—'

'और निष्कलंक तथा वीर पूर्वज, और घोड़े पर चढ़ने की सामर्थ्य', मैककैस्लिन ने कहा। 'इसे मत भूलो।'

शाम हो चली थी, अक्टूबर मास का प्रशांत सूर्य अस्त हो रहा था। हवा बंद थी और लकड़ी का धुंआ उड़ रहा था। कपास चुगी और ओटी जा चुकी थी और अब दिन भर गाड़ियां भर-भरकर कपास जा रही थी। 'शायद ईश्वर यही चाहता था। कम से कम पाया तो उसने यही।' इस बार बहीखातों के पुराने निर्दोष पन्नों को उलटना ज़रूरी नहीं था। यह समय एक अधिक कठोर पोथी में अंकित था और मैककैस्लिन ने जब वह क्रमशः चौदह, पंद्रह और सोलह वर्ष का था, और इसाक ने भी, इस समय को विरासत में पाया था—वह अनर्थकारी समय जिसके दौरान तीन विभिन्न जातियों ने स्वयं को व्यवस्थित करना चाहा था, न केवल एक दूसरे के साथ बल्कि उस भूमि के साथ भी जिसे उन्होंने पैदा किया था और विरासत में पाया था और जिसपर उन्हें रहना ही था क्योंकि जो इस भूमि को खो बैठे थे वे भी इस भूमि के उतने ही वश में थे जितने वे लोग जिन्होंने इस भूमि को पाया था, जिनके ऊपर रातोंरात स्वतंत्रता और समानता थोप दी गई थी, बिना बताए ही या किसी प्रकार की तैयारी या प्रशिक्षा बिना ही कि कैसे स्वतंत्रता का उपयोग किया जाता है। और वे इस स्वतंत्रता को केवल सहन करते रहे और फिर उसका दुरुपयोग करने लगे, बालकों की तरह नहीं और न इसलिए कि वे इतने दिनों तक बंधन में रहकर अचानक स्वतंत्रता पा गए थे बल्कि मानव प्राणियों की तरह स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने लगे और इसाक सोचने लगा कि दुख और कष्ट से प्राप्त ज्ञान से भी परे एक ज्ञान है जो स्वाधीनता और मनमानी करने के बीच का अंतर जानने के लिए आवश्यक है, एक वे लोग थे जो चार साल

लड़े थे और एक ऐसी स्थिति बनाए रखने के लिए हारे थे जिसमें मताधिकार एक विरोधाभास प्रतीत होता था, इसलिए नहीं कि वे स्वतंत्रता के विरोधी थे बल्कि उन्हीं पुराने कारणों को लेकर लड़े थे जिन्हें लेकर मनुष्य सदा लड़ता और मरता आया है—जैसी स्थिति थी वैसी ही कायम रखने के लिए या अपने बच्चों का भविष्य अच्छा बनाने के लिए लड़े थे। और एक वह जाति थी जिसमें तीन जातियों का रक्त मिला था और जिसके सदस्य आपस में ही एक दूसरे को बाहरी समझते थे, सिर्फ लूटमार के मौके पर ही वे एक हो जाते थे, वे अधेड़ क्वार्टर- मास्टर, लैफ्टीनैंटों और फौजी ठेकेदारों के बेटे थे। वे उन लड़ाइयों के बाद में आए थे जो उन्होंने स्वयं नहीं लड़ी थीं और वह विजय उत्तराधिकार में पाई जिसे प्राप्त करने में उन्होंने कोई मदद नहीं की थी, उसे आशीर्वाद भी नहीं दिया तो भी कम से कम उसकी मंजूरी दी और उसकी रक्षा की, और वे अपनी हड्डियां छोड़ गए और तीसरी पीढ़ी में उन छोटे-छोटे हारे हुए कस्बों में नाई, मिस्त्री, पंचों के रूप में और मिल-मज़दूरों और बिजली के कारखानों में कोयला झोंकने वालों के रूप में फिर वापस आएंगे और पहले बिना वर्दी वाले और बाद में बाकायदा वर्दीधारी फ़ौज के रूप में बड़े-बड़े नारे लगाते हुए और ईसाई धर्म के प्रतीक लिए हुए उस जाति के लोगों को, जिसकी रक्षा करने के लिए उनके पूर्वज आए थे, ज़िन्दा जलाने वाली क्रुद्ध भीड़ का नेतृत्व करते हुए आएंगे और शोषित की मुसीबतें बढ़ाकर अपना पेट भरनेवाले उन अन्य नामहीन धूर्तों, पैसा और राजनीति और धरती को इधर से उधर करने वालों के रूप में आएंगे जो मुसीबत के बाद आते हैं और उसी तरह स्वयं अपनी रक्षा कर लेते हैं जैसे घास में फुदकने वाले टिड्डे और जिन्हें किसी के आशीर्वाद की ज़रूरत नहीं होती और जो कभी हल या कुल्हाड़ी नहीं चलाते या पसीना नहीं बहाते, खा-पीकर मोटे हो जाते हैं और लुप्त हो

जाते हैं और पीछे हड्डियां नहीं छोड़ जाते, ठीक वैसे ही जैसे वे ऊपर से देखने पर पूर्वजहीन, नश्वर शरीर से रहित, कामवासना के आवेग से भी शून्य थे : और यहूदी भी जो बिना किसीके संरक्षण के आया था क्योंकि दो हज़ार वर्ष बाद वह संरक्षित होने या संरक्षण पाने की ज़रूरत से मुक्त हो गया था, और वह अकेला था, और उसमें टिड्डियों की संगठन-क्षमता भी नहीं और इसमें एक तरह का साहस था, क्योंकि वह केवल लूट की बात सोचता हुआ नहीं आया था बल्कि अपने पड़पोतों की बात सोचता हुआ आया था, वह अब भी उन्हें बसाने के लिए किसी जगह की तलाश में था जहां वे चाहे सदा विदेशी बने रहकर ही, जीवित बने रह सकें : और अभागा, पश्चिमी जगत में सर्वत्र जो अब भी बहिष्कृत था और बीस शताब्दी बाद भी पश्चिमी जगत्-परियों की उस कहानी का बदला उससे ले रहा था जिससे उसने इसे जीता था।

मैककैस्लिन ने इसे सचमुच देखा था, और लड़का अस्सी वर्ष की आयु में भी निश्चित रूप से उन जातों में अंतर नहीं कर सकेगा जो उसने देखी थीं और जो उसे बताई गई थीं : प्रकाशहीन और वीरान और बेरौनक प्रदेश जहां औरतें सहमे हुए बच्चों को लेकर तालाबन्द दरवाज़ों के पीछे सिमटकर बैठ जाती थीं और आदमी कपड़ा ओढ़े और नकाब पहने सूनी सड़कों पर घोड़ों पर चढ़कर चलते थे, और गोरों तथा कालों, दोनों के अंग, घृणा के कारण उतने नहीं जितने निराशा और लाचारी की भावना के कारण काट लिए जाते थे : और चुनाव-चौकियों पर लोगों को, जिनके एक हाथ में अभी अनसूखी स्याहीवाला कलम और दूसरे में अनसूखा वोट का पत्र होता था, गोली से उड़ा दिए जाते थे और जेफ़र्सन में एक अमरीकी मार्शल था जो अपने सरकारी कागज़ात पर भोंडा-सा क्रास चिह्न बनाकर हस्ताक्षर करता था, जो पहले गुलाम था और उसका यह नाम इसलिए नहीं था कि उसका मालिक डाक्टर और दवाइयां

बेचने वाला था बल्कि इस कारण था कि जब वह गुलाम था, उन दिनों वह अपने मालिक की अनाज से बनाई गई शराब चुरा लेता था और उसमें पानी मिला लेता और दवाखाने के पीछे खड़े हुए बहुत बड़े सिकामोर के पेड़ (बरगद के ढंग का पेड़) की जड़ों में बने हुए तहखाने में से पौए निकालकर और उनमें भरकर बेच देता था। वह इस ऊंचे पद पर इसलिए पहुंच गया था कि उसकी अधगोरी बहन यूनाइटेड स्टेट्स के ए० पी० एम० की रखेल थी, और इस बार मैककैस्लिन ने देखा भी नहीं कहा उसने केवल एक हाथ ऊपर उठाया, वह भी खास बहीखातों वाले फटे तरफ नहीं बल्कि डेस्क की तरफ, उस कोने की तरफ जहां फर्श के घिसे हुए भाग पर यह रखी थी। इस फर्श पर दो दशाब्दियों तक भारी जूते खड़े होते रहे थे जब कि डेस्क से लगा हुआ गोरा आदमी जोड़ता, गुणा करता और घटाया करता था। और फिर उसे यह देखने की ज़रूरत भी नहीं थी क्योंकि यह उसने स्वयं देखा था और, समर्पण के तेईस और प्रोक्लेमेशन के चौबीस वर्ष बाद वह अब भी यह देख रहा था। अब बहीखाते नये थे और जल्दी-जल्दी भरते थे, जल्दी-जल्दी एक दूसरे के बाद आते-जाते थे और उसमें इतने अधिक नाम थे जितनों की बाबा कैरोदर्स या उसके पिता ने भी और चाचा बडी ने भी कभी कल्पना नहीं की होगी; नये नाम और उनके साथ नये चेहरे थे जिनमें पुराने नाम और चेहरे जो उसके पिता और चाचा भी पहचान लेते, खतम और लुप्त हो गए थे। टामी का टेरेल मर चुका था और इसी प्रकार करुणा का पात्र पर्सीवल ब्राउनली भी, जो न हिसाब रख सकता था और न खेती कर सकता था, और जिसे अंत में अपने लिए उपयुक्त स्थान मिल गया था, १८६२ में लड़के के पिता की अनुपस्थिति में पुनः दिखाई दिया और प्रतीत होता था कि जब उसके चाचा को इसका पता लगा उससे कम से कम एक महीने पहले से वह बागान में रह रहा था। वह नीग्रो लोगों की सभाएं करता रहा, उपदेश देता रहा

और अपनी ऊंची मीठी तेज़ आवाज़ में गाकर भजन गवाता रहा और फिर पैदल, पर बहुत तीव्र गति से गायब हो गया था । वह फेडरल सरकार के छापा मारने वाले घुड़सवारों से पीछे नहीं, आगे पहुंच गया और तीसरी बार अंतिम बार सेना के एक घूम-फिरकर तनखाह बांटने वाले अफसर के अनुचरों में दिखाई दिया । वे दोनों एक छकड़े में ठीक उसी समय जेफर्सन से गुज़र रहे थे जिस समय लड़के का पिता (यह १८६६ की बात है) भी चौराहा पार कर रहा था छकड़ा और उसके सवार उस शांत स्थल को पार कर रहे थे और उस भागते हुए क्षण में भी, और लड़के के पिता के साथ वाले और लोगों को उस आदमी की तरह जो अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में अपनी पत्नी की दासी से मौज कर रहा हो, भाग जाने और नाजायज़ मौज करने जाने का भ्रम पैदा कर रहा था । अंत में ब्राउनली ने नज़र ऊपर उठाई और अपने एक मालिक को देखा और उसपर एक ढिठाई भरी जनानी नज़र डाली और फिर वह भाग निकला । वह छकड़े से कूद पड़ा और इस बार सदा के लिए गायब हो गया और यह संयोग की ही बात थी कि मैककैस्लिन ने बीस वर्ष बाद फिर उसके बारे में सुना । अब वह बुड्ढा और बड़ा मोटा हो गया था, जैसे न्यू ऑर्लियन्स के किसी प्रसिद्ध चकले का सम्पन्न मालिक हो, टेनी का बेटा जिम जा चुका था और किसीको पता नहीं था कि वह कहां गया है, और फ़ोन्सीबा अर्कन्सास में थी और वहीं उसके तीन डालर प्रति मास और बिना शीशों की ऐनक लगानेवाला फ्राक कोट पहनने वाला विद्वान पति और उस पति की बसंतऋतु की योजनाएं थीं; केवल शिशु ल्यूकाज़ रह गया था जो उस (इसाक) के अलावा बाबा कैरोदर्स के अभिशप्त और पातक रक्त की एकमात्र निशानी था । ऐसा लगता था कि नर-परंपरा में आया हुआ यह रक्त जिस वस्तु को छुआ उसे ही नष्ट कर डालता था और वह भी इसे त्याग रहा था और कम से कम इससे बच जाने

की आशा कर रहा था; ल्यूकाज़, चौदह वर्ष का ल्यूकाज़, जिसका नाम अभी छः वर्ष तक उन नई जिल्दों में नहीं आएगा जिन्हें मैककैस्लिन अब रोज़ उस रिकार्ड को आगे लिखने के लिए, जिसे दो सौ वर्षों में पूरा नहीं किया जा सका और अगले सौ वर्ष में भी नहीं किया जा सकेगा, नीचे उतारता था और उसपर ज़रा भी धूल नहीं थी; वह इतिहास, जो संक्षेप में एक प्रदेश का मूर्त रूप था और जो गुणा कर देने पर सारे दक्षिण का मूर्त रूप था, जैसा वह समर्पण के तेईस वर्ष और दासमुक्ति से चौबीस वर्ष बाद था—धीरे-धीरे शीरा, अनाज, मांस, जूते, टोप और कोट और अन्य अनेक वस्तुएं आईं जिनके बदले में हर शरद ऋतु में रुई जाती थी—दोनों सूत्र सत्य के समान नाज़ुक और भूमध्यरेखा के समान अदृश्य पर फिर भी इतने मज़बूत कि जो लोग अपना पसीना बहाकर कपास पैदा करते थे उन्हें जीवन भर के लिए उस प्रदेश से बांधे हुए थे : और वह बोला।

'हां, पर उन्हें कुछ ही देर तक बांध सकते हैं। उस पीढ़ी में और उसके बाद तक और संभवतः उस पीढ़ी के पुत्रों के जीवन में और उसके बाद तक। पर सदा नहीं बांध सकते क्योंकि वे लोग आगे भी कायम रहेंगे। वे हमारे बाद तक कायम रहेंगे। वे हमारे बाद तक कायम रहेंगे क्योंकि वे—' यह केवल विराम या लड़खड़ाहट मात्र नहीं थी जो केवल उसे ही अनुभव हो सके, ऐसा लगता था जैसे वह मैककैस्लिन से भी बात नहीं कर सकता था, अपने स्वत्व-त्याग का स्पष्टीकरण भी नहीं कर सकता था; वह काम, बच निकलने का यत्न करते हुए भी, उसके अपने लिए भी अधर्म था। (शायद उसके बच भागने का यही सच्चा और असली कारण था) : और इसीलिए बचकर भागते हुए भी वह उस दुष्ट और भ्रष्ट बुड्ढे का : जितना वह समझ रहा था उससे भी अधिक अंश अपने साथ ले जा रहा था, जो किसी स्त्री को अपने विधुर घर में बुला सकता था

क्योंकि वह उसकी सम्पत्ति थी और काफी बड़ी उमर की तथा औरत थी और उसमें गर्भाधान कर सकता था और फिर उसे धता बता सकता था क्योंकि वह नीची जाति की थी और फिर भावी शिशु के लिए एक हज़ार डालर की वसीयत कर सकता था क्योंकि वह स्वयं तब मर चुका होगा और उस समय नहीं देना चाहेगा। 'हां, वह देना नहीं चाहता था। उसे देना पड़ा क्योंकि वे बाद तक कायम रहेंगे। वे हमसे अधिक अच्छे हैं। हमसे अधिक मज़बूत हैं। उनके दुर्गुण वे दुर्गुण हैं जो गोरों की नकल करने से उनमें आए हैं या गोरों और दासता ने उन्हें सिखाए हैं : अदूरदर्शिता, शराबखोरी, कमचोरपन, आलस्य नहीं : कमचोरपन : उस काम से जो गोरों ने उनके लिए निश्चित कर दिया, अपने प्रभाव विस्तार और सुख के लिए नहीं, बल्कि उसके अपने ही···' और मैककैस्लिन बोला,

'ठीक है। कहे जाओ : वर्णसंकरता। हिंसा अस्थायित्व और नियंत्रण का अभाव। 'मेरे' और 'तेरे' के बीच का अन्तर समझने की असमर्थता—'

'अन्तर कैसे समझते जब दो सौ साल तक 'अपनी' नामक उनकी कोई चीज़ नहीं रही ?'

'ठीक है। कहे जाओ। और उनकी अच्छाइयां—'

'हां। उनकी अच्छाइयां भी हैं। उनमें सहनशीलता—'

'खच्चरों में भी है।'

'—और दया, सहिष्णुता, सूक्ष्मदर्शिता और स्वामिभक्ति और बच्चों से प्यार—'

'कुत्तों में भी है।'

'···और इसके अलावा उन लोगों में वह गुण है जो उन्होंने गोरे लोगों से नहीं पाया और न गोरे लोगों के बावजूद ही पाया क्योंकि उन्हें अपना यह गुण आरम्भ के स्वतन्त्र धर्मपिताओं से प्राप्त हुआ था जो हमसे कहीं

अधिक समय तक स्वतन्त्र रहे थे क्योंकि हम तो कभी स्वतन्त्र रहे ही नहीं—' और वही चीज़ मैककैस्लिन की आंखों में थी और उसे याद आई सात वर्ष पूर्व की वह गोधूलि वेला जब उन्हें कैम्प से लौटे हुए एक हफ्ता हो चुका था और सैम फादर्स ने मैककैस्लिन को एक बूढ़े भालू की खबर सुनाई थी जो भयंकर और क्रूर था केवल जीवित बने रहने के लिए ही नहीं बल्कि अपनी स्वतन्त्रता के उग्र गर्व के कारण। और उसे अपनी स्वतन्त्रता का इनना तीक्ष्ण गर्व था कि वह स्वयं को खतरे में पड़ते देख डरता-घबराता नहीं था बल्कि खुश होता था क्योंकि वह अपनी स्वतन्त्रता को जानबूझकर खतरे में डाल स्वतन्त्रता का स्वाद चखना चाहता था और साथ ही अपनी मज़बूत हड्डियों और मांस को अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए चुस्त और मुस्तैद रखना चाहता था। और भालू की यह खबर सुनाने वाला बूढ़ा सैम, एक आदिवासी राजा और एक गुलाम औरत का बेटा था जो एक ओर उत्तराधिकारी था उन लोगों के इतिहास का, जिन्होंने दुख सहकर नम्रता सीखी थी और अपनी सहनशीलता से गर्व सीखा था, और जो दूसरी ओर उन लोगों के इतिहास का उत्तराधिकारी था जो अन्य सब लोगों से पहले इस देश में रहते आए थे, और अब रह गया था केवल एक बूढ़े, निस्संतान नीग्रो के विजातीय रक्त तथा बूढ़े भालू की जंगली और अजेय आत्मा का भ्रातृत्व, और एक लड़का था जो वन में निपुणता पाने के लिए विनम्रता और गर्व की भावना अपनाना चाहता था परन्तु जो इतनी जल्दी निपुण बन गया कि उसे भय था कि वह कभी भी जंगल के योग्य न बन सकेगा क्योंकि वह कोशिश करने के बावजूद विनम्रता और गर्व सीख न पाया था और फिर एक दिन एक बूढ़ा आदमी जो विनम्रता और गर्व की परिभाषा नहीं दे सकता था मानो उसे हाथ पकड़कर वहां ले गया, जहां एक बूढ़े भालू और एक बचकाने कुत्ते ने उसे सिखाया कि एक और चीज़ हासिल

कर वह दोनों गुण प्राप्त कर सकता था, और एक वह छोटा कुत्ता था जिसकी नस्ल का ठीक पता न था, जिसका वजन छः पौंड से अधिक न था और जो कभी भी खतरनाक साबित न हो सकता था क्योंकि उससे छोटी चीज़ और कोई हो ही नहीं सकती थी और न वह नम्र था क्योंकि वह पहले ही धरती के इतने निकट था और न उसमें गर्व था क्योंकि उसकी छाया को देखकर मुश्किल से पता लगता था कि वह किस चीज़ की छाया थी, और जो यह भी न जानता था कि उसे स्वर्ग कभी प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि लोग-बाग पहले ही तय कर चुके थे कि उसकी आत्मा अमर न थी और इसलिए उसके पास साहसी होने के अलावा और कोई चारा न था हालांकि उसके साहस को महज़ शोर कहा जा सकता था।

'तुमने बन्दूक क्यों नहीं चलाई ?' मैककैस्लिन ने पूछा। 'तुम भालू से कितनी दूर थे ?'

'कह नहीं सकता,' वह बोला, 'मैंने उसके पिछले पैर में एक बड़ा जंगली पिस्सू देखा था लेकिन तब मेरे पास बन्दूक न थी।'

'लेकिन जब बन्दूक थी तब गोली क्यों न चलाई ?' मैककैस्लिन ने पूछा, 'क्यों ?' पर मैककैस्लिन रुका नहीं, उठकर और कमरा पारकर के दो साल पहले मारे हुए भालू की ओर एक और बड़े भालू की, जिसे मैककैस्लिन ने इसाक के जन्म से पहले मारा था, खाल से परली ओर जाकर अपने पहले हरिण के मरे हुए सिर के नीचे रखे हुए किताबों की अलमारी पर पहुंचा और किताब लेकर लौट आया और फिर बैठ गया और उसने किताब खोल ली। 'सुनो,' वह बोला। उसने पांच पद ज़ोर से पढ़े और उंगली अन्दर रखकर किताब बन्द कर ली और मुंह ऊपर उठाया। 'ठीक है,' वह बोला। 'सुनो' और उसने फिर पढ़ा, पर इस बार केवल एक पद पढ़ा और किताब बंद करके मेज़ पर रख दी। 'आयु

उसकी नहीं घटेगी, चाहे तुझको आनंद प्राप्त न हो,' मैककैस्लिन ने 'सदा उसे तू प्यार करेगा, और वह सदा बनी रहे सुन्दर।'

'वह तो किसी लड़की की बात कर रहा है।' वह बोला।

'उसे किसी चीज़ के बारे में तो बात करनी ही थी,' मैककैस्लिन ने कहा। फिर वह बोला, 'वह सचाई के बारे में बात कर रहा था। सचाई एक होती है। यह बदलती नहीं। वे सब चीज़ें इसके अंतर्गत आ जाती हैं जो हृदय को स्पर्श करती हैं—सम्मान, गर्व, दया, न्याय, साहस और प्रेम। अब तुम्हारी समझ में आया ?' उसे नहीं मालूम। जो हो, यह चीज़ उससे अधिक सरल मालूम होती थी, यह चीज़ इस बात से अधिक सरल थी कि कोई आदमी किसी किताब में किसी नौजवान आदमी और लड़की की बात करे जिसपर उसे कभी दुखी होने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि वह और निकट जाएगा ही नहीं और न उसे कभी और परे जाना पड़ेगा।

जब वह बच्चा था, उसने एक बूढ़े भालू के बारे में सुन रखा था और फिर बड़े होकर चार साल तक उसका पीछा किया और जब आखिरकार हाथ में बन्दूक लेकर उससे मुलाकात हुई तो उसने गोली नहीं चलाई और न सैम फादर्स ने ही चलाई जब कि बूढ़ा भालू अपने पिछले पैरों पर सामने ही खड़ा था। इसाक चुप हो गया। मैककैस्लिन उसे देखता रहा और बोलता रहा और गोधूलि के मन्द प्रकाश से ही वे शब्द धीरे-धीरे, शांति के साथ बोले गए थे, 'साहस, सम्मान, दया, गर्व, न्यायप्रियता और स्वतन्त्रताप्रियता—ये सब चीज़ें दिल को छूती हैं, और जो चीज़ दिल को छूती है—वही सत्य बन जाती है। समझे ?'

अब भी वह सात वर्ष पूर्व की गोधूलि में अक्षुण्ण उन शब्दों को सुन सकता था और वह आवाज़ भी पहले जैसी ही धीमी और मन्द थी क्योंकि उन शब्दों को चिरस्थायी रहना था, और उसने हल्की-सी, कटु-

मुस्कान के पीछे मैककैस्लिन की आंखों को देखा—वह उसका सगा-संबंधी था, पितातुल्य था और वह पुराने ज़माने के लिए बहुत देर से और नए जमाने के लिए बहुत पहले पैदा हो चुका था। वे दोनों अपनी आहत पैतृकता के संसर्ग में, कष्टदायी प्रहारों से अभी तक हांफती हुई अपनी आहत मातृभूमि के संसर्ग में एक ही परिवार के होकर भी परस्पर विजातीय बने खड़े थे।

'तो यह भूमि, किंचितमात्र सन्देह नहीं, कि स्वयं ही और स्वतः ही अभिशप्त है' और वह बोला,

'अभिशप्त' : और मैककैस्लिन ने फिर एक हाथ ऊपर उठाया न वह बोला और न उसने बहीखातों की ओर ही संकेत किया : और जैसे स्टीरियोप्टिकन (डबल प्रोजेक्टिंग लैंटर्न जिससे एक चित्र दूसरे में मिल जाता है) अपने दृश्यक्षेत्र में असंख्य कणों को मिलाकर एक समरूप क्षेत्र बना देता है, वैसे ही उस हल्के से पर द्रुत संकेत ने उस छोटे-से नीचे कमरे में न केवल बहीखाते बल्कि उस बागभूमि का सारा जंगल, जमीन, खेत और उनसे पैदा होने वाली और बेची जाने वाली कपास, वे पुरुष और नारी जो कपास बोने, देख-भाल करने, चुगने और ओटने की मज़दूरी के बदले उनसे खाना और कपड़ा तथा क्रिसमस के समय कुछ नकद धन भी पाते थे, मशीनें और खच्चर तथा गीयर जिससे वे इसे उठाते थे और उनकी लागत, रख-रखाव और बदले की नई मशीन—वह सारी की सारी उलझनदार और जटिल रचना सामने मूर्त्त हो गई जो अन्याय की बुनियाद पर खड़ी थी और निर्मम लोभ द्वारा बनाई गई थी और न केवल मानवों के बल्कि मूल्यवान पशुओं के प्रति भी पूर्ण बर्बरता से पूरी की गई थी और फिर भी बहुत अच्छी हालत में थी और इतना ही नहीं : वह अक्षुण्ण ही नहीं थी पहले से विशाल और बड़ी हो गई थी, मैककैस्लिन उसे बीस वर्ष पहले की मुसीबत और गड़बड़ी में से, जब दस में से मुश्किल से एक आदमी बचा था, सुरक्षित ले आया। उस

समय उसने बचपन पार ही किया था और उसने इसे बढ़ाया और यह इसी तरह बढ़ती हुई अक्षुण्ण बनी रहेगी और तब तक सम्पन्न और उपयोगी रहेगी जब तक मैककैस्लिन और उसके मैककैस्लिन उत्तराधिकारी रहेंगे चाहे उस समय उनके अल्ल (सरनेम) एडमंड्स भी न हों : और वह बोला,

'हम भी। क्योंकि इसका यही अर्थ है : ज़मीन नहीं, हम। न केवल रक्त बल्कि नाम भी, न केवल इसका रंग बल्कि इसका सूचक शब्द : एडमंड्स, गोरा, पर स्त्री की ओर से, वह पिता के नाम के अलावा और कोई नाम नहीं रख सकता था; वीचम, जो बड़ा और नर पर काला वंश का था, जो नाम चाहता था और कोई आदमी इसकी परवाह भी न करता, पर वह अपने पिता का नाम नहीं अपना सकता था जिसका कोई नाम ही नहीं था'—और मैककैस्लिन बोला,

'और क्योंकि जो कुछ मैं अब कहूंगा, वह तुम जानते हो और यह बात मैं जानता हूं, इसलिए मुझे एक बार फिर यह कह लेने दो : और, एक और, और तीसरी पीढ़ी में भी, और नर, सबसे बड़ा, सीधा और एकमात्र और गोरा और अभी मैककैस्लिन, पिता से पुत्र से पुत्र'—और यह बोला,

'मैं स्वतंत्र हूं', और इस बार मैककैस्लिन ने संकेत भी नहीं किया, मिटते हुए पृष्ठों को हिलाया भी नहीं, स्टीरियोप्टिक समष्टि का साक्षात् भी नहीं कराया, पर उसे उन हड्डियों का, जिनके नाम जीवित अवस्था में भी बाबा कैरोदर्स के दादा ने भी कभी नहीं सुने थे, छोटा और दृढ़ सूत्र जो सत्य के समान मज़बूत और पाप के समान गूढ़ और स्वयं जीवन से भी अधिक लंबा और बहीखातों और पैतृक जायदाद दोनों से परे पहुंचकर उसे वासनाओं और कामनाओं, आशाओं, स्वप्नों और दुःखों से जोड़ता हुआ झनझनाता सुनाई दिया।' और वह बोला,

'और उसका भी ?' और मैककैस्लिन,

'मैं समझता हूं कि उस (ईश्वर) द्वारा सारे समय में उसे चुना गया था (मैं यह बात स्वीकार करता हूं) जैसे कि तुम कहते हो कि बक और बडी उनमें से चुने गए थे। और इसमें उसे केवल तुम्हारे लिए एक भालू और एक बूढ़ा आदमी और चार वर्ष लगे। और तुम्हें उस जगह पहुंचने में चौदह साल और बूढ़े भालू को भी इतने ही या शायद इससे भी अधिक और सैम फादर्स को सत्तर से अधिक वर्ष लगे। और तुम केवल एक हो। तो कब तक ? कब तक ?' और वह बोला,

'इसमें बहुत दिन हैं। मैंने कभी इसके विपरीत नहीं कहा। पर यह सब बिल्कुल ठीक हो जाएगा क्योंकि वे कायम करेंगे—' और मैककैस्लिन बोला,

'और जो हो, तुम आजाद हो जाओगे, नहीं, न, अब न कभी, हम उनसे नहीं और वे हमसे नहीं। इसलिए मैं भी अपना अधिकार त्यागता हूं। यदि मैं यह भी जानता होऊं कि यह सच है तो भी मैं इससे इंकार करूंगा। मुझे ऐसा करना पड़ेगा। तुम भी समझ सकते हो कि मेरे पास और कोई चारा नहीं। मैं जो हूं सो हूं, मैं सदा वही रहूंगा जो मैं पैदा हुआ था और सदा रहा हूं। और अपने आप से भी बढ़कर। उसी तरह अपने आप से भी बढ़कर जैसे उस योजना में जिसे तुम उस (ईश्वर) की पहली योजना कह रहे हो और जो फेल हो गई, बक और बडी से भी बढ़कर लोग थे—' और वह बोला,

'और मुझसे भी बढ़कर' और मैककैस्लिन बोला,

'नहीं। तुम भी नहीं। क्योंकि देखो। तुमने कहा था कि किस तरह जब इक्केमोटब ने यह समझ लिया कि वह दादाजी की जमीन बेच सकता है, उसी क्षण से वह उसकी न रही। ठीक है, आगे चलो : तब वह बूढ़े इक्केमोटब के पुत्र सैम फादर्स की हो गई। और सैम फादर्स से

वह तुम्हें नहीं तो किसे मिली ? शायद तुम्हारे साथ बून भी उत्तराधिकारी हो, यदि अपने जीवन का नहीं तो कम से कम अपने इसे त्यागने का ?' और वह बोला,

'हां। सैम फादर्स ने मुझे आज़ाद किया।'

और इसाक मैककैस्लिन, वह अभी चाचा आइक नहीं बना, अभी बहुत समय है जब वह आधी काउंटी का चाचा बनेगा पर पिता किसी-का नहीं होगा, जेफर्सन के किसी बोर्डिंग हाउस में एक छोटा-सा बिना अंगीठी का कमरा किराए लेकर रहेगा, जहां अदालत के दिनों में छोटे वकील-मुख्तार रहा करते हैं और घोड़े तथा खच्चर बेचने के लिए आने वाले ठहरते हैं, इसाक के पास अपने थैले में बढ़ईगीरी के औजार होंगे और वह बंदूक होगी जो मैककैस्लिन ने उसे दी थी और जिसपर चांदी के अक्षरों में उसका नाम खुदा हुआ था और बुड्ढे जनरल काम्पसन का कम्पास होगा (और जब जनरल मर जाएगा तब उसका चांदी चढ़ा शंख भी होगा) और लोहे की खाट, चटाई और कम्बल होंगे जो वह हर शरद् ऋतु में साठ वर्ष से भी अधिक समय तक जंगलों में ले जाया करेगा और चमकीली कलई की काफीदानी,

उसके चाचा ह्यूबर्ट बीचम से, जो उसका धर्म पिता था, उसे कुछ दास मिले थे—बीचम, वह मुंहफट विशालकाय बालकों जैसा आदमी था जिससे चाचा बडी ने १८५९ में ताश के खेल में टामी के टेरेल की बीवी टेनी जीती थी, उसने गलत-सलत भाषा में जो कुछ लिखा था उसमें मौत के डर से कांपते हुए हाथ से अंत में निराश कर्तव्य द्वारा जैसे-तैसे घसीटा गया कोई भी वाक्य नहीं था, वह एक वसीयत थी, एक विशेष वस्तु थी जिसका भार हाथ को अनुभव होता था, महाकार आंख को, और जो कान को सुनाई भी देती थी : एक चांदी का प्याला था जिसमें सोने के टुकड़े भरे हुए थे, यह मोटे कन्वास में लिपटा हुआ था और उसपर गर्म मोम

पर उसके धर्म पिता की अंगूठी की सील लगी हुई थी जो (अब तक ज्यों की त्यों) उसके चाचा ह्यूबर्ट की मृत्यु से भी पहले और उसके वालिग होने के समय से पहले जब कि वह उसका हो जाएगा, भी बहुत पहले न केवल एक प्रचलित किंवदंती बन गई थी बल्कि एक पारिवारिक इतिहास बन गई थी। उसके पिता और उसके चाचा ह्यूबर्ट की बहन के विवाह के बाद वे फिर बड़े मकान में आ गए थे, उसी बहुत बड़ी गुफा में जिसे बावा कैरोदर्स ने बनाना शुरू किया था पर वह पूरा नहीं कर सके थे, उन्होंने बचे हुए नीग्रो लोगों को इसमें से बाहर किया और उसकी माता के दहेज से इसे पूरा किया, कम से कम शेष खिड़कियां और दरवाज़े तो लगा ही लिए और इसमें आ गए, चाचा बडी को छोड़कर और सब आ गए; उसने उस कोठरी को, जो उसने और उसके जुड़वां ने बना दी थी, छोड़कर जाने से इंकार कर दिया; यह स्थान-परिवर्तन नई बहू की सूझ थी, बल्कि सूझ से भी कुछ बढ़ कर थी, और यह कभी नहीं जाना जा सकता कि क्या वह सचमुच ही उस बड़े मकान में रहना चाहती थी या कि क्या उसे पहले ही यह पता था कि चाचा बडी वहां से हटने से इंकार कर देगा और १८६७ में, इसाक के जन्म के दो सप्ताह बाद जब एक रात इसाक और उसकी माता पहली बार सीढ़ियों से उतरे और चांदी का प्याला भोजन करने की साफ मेज पर चमकीली लैम्प के नीचे रखा था, और जब उसकी माता और उसका पिता और मैककैस्लिन और टेनी (उसकी धाय जो उसे लिए हुए थी)।—चाचा बडी को छोड़कर शेष सब लोग—गौर से देख रहे थे, उसके चाचा ह्यूबर्ट ने चमकीले और चमचमाते हुए सिक्के एक-एक करके प्याले में डाले और इसे मोटे कन्वास में लपेटा, मोम गरम किया, सील-मुहर लगा दी और इसे अपने साथ वापस घर से आया, जहां अब वह अकेला रहता था—मैककैस्लिन के कहने के अनुसार उसे रोके रखने के लिए या चाचा बडी के कहने के अनुसार उसे ऊंचा उठाने की

कोशिश करने के लिए उसकी बहन भी नहीं थी (और मिसीसिपी में वे बड़े भयंकर दिन थे) चाचा बडी ने बताया कि अधिकतर नीग्रो चले गए थे और जो नहीं गए थे, उन्हें भी हब बचीम नहीं रखना चाहता : पर कुत्ते वहीं रहे और चाचा बडी कहता था उस समय बीचम बांसुरी बजा रहा था ।

वे जाएंगे और इसे वहां देखेंगे, अन्त में उसकी माता की बात रहेगी और वे सरे (चार पहियों वाली चार आदमियों के बैठने की गाड़ी) में रवाना होंगे, फिर एक वार चाचा बडी के और मैककैस्लिन के, जो चाचा बडी के साथ होगा, अलावा और सब साथ थे । अंत में एक बार सर्दियों में चाचा बडी असमर्थ होने लगा और अब उसे याद आने लगा था कि वह स्वयं, उसकी माता और टेनी और टामी का बेटा टेरेल ही जाते थे : २२ मील पर दूसरी काउंटी, जिसमें, दो खंभे थे जिनमें से एक पर, मैककैस्लिन को बताया कि एक ठिगना लड़का जो सुबह, दोपहर और शाम को भोजन के समय सिंगर बजाया करता था और जो कोई राही इसे सुनकर आ जाता उसके लिए गेट खोलने के लिए कूदकर नीचे आ जाता था, पर जहां अब कोई गेट नहीं था और उस दरवाज़े के आसपास घास-फूंस उग आया था, और उसकी माता ज़िद करके कहा करती थी कि लोग उस बेरोगन मकान को अब भी वारविक कहते हैं क्योंकि यदि सत्य और न्याय की विजय हो तो उसका भाई ही इसका असली हकदार मालिक है—उस बेरोगन मकान में बाहर से कोई परिवर्तन नहीं हुआ था पर अन्दर से वह हर बार पहले से बड़ा मालूम होता था क्योंकि वह बहुत छोटा होने के कारण यह नहीं समझ पाता था कि इसमें हर बार रोजवुड, महोगनी और अखरोट की लकड़ी का फर्नीचर कम और कम होता जाता था—उसके लिए यह फर्नीचर उसकी माता के आंसू भरे दुखी वचनों के अलावा और कहीं कभी भी नहीं था—और कोई-कोई चीज़ इतनी छोटी थी कि उसे लौटाते हुए

वे जैसे-तैसे अपनी बग्घी के ऊपर या पीछे बांध ले सकते थे। (और उसे इसकी याद थी, उसने यह देखा था एकाएक उसकी माता की आवाज़ 'मेरे कपड़े भी, मेरे कपड़े भी !' उस निर्जन हाल में ज़ोर से गूंज जाती थी, एक बंद होते हुए दरवाज़े में एक व्यक्ति का चेहरा जिसका रंग टामी के टेरेल के रंग से भी हल्का था, दिखाई पड़ा, रेशम के गाउन की एक झलमलाहट और झांकी और एक कर्णफूल की झलक और चमक ऐसी जो तेज, भड़कीली और अवैध थी, पर फिर भी न जाने क्यों एक बालक, बल्कि बिल्कुल शिशु, के लिए भी स्तब्धकर और उत्तेजक और स्फूर्तिकर थी : मानो दो स्वच्छ और निर्मल जल-धाराओं के संगम की तरह उसने बालक होते हुए भी उस झलक रूप में दीखे नामहीन, अवैध, दोगले रूपी शरीर के जरिए उस लड़के से गंभीर और परिपूर्ण आनुरूप्य और संपर्क कायम कर लिया हो जो उसके चाचा में अमर कैशोर की उस अवस्था में लगभग साठ वर्ष तक मौजूद रहा था, उसी तरह अकस्मात् वे कपड़े, वह चेहरा, वे कर्णफूल, गायब हो गये, और उसके चाचा की आवाज़ सुनाई दी : 'वह मेरी मिसरानी है। वह मेरी नई मिसरानी है। मुझे एक मिसरानी तो रखनी ही थी, क्यों ?' फिर चाचा स्वयं, वह चेहरा भयभीत और स्तब्ध था पर फिर भी उसपर लड़के की सरलता और अदम्यता थी; वे अब सामने की गलरी की ओर हट रहे थे, और उसका चाचा फिर, दुःखी और अब भी चकित मानो उसमें एक तरह का अपनी बात पर आग्रह करने का साहस तो नहीं, पर निराशाजनित आदेश विदा हो गया था : अब वे आजाद हैं, वे भी बिल्कुल हमारी ही तरह आदमी हैं !' और उसकी माता : इसीलिए तो ! इसीलिए तो मेरी माता का घर ! कलंकित ! कलंकित !' और उसका चाचा : 'छोड़ो, इसे सिब्बी, उसे अपना सामान बांधने का मौका तो दो,' और इसके बाद यह शोरोगुल और धमाचौकड़ी सब खतम हो गई, वह और टेनी रह गए

ग्रौर उसे टेनी का वह ग्रजीब चेहरा याद है जो उसे खाली कमरे में जो कभी उनकी बैठक था, बिना किवाड़ों की टूटी हुई खिड़की देखकर हो ग्राई थी ग्रौर वे देख रहे थे कि उसके चाचा के हरम की पराजित परि-चारिका लड़खड़ाते कदमों से गली में चली जा रही थी। उसकी कमर, नामहीन चेहरा जो उसने क्षणभर के लिए देखा था, किसी समय ठीक तरह सिली हुई पोशाक ग्रस्त-व्यस्त होकर नीचे तक फड़फड़ा रही थी, घिसा हुग्रा भारी दरी का थैला उसके घुटने से टकरा रहा था, वह सच-मुच पराजित होकर मैदान से भाग रही थी, उस निर्जन-सूनी गली में वह जवान दिखाई देने वाली बिल्कुल ग्रकेली, पर फिर भी भावों को उद्‌बुद्ध करने वाली ग्रौर उत्तेजित करने वाली ग्रौर ग्रब भी वही रेशमी कपड़ा पहने हुए थी जो उसने ग्रादर-योग्यता के उस गढ़ में ही हासिल किया था ग्रौर उसे भूलना ग्रसंभव था।)

प्याला, वह सील-मुहर किया हुग्रा बरलप, ताला-बंद ग्रलमारी में फट्टे पर रखा था, चाचा ह्यूबर्ट दरवाज़े का ताला खोलकर इसे उतार रहा था ग्रौर इसे एक से दूसरे हाथ में दे रहा था। उसकी माता, उसका पिता, मैककैस्लिन ग्रौर यहां तक कि टेनी भी यह ग्राग्रह कर रहे थे कि इसे प्रत्येक व्यक्ति बारी-बारी हाथ में ले, इसका भार जांचे ग्रौर फिर इसे हिलाकर इससे ग्रावाज़ करे, चाचा ह्यूबर्ट स्वयं ठंडे धूल भरे चूल्हे के सामने फैला खड़ा था जिसमें ईंटें भी भड़-भड़कर कालस ग्रौर धूल तथा चूने ग्रौर चिमनी की झाड़न में गिर रही थी, वह ग्रब भी गरज रही थी ग्रौर ग्रब भी निर्दोष थी ग्रौर ग्रब भी ग्रजेय थी। ग्रौर बहुत देर तक वह यह समझता रहा था कि उसके ग्रलावा ग्रौर किसीने यह नहीं देखा था कि उसके चाचा ने प्याला ग्रब केवल उस (इसाक) के हाथों में दिया, दरवाज़े का ताला खोला ग्रौर प्याले नीचे उतारकर फिर उसके हाथों में दिया, ग्रौर उसके पास तब तक खड़ा रहा जब तक उसने उसे

उसकी आज्ञा के अनुसार हिला नहीं दिया और यह बज नहीं गया और फिर उससे इसे ले लिया और अन्य किसीके इसे छूने का आग्रह करने से पहले ही इसे फिर अलमारी में रखकर ताला लगा दिया, और बाद में भी अब वह न केवल याद रखने के बल्कि तर्क-वितर्क करने के भी योग्य हो गया था या यह नहीं बता सकता था या यह कोई चीज थी भी क्योंकि पार्सल अब भी भारी और लड़खड़ाता था, और वह तब भी कुछ नहीं बता सकता था जब उसका चाचा बडी मर चुका था और उसके पिता ने अपनी ७५ साल की आयु में कहा था, 'जाओ, वह कम्बख्त प्याला लाओ। उस कम्बख्त हब बीचम को भी लाना हो तो लाओ।' क्योंकि यह अब भी खड़खड़ाता था यद्यपि उसके चाचा ने अब प्याला इसके हाथों में नहीं दिया बल्कि इसे स्वयं एक से दूसरे—उसकी माता, मैककैस्लिन, टेनी के हाथों में दिया और बारी-बारी हरेक ने सामने इसे दिलाते हुए कहा : 'इसकी आवाज सुन रहे हो,' उसके चहरे पर अब भी भोलापन था, वह झूठ नहीं था, बल्कि चकित था और बहुत चकित नहीं था और अब भी अजेय था।

और, अब उसका पिता और चाचा बडी दोनों कूच कर चुके थे, एक दिन बिना किसी कारणवश या बिना किसी चेतावनी के वह प्रायः सारा खाली मकान जिसमें उसका चाचा और टेनी का प्राचीन और झगड़ालू दादा, (जिसका यह दावा था कि उसने लफायेट को देखा था और मैककैस्लिन कहता था कि दस वर्ष बाद वह ईश्वर को याद कर रहा होगा।) एक ही कमरे में रहते, पकाते और सोते थे, शांतिपूर्वक अग्नि से प्रज्वलित हो गया, अकारण ही और शांतिपूर्वक एकाएक सबकी सब दीवारें और छत दहक उठीं : सूर्योदय के समय यह वहीं मौजूद था जहां उसके चाचा के पिता ने इसे ६० वर्ष पहले बनाया था, सूर्यास्त के समय चार काली और धुआं-रहित चिमनियां राख और अधजले तख्तों के बीच में खड़ी थीं

जो बहुत गरम भी नहीं प्रतीत होती थीं और वे अन्तिम झुटपुटे में से, बाईस मीलों में से अन्तिम में बुड्ढी सफेद घोड़ी पर जो उस अस्तबल की अन्तिम घोड़ी थी जिसकी मैककैस्लिन को याद थी, दो बुड्ढे आदमी एक साथ चढ़े हुए बहन के दरवाजे तक आए, एक ने हिरन की खाल पहन रखी थी और दूसरे के हाथ में एक कमीज में लिपटा हुआ बरलप का पारसल था, वह मोमी रंग का आकारहीन टुकड़ा प्रायः वैसे ही फट्टे पर रखा था और उसका चाचा अब अधखुले दरवाज़े को पकड़े हुए था, उसका हाथ न केवल हत्थी पर था और दूसरे हाथ में चाभी प्रतीक्षा कर रही थी, चेहरे पर जल्दी झलक रही थी, और अब भी वह परेशान नहीं था, बल्कि शांत था और बहुत चकित भी नहीं था, जैसे साहस का पुतला हो और अधखुले दरवाज़े में खड़ा हुआ स्वयं चुपचाप बरलप की शकल देख रहा था, वह अपनी असली ऊंचाई से प्रायः तीन गुना लंबा हो रहा था और दूसरी ओर मुड़ रहा था, और इस बार उसे अपनी माता का चेहरा या टेनी का गूढ़ भाव याद नहीं आया बल्कि मैककैस्लिन का काला और नुकीला चेहरा गम्भीर, घृणित और विचित्र :

फिर एक रात उन्होंने उसे जगाया और उसे अधसोई हालत में लैम्प के प्रकाश में लाए, और उस कमरे में दवा की गंध भी आ रही थी जो अब सुपरिचित हो गई थी और कोई दूसरी गन्ध आ रही थी जिसे वह कभी नहीं भूलेगा, वह तकिया, थका हुआ और परेशान चेहरा जिसमें से अब भी लड़का भोला-भाला और अमर और चकित और तत्पर दिखाई दे रहा था और उसकी ओर देख रहा था और उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहा था, अन्त में मैककैस्लिन हिला और बिस्तर के ऊपर झुका और रात की कमीज के ऊपर से चिकनी डोरी में बंधी हुई बड़ी लोहे की ताली निकाली, उसकी आंखें कह रही थीं हां, हां, हां, अब, और उसने डोरी काटी और अलमारी खोली और पार्सल निकालकर

उसे विस्तर पर लाया, आंखें अब भी उसे बताने की कोशिश कर रही थीं जब उसने पार्सल उठाया और इस प्रकार यह अब भी नहीं था उसके हाथ अब भी पार्सल पर चिपटे हुए थे जब वह उसे छोड़ रहा था, आंखें उसे कुछ बताने के लिए बड़ी आतुर थीं पर वे अभी न वता सकीं, और वह दस साल का था और उसकी माता भी मर गई थी और मैककैस्लिन ने कहा, 'अब तुम लगभग आधे रास्ते में हो। तुम इसे खोल भी सकते हो।' और वह बोला, 'नहीं। उसने इक्कीस कहा था।' और वह इक्कीस साल का हो गया और मैककैस्लिन चमकीला लैम्प उठाकर साफ की हुई मेज़ के बीचोंबीच लाया और उसने पार्सल इसके पास रख दिया और पार्सल के पास अपना चाकू खोलकर रख दिया और अपने चेहरे पर वही पुराना गम्भीर असहिष्णु और त्याग का भाव लिए हुए खड़ा हो गया और उसने इसे उठाया, वह बरलप का टुकड़ा जिसने १५ साल पहले रातोंरात अपनी शक्ल बदल ली थी, जो हिलाने पर एक अजीब खड़खड़ाहट करता था, चमकीला चाकू उलझी हुई डोरियों को काट रहा था, उसके चाचा की बीचम-सील-मुहर का मोम मेज़ पर पड़ा चमक रहा था, साफ कलई की काफीदानी अब भी बिल्कुल नई थी, मुट्ठी-भर तांबे के सिक्के थे, और अब उसे पता चला कि बंद होने पर वह बजता क्यों था। इसमें बहुत छोटे-छोटे कागज के टुकड़े थे जो एक चूहे के बिल के लिए ही अधिक थे, जो लकीरदार कागज के टुकड़े थे जैसे नीग्रो प्रयोग में लाते हैं, बहीखाते के फटे हुए पृष्ठ थे और अखबारों की किनारियां थीं और कुछ कागजों पर तारीखें और हस्ताक्षर थे, जिनकी तारीखें उस दिन से छः महीने बाद से शुरू होती थीं जब उन्होंने उसे चांदी का प्याला इसी कमरे में, इसी मेज़ पर, इसी लैम्प के प्रकाश में प्रायः इक्कीस वर्ष पहले टाट में पैक करते देखा था :

मुझपर अपने भतीजे इसाक बीचम मैककैस्लिन की पांच

अशरफी ऋण हैं। यह मेरा ऋणपत्र है। मैं इसपर ५ फीसदी ब्याज दूंगा

ह्यूबर्ट फिट्ज-ह्यूबर्ट बीचम

वारविक, ७ नवम्बर १८६७

और वह बोला, 'चाहे जो हो, उसने इसे तारीख ही कहा।' कम से कम एक बार तो कहा ही, चाहे दुबारा न कहा हो। पर इससे आगे कुछ और था :

इसाक २४ दिसम्बर १८६७ मुझपर तुम्हारी दो अशरफी ऋण है ह्यू० फि० बी० मुझपर इसाक की एक अशरफी ऋण है १ जनवरी १८६८ ह्यू० फि० बी०

फिर पांच फिर तीन फिर एक फिर एक फिर बहुत दिन बाद और एक स्वप्न किसी विश्वासघात का स्वप्न नहीं, क्योंकि वह केवल एक ऋण था। बल्कि एक साझेदारी थी :

मुझपर बीचम मैककैस्लिन का उसके उत्तराधिकारियों का पच्चीस (२५) अशरफी ऋण हैं और मेरे हाथ के पिछले सब ऋणपत्रों पर बीस (२०) फीसदी वार्षिक चक्रवृद्धि ब्याज लगेगा। आज १६ जनवरी १८७२ के दिन

बीचम

स्थान का उल्लेख नहीं, केवल समय का है और केवल एक शब्द का हस्ताक्षर जैसे कि स्वयं बूढ़े अभिमानी जमीदार ने टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में नेविल लिख दिया गया हो। और इस तरह तैंतालीस बन गए और उसे स्वयं कुछ याद भी नहीं था, पर यह संख्या पचास सुनने में आई थी, जिसका हिसाब इस तरह पूरा होता था : एक : फिर एक : फिर एक। फिर एक और फिर अन्तिम तीन और फिर अन्तिम चिट जिस पर तब की तारीख थी जब वह मकान में उनके साथ आकर रहने लगा था और वह किसी

पराजित बुड्ढे आदमी के हाथ से लिखी गई थी और वह भी बाहर सही लिखा हुआ था और अब भी अजेय था, अन्तिम चिट में कितनी सरलता थी, और यह लाचारी की सरलता नहीं थी बल्कि विस्मय की सरलता थी जैसे कोई बड़ी सरल बात हो :

एक चांदी कप । ह्यूबर्ट बीचम

और मैककैस्लिन बोला, 'तो तुम्हारे पास बहुत सारे तांबे के सिक्के हैं । पर अभी वे इतने पुराने नहीं हुए कि दुर्लभ चीज़ों के रूप में हों । इसलिए तुम्हें धन लेना पड़ेगा ।' उसने मैककैस्लिन की बात नहीं सुनी, मेज़ के पास चुपचाप खड़ा हुआ और शांति से काफीदानी की ओर देख रहा था और काफीदानी बाद में एक रात को जेफर्सन में एक छोटे-से कमरे में मेन्टल के ऊपर रखी थी, मैककैस्लिन ने लिपटे हुए बैंक नोट बिस्तर पर फेंके और अब भी खड़ा रहते हुए (बिस्तर के अलावा बैठने के लिए कोई जगह भी नहीं थी) उसने न अपना टोप उतारा और न ओवर-कोट । और वह बोला :

'तुम्हारे ऋण के तौर पर यह है ।' मैककैस्लिन बोला,

'नहीं । मेरे पास तुम्हें ऋण देने के लिए कुछ भी नहीं है । अगले महीने तुम्हें बैंक जाकर यह प्राप्त करना होगा क्योंकि मैं तुम्हें यह लाकर नहीं दूंगा—और अब उसे मैककैस्लिन की आवाज़ भी सुनाई नहीं दी, और वह शांति से मैककैस्लिन की ओर देख रहा था, जो उसका सगा रिश्तेदार था, उसके पिता के समान पर फिर भी अब रिश्तेदार नहीं था क्योंकि अंत में पिता और पुत्र भी सगे रिश्तेदार नहीं होते ।' और वह बोला,

'यह सत्रह मील है, घोड़े पर जाना होगा और सर्दी में । हम दोनों यहीं सो जाते :' और मैककैस्लिन बोला,

'मैं यहां अपने मकान में क्यों सोऊं ? जब तुम सामने वाले अपने

मकान में नहीं सोते ?' और चला गया और वह चमकीली-स्वच्छ-बेदाग कलई की काफीदानी की ओर देख रहा था और सोच रहा था, और उसके सोचने का यह पहला ही अवसर नहीं था कि किसी आदमी की (उदाहरण के लिए इसाक मैककैस्लिन की) आत्मा सैकड़ों भागों में से टेढ़ा उलझा हुआ पर भूल रहित रास्ता कैसे ढूंढ़ लेती है जिससे अन्त में वह बन जाता है जो उसे बनना है, और इससे केवल उन्हें ही (जिन्होंने मैककैस्लिन और मैककैस्लिन ने उसके पिता, चाचा बडी और उनकी बहन को जन्म दिया था और जिन्होंने बीचम को और बीचम ने उसके चाचा ह्यूबर्ट को और उसके चाचा ह्यूबर्ट की बहन को जन्म दिया था।) चकित नहीं किया जो यह समझते थे कि हमने उसे बनाया है बल्कि, इसाक मैककैस्लिन को भी चकित किया।

ऋण के तौर पर और इसे खर्च लिया हालांकि उसे ऐसा नहीं करना था—मेजर द स्पेन ने उसे जब तक वह चाहता तब तक के लिए अपने मकान में एक कमरा देने का प्रस्ताव किया था और मेजर ने उससे कोई प्रश्न नहीं पूछा था और न वह कभी पूछता, और बुड्ढे जनरल काम्पसन ने भी इससे भी आगे बढ़कर, उसे अपने कमरे में ले जाने का और अपने ही आधे विस्तर में उसे सुलाने का प्रस्ताव किया था और मेजर द स्पेन से भी बढ़कर उसने उसे इसका कारण साफ बता दिया था : 'तुम मेरे साथ सोओ और सर्दियां गुजरने से पहले मैं कारण जान लूंगा। तुम ही मुझे बता दोगे। क्योंकि मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम छोड़-छाड़कर चले जाओगे। ऐसा लगता तो है कि तुम सब कुछ छोड़ जाओगे पर मैंने जंगल में तुम्हें खूब देखा है और मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम सब कुछ छोड़ जाओगे हालांकि लगता ऐसा ही है।' इसे कर्ज के तौर पर खर्च करते हुए उसने एक महीने का खाने और रहने का किराया अदा किया और उसने औज़ार खरीदे, सिर्फ इस कारण नहीं कि उसके हाथों

में कुशलता थी बल्कि इस कारण कि उसने अपने हाथों का प्रयोग करने का निश्चय कर लिया था और यह घोड़ों से ही हो सकता था और किसी नज़रीन (ईसा के जन्मस्थान नजोई का निवासी ईसाई) की निष्क्रिय और आशा भरी नकल मात्र नहीं थी, जैसे नया जुआरी इसलिए छींट की कमीज़ खरीद लेता है कि क्योंकि कल जो पुराना जुआरी जीता उसने वैसी ही कमीज़ पहन रखी थी, पर (झूठे विनय के दर्प से नहीं और न अभिमान की मिथ्या विनीतता से, जो अपनी रोटी कमाने का इरादा किए हुए था, इसे केवल कमाना चाहता ही नहीं था बल्कि उसके लिए कमाना ज़रूरी था और निरी रोटी कमाने से कुछ अधिक प्रयोजन था) क्योंकि यदि नज़रीन को बढ़ईगिरी अपने जीवन और उन उद्देश्यों के लिए ठीक लगी थी जो ईश्वर ने बनाए थे और जिन्हें वह पूरे कराना चाहता था तो यह इसाक मैककैस्लिन के लिए भी बिल्कुल ठीक होगा, यद्यपि इसाक मैककैस्लिन ने उद्देश्य, ऊपर से देखने पर बड़े सरल लगने पर भी, उसके लिए अगम्य थे और सदा ऐसे ही रहेंगे और यदि उसका बस चलता तो वह यह जीवन, जिसकी आवश्यकता अजेय थी, कभी न चुनता क्योंकि वह नज़रीन तो नहीं था—और उसने वह चुका दिया। वह उन तीस डालरों को भूल गया था जो मैककैस्लिन हर महीने बैंक में उसके नाम करा देता था और जो उसने केवल पहली बार लाकर उसके बिस्तर पर फेंक दिए थे, अब उसका एक साझी था, या यों कहना अधिक ठीक होगा कि वह साझी था : एक झूठा, बेईमान, चालाक, पुराना शराबी जिसने '६२ और '६३ में चार्लस्टन में घेराबन्दी तोड़ने वाले जहाज़ बनाए थे और जो उसके बाद से एक जहाज़ में बढ़ई था और दो साल पहले जेफर्सन में न मालूम कहां से और क्यों प्रकट हुआ था, और उसके बाद जिसने अपना बहुत-सा समय जेल में शराब के नशे से दिमाग की बीमारी के इलाज में बिताया था, उन्होंने बैंक के प्रेसीडेंट के अस्तबल पर नई छत डाली थी और

(बुड्ढा भी जेल में पहुंच गया और उस काम को याद कर रहा था) वह इस काम का पैसा लेने बैंक गया और प्रेसीडेंट ने कहा, 'मैं तुम्हें पैसे देने के बजाय तुमसे उधार लेना चाहता हूं···'और इस बात को अब सात महीने हो गए थे और उसे अब पहली बार याद आया, दो सौ दस डालर और यह पहला ही कुछ बड़ा काम था और जब वह बैंक से चला तब हिसाब दो सौ बीस पर था और दो सौ चालीस की राशि थी और केवल बीस डालर और निकाले जा सकते थे, इसके बाद यह राशि दो सौ चालीस पर पहुंच गई, पर तब कुल योग तीन सौ तीस पर पहुंच चुका था और उसने कहा, 'अब मैं इसे दूसरी जगह बदलवाऊंगा' और प्रेसीडेंट ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैककैस्लिन ने मुझसे ऐसा करने के लिए नहीं कहा था। क्या तुम किन्हीं और हस्ताक्षरों से दूसरा हिसाब नहीं खोल सकते?' पर वह सब बिल्कुल ठीक था, सिक्के, चांदी के सिक्के और बिल इकट्ठे हो जाने पर एक पुराने रूमाल में लपेटा और काफीदानी को एक पुरानी कमीज़ में लपेटा जैसे लपेटकर देने को परदादा इसे अठारह वर्ष पहले वारविक से लाया था और लोहे के ट्रंक में, जो बाबा कैरोदर्स कैरोलिना से लाया था, सबसे नीचे रख दिया और उसकी मकान-मालकिन ने कहा, 'ताला तक नहीं! और तुम अपने दरवाज़े पर भी ताला नहीं लगाते। यहां तक कि कमरे से बाहर चले जाने पर भी नहीं।' और वह उसकी ओर उसी तरह शान्ति से देख रहा था जैसे उसने इसी कमरे में उस रात मैककैस्लिन की ओर देखा था, जो उसका कोई सगा रिश्तेदार नहीं था पर फिर भी उसी तरह रिश्तेदार से भी बढ़कर था जैसे वे लोग जो तनख्वाह लेकर आपका काम करते हैं, आपके सगे हो जाते हैं और जो लोग आपको चोट पहुंचाते हैं, भाई या पत्नी से बढ़कर होते हैं।

और अब उसके पत्नी थी, उसने बुड्ढे आदमी को जेल से निकाला

श्रौर किराये पर लिए हुए अपने कमरे में लाकर उसे अपनी प्रबल शक्ति से ढांढस बंधाया, चौबीस घंटे तक अपने जूते भी नहीं उतारे, उसे जगाया और उसके पास भोजन पहुंचाया और उन्होंने इस बार ज़मीन से ऊपर तक खलिहान बनाया और उसने उस लड़की से विवाह कर लिया : वह अकेली संतान थी, और छोटी लड़की थी पर फिर भी शुरू में जितनी छोटी लगती थी, उससे बहुत बड़ी थी, शायद अधिक दृढ़ भी थी, उसकी आंखें निकालीं और उत्तेजित हृदय की शक्ल का भावुक चेहरा था जो उस फार्म पर भी अधिकतर पहरा देती, जब वह बुड्ढे के बताए हुए नापों के हिसाब से लकड़ी काटता रहता था, देखती रहती थी : और वह कहती : 'बापू ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था। वह फार्म असल में तुम्हारा है, है न ?' और वह बोला,

'मैककैस्लिन का है।' और वह बोली,

'क्या आधा हिस्सा उसका करने वाला कोई वसीयतनामा था ?' और वह बोला,

'वसीयतनामे की ज़रूरत ही नहीं थी। उसकी दादी मेरे पिता की बहन थी। हम भाइयों जैसे ही थे !' और वह बोली,

'तुम वैसे ही हो जैसे दूसरी पीढ़ी के भाई और सदा ऐसे ही रहोगे। पर मैं नहीं समझती कि इसका कोई खास महत्व है'—और उन दोनों का विवाह हो गया और यह नया देश था, उसकी विरासत भी वही थी जो सबकी थी, पृथ्वी में से, पृथ्वी से परे पर फिर भी पृथ्वी की क्योंकि उसकी विरासत भी पृथ्वी का लंबा इतिहास थी, क्योंकि इसमें आने के लिए हरएक को दूसरों के साथ हिस्सेदार होना चाहिए और हिस्सेदार होने में वे एक बन जाते हैं : उतनी देर के लिए, एक : कम से कम उस थोड़े-से क्षणों के लिए, एक : अविभाज्य, कम से कम उतनी देर के लिए वह दोनों का हो जाता है, वे अब भी किराये के कमरे में रहते थे पर

थोड़ी ही देर के लिए और वह कमरा, जिसमें न दीवारें थीं, न छत थी, न फर्श था, उसके लिए गौरवमय था जिसमें से वह प्रतिदिन सवेरे निकल जाता था और रात को लौट आता था, उस (लड़की) के पिता के पास शहर में सामान पहले ही था और वह सामान दे देता था और वह तथा उसकी साथिन उसे बनाते, एक से उस (लड़की), का दहेज : तीन से उसका विवाहोपहार, उसे तब तक यह पता नहीं चलता था जब तक कि बंगला बन न जाए और वह इसमें आने को तैयार न हो जाए और उस (लड़के) को कभी यह पता नहीं लगा कि उस (लड़की) को किसने बताया, न उसके पिता ने बताया, न उसके साथी ने और न शराब के नशे ने, यद्यपि कुछ समय तक वह यही समझता रहा था, वह काम से घर लौटता और हाथ धोकर और जहां आराम करके खाना खाने बैठ जाता, किसी किराये के कमरे में नहीं घुसता क्योंकि इससे भी शान टपकती : और वह तब उसका चेहरा देखता और उसी समय वह कहती : 'बैठ जाओ :' वे दोनों बिस्तर के किनारे पर बैठे, अभी एक दूसरे को स्पर्श भी नहीं किया, उसका चेहरा सिकुड़ा हुआ और भीषण, उसकी आवाज़ में आवेश और उच्छ्वास से भरी हुई अनंत आशा से पूर्ण फुसफुसाहट : 'मैं तुमसे प्यार करती हूं। तुम्हें पता है कि मैं तुमसे प्यार करती हूं। हम यहां से कब जाएंगे ?' और वह बोला,

'मुझे नहीं—मुझे नहीं पता—तुमसे किसने कहा'—उत्तप्त प्रबल हथेली उसका मुंह बंद कर देती, उसके ओठ उसके दांतों में कुचल देती, अंगुलियों का भयंकर मोड़ उसके गाल में चिकोटी भर लेता और अंगुलियों इतनी ज़रा-सी ढीली होतीं कि वह जवाब दे सके :

'फार्म। हमारा फार्म। तुम्हारा फार्म' : और वह बोला,

'मैं'—और फिर हाथ, अंगुलियां और हथेली, उसका सारे का सारा उसे घेरता हुआ भार, यद्यपि वह हाथ के अलावा और किसी अंग

से उसे छू नहीं रही थी, आवाज़ हुई : 'नहीं ! नहीं !' और वह रुक गई और ऐसा लगा जैसे अंगुलियां स्वयं गाल में से आवाज़ के पीछे-पीछे आ रही हों, फिर प्रेम की और अविश्वसनीय आत्म समर्पण की फुसफुसाहट और उच्छ्वास, फिर हथेली इतनी ढीली हुई कि वह उत्तर दे सके :

'कब ?' और वह बोला,

'मैं'—इसके बाद वह चली गई, हाथ भी अलग हो गया, वह खड़ी हो गई, उसकी ओर पीठ करके और सिर झुकाकर, अब उसकी आवाज़ इतनी शांत थी कि ऐसा लगता था जैसे उसकी वैसी उसने कभी सुनी ही नहीं : 'खड़ी हो जाओ और पीठ घुमा लो और अपनी आंखें बन्द कर लो :' और उसकी बात समझ सकने से पहले ही उसने यह कथन दोहराया और अपनी आंखें मूंद स्वयं खड़ा हो गया और उसने सीढ़ियों से नीचे शाम के खाने के लिए घंटी बजती सुनी, और शांत वाणी फिर सुनाई दी : 'दरवाज़ा बन्द कर दो :' और उसने बन्द कर दिया और अपना माथा ठंडी लकड़ी से टिकाया, आंखें बन्द कर लीं और अपने दिल की धड़कन और घंटी की आवाज़ सुनने लगा, फिर घंटी बन्द हो गई, और सीढ़ियों से नीचे वह फिर बजने लगी, और वह समझ गया कि इस बार यह हमारे लिए है, और उसने बिस्तर पर से आई आवाज़ सुनी और वह मुड़ा, और उसने पहले कभी उसे नंगी नहीं देखा था, एक बार उसने उससे नंगी होने को कहा था, और क्यों : कि वह उसे नंगी देखना चाहता था क्योंकि वह उससे प्यार करता था और वह चाहता था कि वह नंगी होकर उसकी ओर देखती रहे क्योंकि वह उससे प्यार करता था, पर उसने फिर कभी इस बात की चर्चा नहीं की, और जब उसने रात को अपने कपड़े उतारने के लिए रात को पहनने का चोगा अपने ऊपर डाला और जब चोगा सवेरे उतारने के लिए अपनी पोशाक उसके ऊपर रखी तब उसने अपना मुंह घुमा लिया और वह तब तक उसे

बिस्तर में अपने पास नहीं आने देती थी जब तक कि लैंप न बुझ जाए और गर्मियों के मौसम में भी वह दोनों के ऊपर चादर डाल लेने के बाद ही उसे अपनी ओर मुड़ने देती थी : और मकान-मालकिन सीढ़ियों के ऊपर हाल में आई और उसने दरवाज़े पर थपकी दी और फिर उनके नाम लेकर आवाज़ दी पर वह हिली नहीं और बिस्तर पर चुपचाप बिना कुछ ओढ़े पड़ी रही, उसका मुंह तकिये की तरफ था, वह न कुछ सुन रही थी, न सोच रही थी, और वह सोच रहा था कि वह कम से कम मेरे बारे में तो नहीं सोच रही : इसके बाद मकान-मालकिन चली गई और वह बोली, 'अपने कपड़े उतार दो।' उस (लड़की) का सिर अब भी मुड़ा हुआ था, वह न कुछ देख रही थी, न कुछ सोच रही थी, न किसी बात की प्रतीक्षा कर रही थी, न उसके बारे में ही सोच रही थी, उसका हाथ मानो इच्छापूर्वक और अपनी अलग दृष्टि से देखता हुआ चल रहा था, और उसने बिस्तर के पास उसके रुकते समय ठीक क्षण भर उसका हाथ पकड़ लिया जिससे वह रुक न सका बल्कि उसके चलने की दिशा बदल गई, और अब वह नीचे की ओर हो गई, और हाथ उसे खींच रहा था और अन्त में वह हिली, हटी, एक ही पूरी गति जो जन्मजात थी और अभ्यास से सीखी हुई नहीं थी, और जो मनुष्य से भी पुरानी थी, और वह अब उसकी ओर देख रही थी और एक हाथ से नीचे को खींच रही थी और उसने न हाथ को देखा और न उसे हटते महसूस किया, अब लड़की की हथेली उसकी छाती पर थी और उसे उसी तरह अनायास पकड़े हुए थी, और अब वह उसकी ओर नहीं देख रही थी, उसे देखने की ज़रूरत नहीं थी, अक्षतशीला स्त्री पत्नी, पहले ही सब कामातुर आदमियों को देख चुकी थी और अब उसका सारा शरीर बदल गया था। उस (लड़के) ने इसे पहले एक बार के अलावा और कभी नहीं देखा था और अब यह वह भी नहीं था जो उसने देखा था बल्कि तभी से सारे स्त्री-

मांस का बना हुआ था जब मनुष्य अपनी इच्छा से इसपर लेटा और उसने इसे खोला, और इसमें से कहीं से, होंठों के बिना हिले ही, यह हल्की-सी पर अजेय फुसफुसाहट आई—"वचन दो।" और वह बोला,

'वचन ?'

'फार्म'। वह हिला। वह हिल गया था, हाथ एक बार फिर उसकी छाती से हटकर उसकी कलाई पर आ गया था और उसने कलाई को पकड़ लिया था, भुजाएं अब भी शिथिल थीं और केवल अंगुलियों का हल्का दबाव बढ़ रहा था और वह जितना खींचता, हाथ उतना ही जकड़ता जाता। 'नहीं' वह बोला। 'नहीं' और वह अब भी उसकी ओर नहीं देख रही थी, पर उसकी तरह नहीं,' पर अब भी हाथ से पकड़े हुए थी : 'नहीं' : 'मैं तुमसे कहता हूं। मैं वचन नहीं दूंगा। मैं दे नहीं सकता। कभी नहीं'—और अब भी हाथ वहीं था और वह बोला, अंतिम बार, उसने साफ-साफ बोलने की कोशिश की और वह जानता था कि यह अब भी हल्का-सा पकड़े हुए है और उसने सोचा, वह कैंप में लोगों की बातें सुन-सुनकर पहले ही मुझसे अधिक जानती है। वह जन्म से ही उन बातों को खूब जानती है जो लड़का चौदह-पंद्रह वर्ष की आयु में गलतियां करके और बड़ा डरता-डरता सीखता है : 'मैं वचन नहीं दे सकता। कभी नहीं। याद रखो' : और अब भी स्थिर और अजेय हाथ उसे पकड़े हुए था और उसने कहा, 'हां' और उसने सोचा, वह नष्ट हो गई। वह जन्म से ही नष्ट हो गई थी। हम सबके सब जन्म से नष्ट थे इसके बाद उसने सोचना और हां कहना ही बन्द कर दिया, यह ऐसा था जिसकी कि स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी, लोगों की आपसी बातचीत में सुनने की तो बात ही दूर है, और ज़रा ही देर में वह लौट आया और अतृप्त स्मरणातीत तट पर थका पड़ा था और फिर ऐसी गति से जो मनुष्य से भी अधिक पुरानी थी, वह घूमी और उसने अपने आप को छुड़ाया और

अपनी सुहाग रात में वह चिल्लाई थी और उसने सोचा कि वह अब पहली बार चिल्लाई है, वह अस्त-व्यस्त तकिए पर मुंह रखे हुए थी। और आवाज़ तकिए तथा खिलखिलाहट के बीच में से कहीं से आ रही थी : 'बस इतना ही। मेरी ओर से इतना ही है। यदि इससे तुम्हें वह पुत्र नहीं मिलता जिसकी तुम बात कर रहे हो तो वह मुझसे नहीं ही मिल सकेगा'—वह उसकी बगल में लेटा हुआ था और वह पीठ किरायेवाले खाली कमरे की ओर किए हुए थी और वह हंसता ही जा रहा था, हंसता ही जा रहा था।

५

लकड़ी के ठेकेदारों के आने और जंगल के काटे जाने से पूर्व, इसाक एक बार कैम्प और गया। मेजर द स्पेन फिर कभी खुद जंगल में नहीं गए। लेकिन उन्होंने जंगल स्थित अपने मकान को काम में लाने और शिकार खेलने की दूसरे लोगों को स्वतन्त्रता दी, और सैम फादर्स तथा शेरू के मरने के अगले वर्ष जनरल काम्पसन और वाल्टर इवेल ने स्वयं को, पुराने लोगों के एक क्लब के रूप में संगठित करने तथा जंगल को ठेके पर चढ़ा देने और साथ ही शिकार करने के हक को भी ठेके पर देने की योजना बनाई। निश्चय ही बच्चों की-सी यह सूझ बूढ़े जनरल काम्पसन की थी परन्तु, वास्तव में, उसका श्रेय बून हागेनबेक को था। यहां तक कि इसाक ने भी यह बात सुनकर धोखे को समझ लिया, यह समझ लिया कि चीते को न बदल पाकर चीते के दागों को बदलना ज्यादा आसान था। उन्हें एक निराधार आशा थी, और इन लोगों में मैककैस्लिन था, कि अगर एक बार वे लोग मेजर द स्पेन को जंगल में

वापस ले चलने को राजी कर सकें तो शायद मेजर जंगल कटवाने का अपना फैसला बदल देंगे, हालांकि इसाक जानता था कि वह ऐसा न करेंगे। और, दरअसल, मेजर ने अपना फैसला नहीं बदला। इसाक को यह नहीं मालूम कि मेजर द स्पेन के इन्कार करने पर क्या हुआ था। वह उस समय, जब इस बारे में बातें हो रही थीं, मौजूद न था। और मैककैस्लिन ने इस बारे में उसे कुछ नहीं बताया। लेकिन जब जून का महीना आया और जनरल काम्पसन तथा मेजर द स्पेन की सम्मिलित वर्षगांठ मनाने का अवसर आया तो किसीने इस मौके का ज़िक्र तक नहीं किया और फिर जब नवम्बर आया तो किसीने मेजर द स्पेन के जंगल स्थित मकान में जाकर ठहरने की इच्छा प्रकट न की और इसाक को यह भी न मालूम हुआ कि जंगल में शिकार खेलने जाने के उनके इरादे के बारे में मेजर द स्पेन को मालूम था या नहीं, लेकिन उसका ख्याल था कि निश्चय ही बूढ़े ऐश ने उन्हें बता दिया होगा। इसाक, मैककैस्लिन और जनरल काम्पसन (यह जनरल की आखिरी शिकार-यात्रा थी) और वाल्टर, बून, टेनी का बेटा जिम और बूढ़ा ऐश दो गाड़ियों में भर-कर दो दिन तक चलते रहे और दो हफ्तों तक जंगल में तम्बुओं में रहे। और अगले वसन्त में उन्होंने सुना (मेजर द स्पेन नहीं) कि मेजर ने लकड़ी काटने का अधिकार मैमफिस की एक कम्पनी को दे दिया है और तब जून के महीने में एक शनिवार के दिन इसाक अपने चचेरे भाई मैककैस्लिन के साथ शहर आया और मेजर द स्पेन के दफ्तर गया—वह एक बड़ा, खुला, किताबों की अलमारियों से सजा, ऊपर की मंजिल का कमरा था, जिसकी खिड़कियां एक ओर दुकानों के पिछवाड़े गन्दी गलियों की तरफ और दूसरी ओर सड़क पर एक बड़े दरवाजे की तरफ खुलती थीं और उस कमरे में एक लकड़ी की बाल्टी, चीनी का कटोरा, एक चम्मच, एक गिलास और एक व्हिस्की की बोतल रखी थी और कमरे

के बीच मेज़ के ऊपर बांस और कागज का बना पंखा झूल रहा था जिसे दरवाजे के पास एक तिरछी कुरसी पर बैठा ऐश एक रस्सी से खींच रहा था।

'बेशक,' मेजर द स्पेन ने कहा। 'शायद ऐश भी जंगल में फिर कुछ समय के लिए जाना चाहे ताकि उसे ड्रेज़ी के हाथ का बनाया हुआ खाना न खाना पड़े। बाहरहाल, क्या तुम अपने साथ किसी और को ले जा रहे हो!'

'जी नहीं,' उसने कहा। 'मेरा ख्याल था शायद बून—' पिछले छः महीनों से बून जंगल स्थित आरा मिल की बस्ती में टाउन-मार्शल था। मेजर द स्पेन ने आरा कम्पनी से मिलकर या शायद आरा कम्पनी के मालिकों ने खुद तय किया था कि बून जंगल कटाई की टोलियों के नेता की अपेक्षा टाउन-मार्शल के रूप में ज़्यादा अच्छा काम कर सकेगा।

'हां,' मेजर द स्पेन ने कहा। 'मैं आज उसे तार दे दूंगा। वहीं तुम्हें आरा मिल में मिल जाएगा। मैं ऐश को ट्रेन से भेज दूंगा। और वे लोग अपने साथ खाने-पीने का कुछ सामान ले जाएंगे, तुम्हें सिर्फ घोड़े पर सवार होकर चल देना होगा।'

'जी हां,' इसाक ने कहा। 'धन्यवाद!' और वह कहना चाहता था, 'अगर आप—' उसकी आवाज़ रुक गई, जैसे किसीने रोक दी हो, पर कैसे, यह उसे पता न चला, क्योंकि मेजर द स्पेन कुछ बोले न थे और उसकी आवाज़ बन्द हो जाने के बाद ही मेजर अपनी जगह से हिले और अपनी मेज़ पर रखे कागज़ों को देखने लगे...और इसाक देखता रहा उस नाटे, मोटे सफेद बालों वाले आदमी को, निहायत अच्छे और साफ-सुथरे कपड़ों में, जिसे कभी वह कीचड़ से लथपथ कार्डराय की पतलून और बड़े-बड़े बूटों में, दाढ़ी बगैर बनाए, घोड़ी पर बैठे देखने का आदी था। इसाक को याद आया वह दृश्य, जब मेजर द स्पेन घोड़ी

पर बैठे थे और उनके पास लौह निश्चलता के साथ खड़ा था नीला कुत्ता और जाने क्यों इसाक को महसूस हुआ कि वे दोनों एक-से थे और प्रेम या व्यापार करने की सामर्थ्य रखते थे, या जो कि प्रेम या व्यापार के सम्बन्ध में आपस में बहुत दिनों तक बंधे रह चुके थे।

'नहीं। मैं बहुत व्यस्त रहूंगा। तुम लोग जाओ। गुड लक। अगर हो सके तो मेरे लिए एक छोटी-सी गिलहरी लेते आना।'

'अच्छा, श्रीमान्' इसाक ने कहा, 'ले आऊंगा।'

वह अपनी तीन बरस की नई घोड़ी पर, जिसे उसने खुद ही पाला-पोसा था, चढ़कर चल दिया। वह अर्धरात्रि के समय चला था और छः घंटे बाद, आरा मिल पहुंच गया, जिसे वह हमेशा ही मेजर द स्पेन की सम्पत्ति समझता था यद्यपि मेजर ने कम्पनी को सिर्फ वह ज़मीन ही बेची थी जिसपर रेल का जंकशन और कचहरी व दुकान स्थित थी, और वह स्तब्ध होकर विस्मय के साथ-साथ उस दृश्य को देखने लगा, यद्यपि उसे पहले से ही मालूम था और वह समझता था कि वह उस परिवर्तन को देखने के लिए तैयार है। लकड़ी कटाई का एक नया कारखाना, जो दो या तीन एकड़ में फैला हुआ था, आधा बन चुका था और वहां मीलों लंबी रेल की पटरियां एक के ऊपर एक चिनी रखी थीं तथा रेल का दूसरा साज-सामान और कम से कम दो सौ खच्चरों को चारा देने के कठौते और आदमियों के रहने के लिए तंबू भी थे। तो इसाक अपनी घोड़ी को एक अस्तबल में रखने का प्रबंध कर शीघ्र ही लकड़ी के लट्ठों को ले जाने वाली गाड़ी के डिब्बे में अपनी बंदूक समेत जा बैठा और उसने केवल जंगल की उस दीवार को देखा जिसके पीछे वह एक बार फिर अपने आपको छिपा देने वाला था।

रेल का छोटा इंजिन एक चीख के साथ चल पड़ा और एक धक्के के साथ पीछे लगी गाड़ी भी हिलने लगी। इसाक ने रेल के सिरे को

एक अर्धचक्र में आगे बढ़ते और फिर सारी गाड़ी को जंगल में एक निर्दोष सर्प की भांति घुस जाते देखा। धीरे-धीरे प्राचीन वन के अन्दर प्रवेश करते-करते रेल की गति बढ़ने लगी थी। जंगल का वह भाग अभी कटा न था। वन के उस भाग से कभी किसी प्रकार की हानि न हुई थी। सिर्फ पांच साल पहले वाल्टर इवेल ने इसी चलती गाड़ी से एक हिरन के बच्चे को मारा था और एक किशोर रीछ की कहानी भी थी: पहली बार जंगल में तीस मील की दूरी तक रेलगाड़ी गई थी और वहां रेल की पटरियों पर एक रीछ अपना पिछला भाग उठाकर एक कुत्ते के बच्चे की तरह ज़मीन खोद-खोदकर देख रहा था कि उन पटरियों के नीचे किस तरह के कीड़े-मकोड़े हो सकते थे या शायद उन इकसार चौरस तख्तों को देख रहा था जो एक सीधी लाइन में बहुत दूर तक बिछे थे। ड्राइवर को गाड़ी रोकनी पड़ी, रीछ से ठीक पचास फुट की दूरी पर, और फिर उसने इंजिन की सीटी बजाई और वह रीछ सहसा उछलकर एक छोटे-से पेड़ पर, जो एक आदमी की टांग से ज़्यादा बड़ा न होगा, जा बैठा। उसने अपना सिर एक आदमी की तरह या शायद एक औरत की तरह अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और इंजिन के खलासी ने चलते-चलते उसपर गरम कोयले फेंके, और जब तीन घंटे बाद बाहर जाने वाले लकड़ी के लट्ठों से लदकर गाड़ी वापस आई तो उस समय तक वह भालू पेड़ से आधा उतरा ही था कि रेल की आवाज सुनते ही फिर ऊपर जा बैठा और शाम तक वहीं बैठा रहा। बून ने यह खबर आरा मिल में सुनी और वह और ऐश सारी रात पेड़ के नीचे बैठे रहे ताकि रीछ को कोई गोली न मार दे। अगले दिन मेजर द स्पेन ने रेलगाड़ी को आरा मिल पर ही रुकवा दिया और फिर अगले दिन सूर्यास्त से कुछ पहले न सिर्फ बून और ऐश बल्कि मेजर द स्पेन और जनरल काम्पसन और मैककैस्लिन के सामने वह रीछ छत्तीस

घंटे तक पेड़ पर प्यासा बैठे रहने के बाद नीचे उतर आया और मैककैस्लिन ने इसाक को बताया कि जहां वे लोग एक गड्ढे के पास खड़े थे, वहीं जाकर वह रीछ पानी पीने वाला था। उसने बड़े ध्यान से पानी को, फिर उन लोगों को और फिर पानी को देखा, और तब वह चला गया।

तब वह जंगल हानिप्रद न था। कभी-कभी कैम्प में बैठे, लकड़ी के लट्ठों को लाने-ले जाने वाली गाड़ी की आवाज़ सुनाई दे जाती थी। सिर्फ कभी-कभी क्योंकि उसे सुनने की कोई परवाह न करता था। उन्हें बीच-बीच में इंजिन की मन्द सीटी और रेल के पहियों की गड़गड़ाहट एक क्षण के लिए सुनाई देती और अपनी चिन्ता में खोए हुए उस विशाल वन में गूंज तक पैदा किए बिना ही लुप्त हो जाती। वे लोग रेलगाड़ी की आवाज़ तब भी सुन पाते थे, जब वह लकड़ी के लट्ठों से लदकर, बच्चों के खिलौनों की तरह रफ्तार पकड़ने की कोशिश में आगे बढ़ती थी और भाप बचाए रखने के लिए सीटी न बजाती हुई प्राचीन वन में अपना धुंआ छोड़ती, व्यर्थ का शोर मचाती, नाहक ही उन कटे पेड़ों को उठाकर ले जाती थी जिनके चले जाने से कोई दाग, धब्बा या ठूंठ न दिखाई देता था। वह रेल एक बच्चे की तरह मानो अथक परिश्रम कर, एक जगह से दूसरी जगह रेत को मुट्ठी भर-भरकर उठा-धर रही थी, परन्तु उसकी रफ्तार ईश्वरीय हाथ की रफ्तार के बराबर तेज़ न थी, जो उसके साथ खेल रहा था, जो खिलौने का भार एक बार हल्का हो जाने पर फिर उसपर भार लाद रहा था। लेकिन अब सब बदल चुका था। रेलगाड़ी वही थी, उसका इंजिन और यहां तक कि ड्राइवर, ब्रेकमैन और कंडक्टर वही थे जिनको बून ने दो साल पहले चौदह घंटे के दौरान कई बार शराब के नशे में या पूरी तरह होश में बताया करता था कि वे अगले दिन बूढ़े भालू से किस तरह मुठभेड़ करने वाले हैं।

और फिर गाड़ी धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ती हुई, गूंज रहित निर्जनता में कर्कश स्वर मचाती हुई लुप्त हो गई। अब ऐसा मालूम पड़ने लगा मानो वहां कभी रेल आई ही न हो। रेल की आहट जरा भी सुनाई न दे रही थी और रह गया था वह केवल जंगल सिर ऊंचा उठाए, चिंतन में खोए हुए, किसीकी ओर ध्यान न देने वाला, सहस्रमुखी, अनन्त कालीन, हरा-भरा और किसी भी कारखाने से ज़्यादा पुराना। 'मिस्टर बून आ गए क्या ?' उसने कहा।

'उसने मुझे मात दे दी', ऐश ने कहा। 'कल ही आरा मिल में गाड़ी लदवाकर उसने तैयार कर ली थी और कल रात को ही वह कैम्प की सीढ़ियों पर दिखाई दिया। वह आज सुबह से ही जंगल में गया है। कह गया है कि गोंद के उस पुराने पेड़ की ओर गया है और उससे मिलने उसी दिशा में तुम्हें जाना चाहिए।' इसाक गोंद के उस पेड़ को जानता था जो जंगल के बाहर एक पुराने खुले रास्ते पर था और अगर उस मौसम में आप चुपके से उस पेड़ की ओर जाते और फिर दौड़कर एक साथ खुले मैदान में आ जाते तो आपको एक साथ एक दर्जन से ज्यादा गिलहरियां जाल में फंसी हुई मिलतीं क्योंकि पास में ऐसा कोई पेड़ न था जिसपर उछलकर वे चढ़ सकतीं। तो इसाक घोड़ागाड़ी में बिल्कुल न बैठा।

'मैं बून से मिल लूंगा', उसने कहा।

'मेरा ख्याल था कि तुम ज़रूर मिलोगे' ऐश बोला, 'मैं तुम्हारे लिए कारतूसों का एक बक्स लाया हूं।' उसने कारतूसों का बक्स पकड़ाकर गाड़ी के ब्रेक से घोड़े की लगाम बांधनी चाही।

'तुम्हें याद नहीं कि मेजर ने कितनी बार तुम्हें इस तरह लगाम बांधने से मना किया है ?' इसाक ने कहा, 'क्या करने को ?' ऐश ने कहा और फिर वह बोला : 'और बून हागेनबेक से कह देना कि एक

घंटे में खाना मेज़ पर होगा और अगर उसे खाना हो तो वह वक्त पर आ जाएगा।'

'एक घंटे में ?' उसने पूछा। 'अभी तो नौ भी नहीं बजे।' उसने अपनी घड़ी निकालकर ऐश के मुंह के सामने कर दी और कहा 'देखो।' ऐश ने घड़ी की ओर आंख उठाकर देखा तक नहीं।

'इस घड़ी में शहरी वक्त है। अब तुम शहर में नहीं, जंगल में हो।'

'तो फिर सूरज की ओर देखो।'

'मैं सूरज को भी नहीं मानता,' ऐश ने कहा। 'अगर तुम और बून खाना चाहते हो तो बताए हुए समय पर आ जाना। मुझे रसोई में ही नहीं बैठे रहना है, लकड़ियां भी काटनी हैं।'

और फिर इसाक जंगल में चला आया, एकान्त में नहीं बल्कि निर्जनता में, जो ग्रीष्म की हरियाली लिए उसके चारों ओर से घेरे हुए थी। जंगल बदला न था, वह अनन्त था, वह केवल ऋतु-परिवर्तन के चक्र को जानता था और सोचने लगा : उस दिन की बात जब सुबह को उसने बारहसिंगे के बच्चे को मारा था और सैम ने उसके चहरे पर गर्म खून का टीका लगा दिया था, और फिर वे कैम्प लौट आए थे और उसे याद आया कि बूढ़ा ऐश आंख मिचकाकर अविश्वास प्रकट करता रहा था, जब तक मैककैस्लिन ने न कहा कि बारहसिंगा दरअसल इसाक ने ही मारा है। और उस रात ऐश चूल्हे के पीछे, सबकी निगाहों से दूर बैठा बड़बड़ाता रहा था और इसलिए टेनी के बेटे जिम को खाना परोसना पड़ा था और फिर दूसरे दिन सुबह मेज़ पर खाना लगा उसने सबको जगाया था और आखिर मेजर द स्पेन द्वारा गुस्से में दी गई गालियों और ऐश की बड़बड़ाहट से यह ज़ाहिर हुआ था कि न सिर्फ ऐश की इच्छा बल्कि उसका पक्का इरादा जंगल में जाकर एक हिरन को

मारने का था और यह सुनकर मेजर द स्पेन ने कहा था, 'अगर हम ऐश को शिकार खेलने नहीं जाने देते तो शायद हमें ही अपना खाना खुद पकाना होगा ?' और वाल्टर इवेल ने कहा, 'या ऐश ने जो कुछ पकाया होगा उसे आधी रात को उठकर खाना होगा।' चूंकि इस बार इसाक बारहसिंगा के बच्चे को मार चुका था, उसे बन्दूक चलाने की तब तक ज़रूरत न थी जब तक खाने के लिए गोश्त न लाना हो और इसलिए उसने अपनी बन्दूक ऐश को देनी चाही लेकिन मेजर द स्पेन ने उस दिन के लिए वह बन्दूक बून को दिलवा दी और बून की वक्त पर न चलने वाली और बेमौके चल पड़ने वाली बन्दूक ऐश को दिलवाई थी, और साथ में दो कारतूस भी, लेकिन ऐश ने कहा, 'कारतूस मेरे पास हैं' और उसने चार कारतूस दिखाए। एक हिरन मारने, एक खरगोश मारने और दो परिन्दों को मारने वाले कारतूस थे जिनके बारे में सविस्तार बतलाते हुए ऐश की मुख-मुद्रा, न केवल ऐश की ही बल्कि उसकी बात सुनते हुए मेजर द स्पेन, वाल्टर और जनरल काम्पसन के चहरे भी इसाक को याद थे और उस सुबह वह, ऐश, मेजर द स्पेन और टेनी के बेटे जिम के घोड़ों के पास कुत्तों के बीच पैदल चल रहे थे और फिर उन्होंने शिकार को फांसकर मारा जिसकी मीठी लम्बी चीख हवा में उठकर तुरन्त ही गुम हो गई, मानो बर्फ ने अपने भार से सब कुछ दबा दिया हो। मेजर द स्पेन और टेनी का बेटा जिम शोर मचाते हुए जंगल में जा चुके थे और तभी उसने जान लिया, मानो ऐश ने खुद ही कहा हो कि वह हिरन का शिकार कर चुका था और फिर वे हिमपात होते रहने पर भी घर की ओर वापस चल पड़े और तब ऐश ने पूछा, 'अब क्या करें ?' और इसाक ने कहा, 'इस रास्ते आओ'—वह खुद आगे था, हालांकि वे कैम्प से सिर्फ एक मील की दूरी पर थे क्योंकि वह जानता था कि ऐश, जो पिछले बीस वर्षों से हर साल दो हफ्ते कैम्प में

बिताता था, जंगल से बिल्कुल अपरिचित था और उस समय ब्रून की बन्दूक को लेकर चलते हुए अकुलाहट अनुभव कर रहा था और इसलिए इसाक ने उसे अपने से आगे चलने को कहा और ऐश एक बूढ़े आदमी की तरह, पहले जंगल के बारे में, फिर कैम्प के खाने-पीने और अपनी बीवी के हाथ के बनाए हुए खाने और फिर अपनी पुरानी बीवी और फिर तुरन्त ही मेजर द स्पेन के मकान के पास काम करने वाली उजले रंग की नर्स के बारे में बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था, सहसा एक बड़े पेड़ के लट्ठे के पीछे से एक रीछ का बच्चा निकल आया। तब कुछ समय व्यतीत हो चुकने पर ऐश की बन्दूक से गोली चली और वह बोला, 'अब तो कोई गोली नहीं बची' लेकिन फिर भी गोली चल पड़ी। और फिर खरगोशों को मारने वाली गोली चली और उसने सोचा कि अगली गोली चिड़ियों को मारने वाली होगी और वह चिल्ला उठा, 'मत चलाओ, मत चलाओ' लेकिन वह गोली भी फिस करके चल उठी और रीछ मुड़कर चारों पैरों के बल खड़ा हो गया और फिर जंगल में चला गया। सिर्फ वह लकड़ी का लट्ठा और आसमान से गिरने वाली मखमली बरफ ही सामने रह गई और ऐश ने पूछा, 'अब क्या करें?' और इसाक ने उत्तर दिया, "चले आओ इस रास्ते से।' ऐश ने कहा, 'मुझे अपने कारतूस ढूंढने हैं' और इसाक बोला, 'भाड़ में जाए कारतूस। आओ चलो मेरे साथ।' लेकिन ऐश न माना और लकड़ी के लट्ठे के सहारे बंदूक रख पीछे लौटा और बांस के पेड़ों की जड़ों में खाली कारतूसों को ढूंढने लगा और उन्हें लेकर वापस आया और उसी समय छः फुट की दूरी पर लट्ठे के सहारे रखी हुई बंदूक एक साथ चल पड़ी, और इसाक ने उस आखिरी कारतूस को भी ऐश को दे दिया और उसकी बंदूक खुद लेकर चला आया।

....गर्मी, और पतझड़, और बरफ, भीगी वसन्त ऋतु अपने अनन्त

नियमित क्रम में, उस माता के अमर, चिरस्मरणीय क्रम में, जिसने इसाक को उसका वर्तमान पुरुष रूप दिया था और जो एक नीग्रो दासी औरत और आदिवासी सरदार से पैदा हुए उस बूढ़े आदमी के लिए मां और बाप दोनों रूपों में थे जो इसाक का आध्यात्मिक पिता था, जिसका इसाक ने आदर किया था, जिसकी बात मानता था, जिसे प्रेम करता था और अन्त में जिसे खोकर दुःख अनुभव कर चुका था। और एक दिन इसाक भी विवाह करेगा और फिर वे एक अल्प समय के लिए उस व्यर्थ के गौरव के अधिकारी होंगे जो स्वभावतः स्थायी नहीं हो सकता, इसलिए गर्व किया ही क्यों जाए ? और शायद इस स्मृति को संजोए रखे क्योंकि स्मृति में कम से कम अधिक स्थायित्व तो है। तो भी जंगल उसकी प्रेमिका और पत्नी होगा।

वह बून द्वारा बताए हुए गोंद के पेड़ की ओर नहीं जा रहा था। दरअसल वह उस पेड़ से अधिक दूर हटता जा रहा था। एक ज़माना था जिसे गुज़रे हुए बहुत ज़्यादा वक्त नहीं हुआ था, जबकि उसे जंगल में उस जगह तक अकेले आने की इजाज़त न थी, और कुछ समय बाद जब वह यह जानने लग गया था कि वह क्या कुछ नहीं जानता, वह एक कम्पास की मदद से रास्ता खोजने की कोशिश कर सकता था—इसलिए नहीं कि उसे अपने आप में कोई अधिक विश्वास पैदा हो गया था बल्कि इसलिए कि मैककैस्लिन, मेजर द स्पेन, वाल्टर और जनरल काम्पसन ने भी उसे यही सिखाया था कि कम्पास की सुई कुछ भी बताए उसपर विश्वास करना ही चाहिए। अब उसके पास कम्पास तक न था, केवल सूर्य था और वह भी एक प्रकार से उसके अचेतन में ही, परन्तु फिर भी वह एक नक्शा लेकर अपनी स्थिति आसानी से बता सकता था। और आगे बढ़ने पर उसकी आशा के अनुकूल ही कुछ ऊंचाई दिखाई देने लगी। और वह पेड़ काटने वाले कारखाने की उस ज़मीन के पास से गुज़रा

जिसे मेजर द स्पेन ने बेचने से रोक रखा था और जिसके चारों ओर हदबन्दी करने के लिए चार खम्भे गाड़ दिए गए थे, जो शीतकालीन वातावरण में उस जगह निष्प्राण और अत्यधिक विजातीय लग रहे थे, जहां प्रकृति निरन्तर गर्भ-धारण और जन्म की प्रक्रिया में से गुज़रती रहती थी और जहां मृत्यु का कोई अस्तित्व नहीं था। दो सर्दियों में गिरे हुए पेड़ के पत्तों और दो वसन्त ऋतुओं की बाढ़ ने दोनों कब्रों को ओझल कर दिया था। लेकिन अगर कोई उन कब्रों को देखने इतनी दूर आ सकता था तो वह उन्हें सैम फादर्स के बताए हुए तरीके से ढूंढ़ भी सकता था, और दरअसल, इसाक ने अपने शिकारी चाकू की मदद से वह कब्र पा ली थी, जिसके ऊपर एक गोल डिब्बी में बूढ़े भालू का टूटा पंजा था और वह डिब्बी शेरू की हड्डियों के ऊपर रखी थी।

इसाक ने उस कब्र को छेड़ा नहीं। उसने दूसरी कब्र को, जहां मैककैस्लिन, मेजर द स्पेन और बून ने मिलकर सैम के शव को उसके शिकारी चाकू तथा तम्बाकू पीने के पाइप के साथ दफनाया था, ढूंढ़ना ज़रूरी न समझा। शायद वह उस कब्र पर पैर रखकर आगे बढ़ गया। लेकिन यह उचित ही था। उसने सोचा कि शायद सैम ने जान लिया हो कि इसाक जंगल में आया था और वह इस तरह सोचते हुए उस पेड़ के पास चला आया जो सैम की कब्र के कोने में था और जिसमें एक कील ठोकी गई थी जो अब पुरानी जंग खाई हुई, विजातीय परन्तु फिर भी वन की सामान्यता में खो चुकी थी। और वह कब्र भी अब शायद खाली थी, अब उसमें खाने-पीने की वे चीज़ें और वह तम्बाकू न थी जो इसाक ने उस रोज़ रखी थीं। इसाक आगे बढ़ता जा रहा था, वह रुका न था, सिर्फ उस टीले से उतरते समय सांस लेने के लिए ठहरा था, जहां कभी कोई मृत्यु न हुई थी, जहां शेरू और सैम न थे। वे धरती में बन्द न थे बल्कि स्वतन्त्र थे, धरती पर ही नहीं बल्कि धरती से भी स्वतन्त्र

पेड़, पत्ते, हवा, धूप, बारिश और रात सबसे स्वतन्त्र थे। हां, बूढ़ा भालू भी स्वतन्त्र था, उसे अपना पंजा भी निश्चय ही वापस मिल जाना था : और फिर वही ललकार और पीछा करना और लड़ना, लेकिन इस बार किसीका दिल न टूटना था, किसीका मांस न खसोटा जाना था—इसाक जड़वत् खड़ा था और जैसे ही उसने एक पैर आगे बढ़ाया कि उसे वह आवाज़ सुनाई दी और वह उसी तरह निश्चल खड़ा रहा, सांस रोके हुए और उसने फिर एक बार धक्का-सा महसूस किया—वह भय अवश्य था, पर घबराहट नहीं।

अब उसे एक और आवाज़ सुनाई देने लगी। वह कह नहीं सकता था कि वह आवाज सर्वप्रथम उसके कानों में कब पड़ी क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसे कुछ देर पहले से सुन रहा था। ऐसा प्रतीत होता था, मानो कोई बन्दूक की नली रेल की पटरी के किसी टुकड़े पर मार रहा हो। वह आवाज़ काफी ज़ोर से परन्तु जल्दी-जल्दी नहीं सुनाई दे रही थी, फिर भी उस प्रहार में एक प्रकार की भीषणता थी, मानो प्रहार करने वाला व्यक्ति न केवल मज़बूत और लगन का पक्का ही था बल्कि कुछ उन्मादी भी था।

फिर भी वह आवाज़ रेलवे लाइन पर नहीं थी, क्योंकि यद्यपि लाइन उस दिशा में थी, पर वह वहां से कम से कम दो मील दूर थी और यह आवाज़ तीन सौ गज़ से ज़्यादा दूर न होगी। इस तरह सोचते हुए भी इसाक ने जान लिया था कि वह आवाज़ कहां से आ रही होगी। चाहे जो भी आदमी हो और चाहे जो कुछ भी वह कर रहा हो, उसे जंगल के बीच उसी खुले स्थान पर होना चाहिए जहां मौजूद गोंद के पेड़ के निकट इसाक को बून से मिलना था। अभी तक इसाक धरती और पेड़ों को देखता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। अब वह तेज़ी से चलने लगा और उसने अपनी बन्दूक का मुंह आसमान की ओर कर लिया ताकि उसे

झाड़ियों के बीच से निकल सकने में आसानी रहे। जैसे ही वह निकटतर आता गया वह आवाज़ तेज़ होती गई और साफ तौर पर मालूम होने लगा कि कोई व्यक्ति क्रोध और आवेश में लोहे को लोहे से टकरा रहा है। जैसे ही इसाक ने गोंद के पेड़ की ओर देखा उसे चालीस या पचास उछलती, कूदती, एक शाखा से दूसरी शाखा पर जाती हुई गिलहरियां दिखाई दीं। फिर उसे बून दिखाई दिया जो पेड़ के तने के सहारे बैठा था और उसका सिर अपनी गोद में रखी किसी चीज़ को पीटने के लिए झुका हुआ था। वह अपनी बन्दूक की नली से, जिस बन्दूक के सारे अंजर-पंजर ढीले पड़े थे, उसके एक दूसरे भाग को तोड़ने की कोशिश कर रहा था : बन्दूक के बाकी हिस्से उसके पास ही थे, और एक पागल की तरह लोहे को लोहे से लगातार ज़ोर से टकराते हुए उसका चेहरा लाल हो उठा था। उसने सिर उठाकर यह तक न देखा कि उसके पास कौन खड़ा है। हथौड़े-सी चोट मारते हुए उसने अपने कर्कश स्वर में चिल्लाकर कहा :

'भागो यहां से ! छुओ मत उन्हें ! उनमें से किसीको भी मत छुओ ! वे मेरे हैं !'

◇ ◇ ◇